

### জ্ঞীজ্ঞ হেগা। শরণং।

# পতীত্চিত্রভানুকাবা।

---

रैनहाजी निवासि

গুণযুক্ত শ্রীযুক্ত উমাচরণ চটোপাপারে

কবি মহাশ্য কর্ত্ত

প্ৰিৰ প্ৰবন্ধে নানাবিৰ ছন্দে বিৱচিত 1

इमानी

শ্রীযুত বিশ্বন্তর লাহার

व्यादमगानुगातः ।

### কলিকাতা।

চিতপুর রেড্৯১।> নম্র কবিতারত্রাকর

যন্ত্ৰে মুদ্ৰিত প্ৰকাশ্য হ**ই**ল। শব্ধ<sup>5</sup>৭৮২ মাহ ২৩ কাৰ্ডিক।

### বিজ্ঞাপন।

নৈত টা নিবাণী গুণযুক্ত শীযুক্ত উনাচরণ চটোপাধাণ কৰি মহাশহের রচিত এই সতীয়চিত্রভাসু কৰে। পুত্ত কের স্বাহ তিনি আমাকে দিয়াছেন ইহাৰ স্বহাধিকারী আগ্রিভইলাম অভএব, কোন ব্যক্তি ইহা প্রনমুদ্রিত করিলে সমুচিত মূলা দাবি অ'ইন মাফিক ঠাছাকে দিতে ইইবেক'

স্ম ১২৬৭ অত্ত কার্ডিক

আবিষয়ৰ লাহ।।

# विकाभन र

गामि तिस्त्र शतिकाम ७ यज्ञ भूर्यक धरे चित्र कावा प्रेक्का कतिलाम । इंशांत्र अधिकारणहे मछिक विदः क्रिक्र म ज्ञानेश ७ जनामा माना अध्यक्ति । वहे भूसक ু বুৰিবেচক পাঠকৰৰ্গ মনোটোগ পূৰ্বক পাঠ করিলে हुन्तत तरम नित्याहिक स्ट्रेंटि शातित्वमं, वित्यवकः वन्तीत দ্রীলোক ইহার বিবরণ বিশেষ ক্রপে জানিলে সভী ত্বের ্উদাহরণ স্বরূপে ধর্মজ্ঞান শিক্ষাকরিয়া তদনুসরণে সমর্থা हेरेरव। এক্ষণে সহাদর পাঠকগণ সন্নিধানে স্তৃতি সম্বোধনে जागात निर्वणन **এই, य उँ। हात्रा जनूकल्ला अकाल शृह**ः नत्र এই श्रांख्त्र भारमाभास अरु अरु वात भार्र करतन, ভাষা হইলেই আমার পরিশ্রম সার্থক বিবেচনা হয়। **এই পুंखक सानित त्रामा नमाश्च हरेवा माइन्हें** মুড়াক্ষিনারম্ভ হইয়াছে, সুতরাং সময়াভাবে কোন প্রি-ভের ছারা সংশোধন করানো হয় নাই, সভএব ইহাজে রচনার কিয়া ভাবের দোষ থাকিবার সম্ভাবনার ভাবনা , ব্যক্ত করিতে হয় কেন না আমার কম্প বুদ্ধি কর্মাৎ অভের পুত্তক রচনা বিষয়ে দোষ বিরহ এমত কোন মতে रुरेष्ठ शाद्र मा, किन्छ एएमायानात्र विषया नार्न अरे, যে সরল স্বভাব সাধুলোক শৃপের ম্যায় স্বভাব এণে এণ अर्ग भूर्कक त्माय भत्रिकाशं कद्गिष्ठ क्रिके कद्गिर्दन न।। কিন্ত আশতা ও হইভেছে পাছে অসাধুরা চালনের নাায় খভাৰ ৰখভঃ শার্ভাগ ভ্যাগ পুর্বক অসারাংশ প্রহণ্ करहरू, का, कि कहा बाजा।

अधिमाठत्रम मर्मा ।

# গ্রন্থকারের পরিচয়।

----

स्तभूनी भूक्षशादत चित्र खन्न आम । ब्रुलाटकाफ मिकटडे बख्याफा बाम।। ভথার বৃদ্ধতি নাম জ্রীরাধামোহন । চাটুতি উপাধি যাঁর বিখ্যাত ভুবন 🛚। বেদজ তন্ত্ৰজ ইন্ট নিষ্ঠ অভিশয়। हित्सन स्नील सूपखित समापत ॥ f জীতে ক্রির ধীর দাতা সভ্যপরায়ণ 1 जान्हरी वालात यात लीला नवत्र।। নিষয় করিয়া দেহ জাত্রবীর নীরে। (याशायलश्राम व्याम जारकम व्यक्ति ॥ উ।হার ভনয় এয় ৰড় পুণ্যধর !! आमा अभिनाथ चिनि श्रापत मार्गत ।। धिकीय अभिनकमन (कामन स्पत्र) তৃতীয় জীরামরত্ব রত্ম সম হয়। काङ्गवीत श्रृक्ष छटि देवश्री भारताम ॥ कार्ड कानू श्रम आम जिमीन ममान । निव कर्म यथा विवादमन कश्वान ॥ रेनज्ञात्रीक श्वस्थित विनिद्या (येथाटन मक्क रुविक इस मार्जित वाम न 11

# গ্রন্থ কারের পরিচয় ৷

अभान यटङ्क सब धन्य श्राप्त । যাগ হজ্ঞ দান ধ্যানে রত ছানুফাণ্য 🗃 কাশীনাথ নাম এছানে ব্সভি। वत्का डेल'रि यिनि नाम भीत पर्छ !! প্রগণ হাবিলিসহর মধাহিত: ক্ষণিলার আছে তাঁর লোকে বিস্তাবিভ ্ বিধীতে সন্তাহনতে হইয়া নৈর্ভা। ে'ডিজ সকলে আপৰি করণলেন ব্দে कियाचे केराव अब अमिल क्याल। कर्याव दान क्याराम **अहे हत्**स्य। अंतर्भव स्मि एक मान्य प्रशास क निष्ठ शिकात्वकी हरत संख्या ।। **উভয়ে**ই लाफ पान बुंधा भूनहा नर्वकान कर विक स्थारमं करणह । क (में)काव (काछे नामि खिडेमाइदर्ग) कर दृष्ट शाम न्यादि खिलेमा हरा।।

### গ্রন্থকারের পরিচয়।

\*\*

সুরধুনী পূর্বে পারে অতি ভত এ।ম। ৰুলাঘোড় স্মিকটে নওপাড়া নাম।। তথার বসতি নাম শ্রীরাধামে হন। চাট্ভি উপাধি যাঁর বিশ্বাস ভ্রম :: বেদজ তপ্রজ্ঞ ইষ্ট নিঠ অভিশর! हित्व मुभील मुপख्डिमनाग्रह :. জীতেন্দ্রি ধীর দাভা সত্যপরায়ণ। का महर्या चार्यात्र यात लीला मधत्र ।। निमध कतिया (पर साङ्गीत नीटन । যোগাবলয়নে প্রান ভাজেন অচিব্রো ূ হার ভনয় তার বড় পুরাধর 🕦 জ্ঞান্য শ্রীশ্রীনাথ যিনি ওণের সাগর 🗘 ष्टिश्र बी निलक्मल (कामल कामत्र) ত্তীয় এীরামরত্ব রত্ব সম হয়।। ভদন্তর কৃষ্ঠি সবে কর অবধান। জাত্রবীর পূর্ব তটে নৈহাটী আখ্যান !: অভি অনুপম গ্রাম তিদীব সমান ! भिव करभ यथा विदारक्रम खनवान ॥ বৈয়ায়ীক স্বুধিগণ বসিয়া যেখানে। সভত হ্যিত হন শাস্ত্রের বাথানে।।

শ্রীমান যতেক নর ধর্মা প্রায়ণ ৷ शाश युद्ध मान बादन द्रा चतुका।। একাশীনাথ নাম এস্থানে বস্তি। वतना छेपाधि यिन मास्र मील पाछ।: প্রগণ হাবিলিসহর মধ্যস্থিত : ভনিদারি আছে তাঁর লেংকে বিস্তারিক পৃথিবীতে সমুধনতে হইর। নৈরাশ। मिहिब नकरल आमि क्वालम वान। শ্রীবাধ শ্রীরাম রত্ন শ্রীনিল কমলে। ভদবধি বাস করিলেন এই স্থলে !! শ্ৰীনাথের ভিন স্থত নগেক্ত মধ্যম। क्राबर्ध आक्रावकी हुत्र छेखम !! छेलरबंदे भाग्र मान्र मुठाम स्नव। मक्षेत्रात स्वाचित्र स्वाम उद्भत्। এ (দ'হার ভোষ্ঠ আমি এউমাচরণ। খ্যাহ রহ জনে সারি এউমাচরণ।।

### उका वर्ग ।

धकावली इन्ह 1 হেরম স্বয়স্ত্র শত্র উপেঞা 1 क्षेत्रमा भारतमा शका य करना। व्यक्तमा भारतमा शका य करना। निश्रष्ठ छार्वन এक हे नरम ॥ (प्रदे भरक्षित काष्ट्रांड काका ! (महे ब्राह्मभन मनाहे छक ।। তপ প্রায়ণ একস্তে মন। अमत अमूत मगुज गर्भ ११ যেগোরুড় যোগী সাধু যে যভ 1 क्षिश क्रम कार्टाटल क्र ॥ ভথাপি ঘারে না হেরে খপনে ! व्यवनादि यस तम नात्र धटनदार নিওণ নিরীহ নাছি বিকার। ভভের কারণে হন সাকার ৷৷ शक्षी अकाम यात्र हेकास । মজ ওরে মন তাঁহার পার।৷

> नद्रकी वन्त्रना।। जातको वन्त्रना।।

अध ভারতী খেত সরোজ পরে।
 বসি খেত বীণা ধরা বামকরে।।
 চর্মায় জ লোছিত পদ্ম জিনি।

### मद्रश्रुकी यन्त्रना ।

রামরন্তা উরু গুরু নিভবিনী।
শেত সুদার বাস পরিধারিনী।
মণি মেখলা কিরিনী ভাচ্ছে সাজে।
কটি হেরি মৃগোল্রা পলার লাজে।
কুচভার বিনল্রিভ শেত ভনু।
শত চল্রন্থী হুরু কাম ধনু।
ধৃষ্ণ কর্জন উজ্জলিতো নরনে।
দেখি ভক্তি কুরুলী প্লার বনে।
চারিবেদ চতুর্দিশ শাস্তে মন্ত্রী।
ধেন মানস নিতাস থাকে অরি।।

# কালীকার স্তব ।। ভোটক ছন্দ।

भा खंडरती मंत्रहे माहि क्या ।
प्रशिषीन महामती प्रध्य ब्दा ।
श्रित्रमंती मंद्रती निक्ति पानी ।
श्रित्रमंती मंद्रती निक्ति पानी ।
श्रित्र खंडर प्रशि नाग केनी ॥
प्रशि स्कि विश्वाहिती खंडिर क्षणा ।
नद्राधम करन खंडरम खंडमा ॥
रह्त हैर्मवेश वाद्रक नत्रम ।
जव बक्तान विन्ति कानीक करने ॥

### क्षक्र भिवा डेकाम कर्याशक्षम।

#### ----

#### পরার ।

शक् कन खम मिया जामात्र वहन । পিতার আদেশ বাপু করহ পালন !! সংসারের সার পিত। জায়দাভা হন। िष्ट् षाञ्च। कच्च वाश्व (कारताना एसना !! গুজের সমান বন্ধু নাহি কোন জন ৷ भूट्ड कातरण क्य कात्रा धारमाजन।। পিতার সকল ধন সন্ত'ন রতন। খাষ্ট্র কারণে হয় সংসারে যতন 11 পিতার ভূমিতে দেখি কেবল সভান। शृह छाजि वरम यादब दिमम विधान।! একান্ত ব্যেতি যদি করছ গমণ। নিতান্ত ভোমার পিতা তালিবে জীবন ।৷ **७१** रे विल क्र वाशु अम्गे अस्त । शूर्रभटक इड्राय कर कीयन याभन।। কুমার শুনিয়া সব গুরুর আদেশ। . कहिटक काशिल जादा कित्रिया दिस्मिय।! द्विष्ट बाभावि शक्य कहिला (कमन। जाश्रीम जिथात्न जूमि (बरम्ब वहन।) দুয়াবান পিছা ভিনি সস্তানে যে জন। अर्थार्थ अकि रमन् कतिया यकन।। নেই পিভা নেই গুরু বন্ধু হর নেই। হিৰি পঞ্চ শালিবাসে শক্তি জেল মেই য় .

### श्रक निया छे छत्त कर्षाशकथन।

য । পাপি বাল্ক করে কুপথে গমন। कक्रमा मात्रव्र शिष्ट्रां करत् निवाद्रम्।। পিতা হোরে হরি পূজা করিয়া নিষেধ । विवासत्र श्राहित एक करे वड़ थिए।। এ সংসার মহা ঘোর অস্তাকূপ ময়। পড়িলে নিস্তার গুরু কড় নাহি হয়।। विचादत वीक (मरे शुक्रव श्रवान। নিরাকার নির্কিকার সর্ব শক্তিমান।। **एक शिव्र कश्यान नकत्नद्र नाद्र।** ভক্তি বিনা ভব হোতে নাহিক নিস্তার।। এমন আভারে ভাজি মুড়জন গণ। विषदम्र नियुक्त रक्त नात्मत कात्रन।। ধৰ্মের অমৃত ভাব কেনবা তাজিয়া। विषय भवल भाग मार्मन मानिहा।। की उत्तर बीम भिषा कारत मत्रमन। भौज भिन्ना ভাटर পড়ি स्त्रात्र कौरम।। भारतारम क्षकृत भीन भारात रमनिता। कक् कड़िट्ड बात्र किছू ना जाविता।। शिलिएन देउच्या भाव विक्रिटन भेनाव। श्रविरमत्य सम्बद्धारय करत्र इन्द्र इन्द्रा ।। विवसित्र (महे क्ष एम क मरमात्र) वियाचा विषय १८७ नाहिक निसात ॥ चार्य विषयत विषय विषय।

## , अकार्वन ।

#### धकावली इन्ह ।

भ्यत्र **यश्र**क्ष मञ्जू छेरशन्तः। कर्ना स्वीस्त मन् भटनस्य ।। खंडमा भारतमा भाषा (य करन) নিগত জাবেন একই মনে '। (भड़े मदर्शिश्त कड़ाड कका त्महे ब्रह्मामन मनाई जन। ছপ প্রায়ণ একান্ত মন ! ভামর অনুর মনুক গণ।। যোগাক্ত যোগী সাধু যে ষভা कि शिश्च क्यम कार्तित्व कड !! ভ্যাপি থাঁরে না হেরে স্থানে। ম্মুণালে মন সে সার ধনে 1: बिछ्न बिदीह बाहि दिकात ! ভত্তের কারণে হন সাকার !! श्रक्ती श्रकाम यात्र हेफास ! মজ ওরে মন তীহার পার।। मत्रश्रुष्ठी वन्द्रवा ।।

(छ। छेक इन्ह !

প্তার ভারতী স্বেত সরোজ পরে। বিদ স্থেত বীণা পরা বামকরে।। চরণাযুজ লোহিত পথা জিনি। মণি মঞ্জির সিঞ্জিত ভ্রস্থনি।।

#### मत्रवाही वन्त्रवाह

বানহত্তা উক গুৰু নিভ্সিনী।
শ্বেভ হান্দর বাস পরিধারিনী।।
মণি মেথলা কিছিনী ভাহে সাজে।
ফাট হেরি সুগেন্দ্র পলার লাজে।।
ফুচভার বিন্ত্রিভ শেক ভন্ম।
শ্বু কর্জন উজ্জালিতো নয়নে।
দেখি ভঙ্গি কুরুলী পলার বনে।।
চারিবেদ চতুর্দশ শাস্ত্র ময়ী।
ব্যান মানস নিভাক থাকে অরি।।

### কালীকার স্তব ৷৷

#### (कार्चक इन्हा

মা শুভকরী শকট শান্তি করা।
ত্রী দীন দলমনী ছুঃখ হরা।।
গরমেশ্রী শকরী সিছি দাকী।
সমন্ত ভয়ে ত্রী তাণ কতী।।
ত্রী মুক্তি বিধারিনী ভক্তি প্রদা।
নরাধ্য জনে শুভদে শুভদা।।
হের হৈমবভি বারেক নরনে।
ভব বহানে বন্দি জ্ঞানাত্র জনে।।
ত্রী ব্রহ্মনী তিলোক ভারিনী।
জ্ঞাউমাচরণে ত্রাহ্মে তারিনি।।

# গ্ৰন্থ সূচনা

হেম শ্রু পর্কভের নিমুস্থ সভা সেতু দেশেতে জ্ঞান সিস্কৃ নামা এক অভি বিনীভ পরব্রহ্ম পরায়ণ সভ্যাচারি ব্রাহ্মণ বস্তি করিভেন, তাঁছার ভার্যার যৌবনাতিক্রম ছইল रुथात मञ्जान कि इह नार्डे, एक्जना विश्व अधिकिन विदल স্থলে যোগাবলয়নে কভিতেন, "হে পর্মেশ্র; ধরাতলে ভবতুলা মহ: শিশ্পী অচিস্তনীয় বিচিত্র নির্মাণকারী আর ্ক∌ই নাই, অভএব সৃষ্টির মধ্যে দৃষ্টান্ত ছার। ভোষার বর্ণন কর। পণ্ডিভ বর্গের ক্ষমভাতীত, আর তুমি ভর্গৎ চৈত্ৰা স্বৰূপ হইলেও যথাৰ্থ ৰূপে ভোমার স্বৰূপ কেছ জানেনা, ভূত তবিধাত্তিমান স্থাবর জলম চরাচর জীবা কার ক্রিয়া শক্তি সকলই ভোনার শক্তির অধীন, ব্রহ্মাণ্ড ব'হড়ত যে তোমার অনস্ত শক্তি তাহাতে সম্ভবাসম্ভব সক লই ংইতে পারে, অনভিত্ত স্বূল দর্শিরা ভোমার শক্তি মাহাত্ম্যে নীমাবদ্ধ করিয়া নাস্তিকতা প্রকাশ পূর্বক পৌরা নিক বর্গকে উপহাস করে, কিন্তু পৌরাণিকেরং নিশ্চয় कारमम नर्कास्त्रकाश्व भवरमध्य वाकीकरवद वाकीव माध জগন্যগুলে নানা বিচিত্ত সৃষ্টি করিয়াছেন, অভএব ভোমার শক্তি মাহাত্মে যদি আমার সন্তান কলে ভবে আমি জানিব সর্বাশক্তিমান প্রমেশ্র আমার

প্রতি অধিক অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়াছেন " ব্রাহ্মণ অতিকাণ প্রমেশ্ব সমীপে এই রূপ নিজাভিলাধ প্রকাশ করিবাতে বছকালের পর ভাষার এক পুত্র হইন ভাষাতে भूटर्नेन्छ् महुने नक्त धूरं निदीका कदित्र। भानन्ति छ चिक ৰর বছরারন্তে জাণ্ডক্রিয়া সমাপন পূর্বক নবকুমারের নাম অনন্ত রাখিলেন, অনন্ত্য ক্রমিক বৃদ্ধিতি বিপ্রনদান পঞ্চম ব্যারি হইলে পর জালেবে নীভি বিশারদ প্রীপতি নামক আচার্ষাের নিকট বিদা: শিক্ষায় নিযুক্ত করিলেন ভাহাতে বিপ্রকুষার বাল্য কালাবধি নীতি শান্তা, ন্যায় বেদান্তালি नाना मनान পाठ कतिहा दयश्याल इहेरन शत श्रीनान मर्या গণ্য হুইলেন এবং কিড়ংকাল গতে তাঁহার পিড়া স্বীর প্রেরমীর অভিলাধ মতে ঐ মনোহর পর্বত শিখর বাসি খোগেন্দ্র নামা মহর্ষির রত্মবালা নামী কন্যার সহিত প্রিয় কুমারের বিবাহের সম্বন্ধ স্থির করেন, কিন্ত পুজ এই ৰূপ বিবাহের কথা প্রারণ করিয়া সংসার অসার বোধ কর্ত **७** श्रयार्थ **भ**रता गमन क्षति **উ**मा इहेत्सन, ७। इत्ह ব্রাক্ষণ ছঃখিতাস্তকরণে শিক্ষাচার্য শ্রীপতি মহাশয়ের সলিধানে গমন পূর্বক পুত্রের বিবাহের অসমতি বিবরণ বিজ্ঞাপন করাতে গ্রীপতি মহাশম অনন্তকে ভাকিয়া দার পরিগ্রহার্থে হিত বাকা কহিছে লাগিলেন; শিষ্যও স্থাভিমত वाक क्रिए लागिएन।।

# वर रूठना।

#### ---

হেম খৃত্ব পর্বতের নিমুখ স্তা সেতু দেশেতে জানসিল্প নামা এক অতি বিনীভ পরব্রহ্ম পরায়ণু সভ্যাচারি ব্রাহ্মণ वम्बि क्षिर्डन, डाँश्व खार्चगात्र स्थेनमाच्छिम स्रेत छथाह मद्यानामि इव नारे, छक्त्वा विश्व श्रीकिमन विव्रत হলে যোগাবলছনে কহিছেন; "হে পর্মেশর, ধরাতনে ভবতুল্য মহাশিক্ষী অচিন্তনীয় বিচিত্ত নির্মাণকারী আর क्रिहे बारे, अञ्जव मृथित मस्या मृथीख बात्रा कामात्र বর্ণন করা পণ্ডিত বর্গের ক্ষমভাতীত, স্মার ভূমি স্কর্পন্ চৈতনা স্বৰূপ হইলেও ঘৰাৰ্থ ৰূপে ভোমার স্বৰূপ কেহ कारमना, ভূত ভবিবাৰর্ডমান স্থাবর জন্ম চরাচর জীবা कीव किश गांक त्रक्षा राजात गांकित वरीन, उकाल ৰহিৰ্ভ ত বে ভোষার অনস্ক'পজি তাহাতে সম্ভবাসম্ভব সক नहे रहेट्ड भारत, चनकिछ कुन वर्णियों कामात मकि माहात्या नीमावक क्षित्रा बाखिकेंग क्षेत्रा भूकि (भीत्रा निक वर्गटक छेशहान करेब्र, किंख लीब्रोनिरकेब्रा विश्वत कारनम नक्षां क्रिक्ट शहरवाद वीजीक्रक्र वीजीव मात्र अश्व अरम नाना विकित मृष्टि क्रिकार्टन, " वाक्र था किक्यु भवरमञ्ज नवीरम खरे क्रम निकास्त्रिमाय सकाम क्रिक्टि वस्कारम् भेत्रकाहात्र वक् भूव इरेम काराव्ह

1

यत वस्तात्व जाणकिया नमालम श्रुक्त मवकुमारतत माम चनक त्राचित्तन, चनकत्र कमिक विश्वनम् न शक्षत्र वसों व स्ट्रेंटन श्रें डॉस्ट्रेंट् नीडि विभात्रम औलिट नामक শাচার্ব্যের নিক্ট বিশ্যা শিক্ষার নিযুক্ত করিলেন ভাছাতে विध्वकृषात्र बाला कालाविध मीकि भाज, नगत विवासानि বানা দর্শন পাঠ করিরা বরঃপ্রাপ্ত ইইলে পর গুলিগণ মধ্যে গণা হইলেন এবং কিয়ৎকাল গতে তাঁহার পিতা সীয় প্রেরনীর অভিলাষ মতে ঐ মনোহর পর্বত শিখর বাসি যে:গেজ নামা মহর্ষির রত্মদালা নাম্বী কন্যার সহিত প্রিয় क्माद्वत विवादरत नम्क वित्रं कद्रन, किन्त भूक वहे बन বিবাহের কথা ঐবণ করিয়া সংসার অসার বোধ করত ভুপুঞার্থ অরণ্যে গর্মন করিতে উদাত ইইলেন, ভাহাতে ব্রাক্ষণ ছেঃথিচান্তকরণে শিক্ষাচার্য প্রীপতি মহাশরের वैविधारनः रामनभूकिक भूरकत विवादक अमञ्राक विवेदन বিজ্ঞাপন করাতে জ্ঞীপতি মহাশর অনন্তকে ডাকিলা দার পরি এহার্থে হিচ কহিতে লাগিলেন, শিষা ও সংভিনত बाक क्रिक लाभिल्म।

# গ্রন্থ শিষ্য ওভয়ে কথে পিক্ষুত্র।

त्रभगी कूरक खाँत ख्वाटनत मनिद्र । व्यादम क्रिक कान्न भारत् कान वीरत्र ॥ भवात्रात्म युक्ति देव्हा कंद्रित्त विवास । काम डेशरङाश- रहजू बाजांत्र व्यत्राम ॥ महा (मार्ट् भन मुख करत प्रवित्र । **छ** शक्य (क्या क्रिक्ट) क्रिक्ट क्र क मश्मात कांत्राभाव कदक चांत्रच्या याहाटक ब्रमगीर्भय भारंभव चाक्ता। चुक्कि क्तिरत्न (क्ष्म कूर्कि वाजात्र। অনিভা বিষয় ভোগে সদা মভি ৰায়।। গৃহির গৃহিণী হয় ভূতীয় একার। সাধী ভোগ্যা কুলটা বিখ্যাতা নাম যার। গরকালে সুধ আর ইহকালে যশ। त्रमा नाशी वाङ्गा करत्र शक्ति कति दण ॥ ভোগা ভোগাৰিনী কাম স্নেহেভে কেবল । পভির কর্মে সেবা বাঞ্ছে ভোগ কল ।। বস্ত্র অলকার ভোগ পার যভক্ষণ 🞼 😁 তত कर निष चानि कंत्रस दूहरन ।। জানতে বিশেষ গ্রন্থ কুল্টার জাব। क्षारिक द्रांदि मरनाक क्षान्।। भद्र भूक्तरवद्ध अवश्याना है (रवाश्राता) १००० ... মুতন মুখন কৰে নিজ্ঞানৰ যার 🔃 🗀 উপপতি লাখি বিজ প্ৰভিৱে বিনাখে 💹 कि विचि अपने करने दिनार्थ निकारिय ।।

मानूष खानिटेंच न्राद्ध ल्लानांत मेमा কেবল জাবেন বিজু নিতা সনাছন।। क्षा क्राइक श्राह क्षेत्र व्याप स्थामत बाका सार्थ निक्रित कातरगा। नत रेक्टल नाती (परक् काम आहे छन। णोशातः विशृष **णातः वृक्तिः क्रजू**श्चर्णाः देखाः मि अटनक आद्य नातीत नक्रा कहित्रः व्यवस्य कतिह्ह्म निद्यम्न ।। विका भूज भूग खीरन किया भूथ रहा **टिल** श्रीम पिताला(भ स्त्र) यन क्षेत्र ।। অভি প্রতি অভ্যাশক্তে ধন দেহ নাশ। বিশাস করিলে শীঘ্র হয় সর্করাশ।৷ यक कर्न सम्दर्भ एक लच्ची थारक चरत। ভভক্ষণ পুরুত্বর নারী সেবা করে।। ज क्रांच के क्या नाई शृहिनी खहरनी। মনেতে বাসনা আরোধির নিভাগনে ৷৷ তুমি গুরু কাশভার সমান প্রামার। रकामात निकटि हार्<u>कि कक्रमा अ</u>शाहा। अक विल कहिट्डम ब्रिक्स छत्र। ्रमाख्या (त्पर) छ*्। माहिका स*न्निद शमस ।। शुक्क मात्रा निका स्वक्रा वाकारवत्र शिंख । (क्यांडेटा मापु शक स्था माधू शक है। भू का कि का एक कि विश्व विदेश के भिट्याहरू रेज्यान अम् जिल्ला छेश्राम् ।।

मणुव मत्रक शास्त्र कर्यन नगम । यडकाल हुत खूका अकारण कित्रन ॥ ইত্যাদি সকল গুরু বিদিত ভোষায়। পিভারে কহিয়া মোরে কর্ছ বিদার ॥ कशरच्या नात (यह शर्तेम के बंदी) नहामत विन जादत्र भूरश्रेत भाकत।। क्यान क्या करने किया दिन। · সংসার সুরার সদে প্রমান্ত হইব।। कारे वक्त जानि कति दक्त नटर कात । महिटल थानम काथा काथा थ्यमानान ॥ कारमारणा विरम्प धक्रक कप नश्मात्र। ভবে কেন বনে ঘেতে মানা কর সার।। শিষা বাকা শুনিয়া জীপতি মহাশ্য। कहिएक मानिमा जाँदा स्हेशा विकास।। ভুমিতো পণ্ডিত বাপু ধাৰ্মিক সুজন। विट्युंचना (काद्य क्षिथ नर्भात (क्मन ॥ नर्ति। अप मार्था (अर्थ पृष्ट्त नामम। श्रुगावीन क्वा इंश ग्रूंश्ट्य त्रेमे ।। अध्य भागत्व गृरी इस जीवन छ। की खिमान शुग्रावान स्थी बटमायूक ॥ की जिमान मानीबाद महारा कीयम । यम की कि विशेष्त्र जीवरम महान्। मात्रात्र अहरण जुनि कृत्य एव कहिरल । नका बढ़के (ज्ञानवन्त कुकार्या। इकेटन ॥

#### कक् भिया উछद्रि क्रिंशिकथन।

সহৎকুলেভে যেই নারীর জনম। ঁ স্থামির সেবার সে কি কছু করে কম।। পভিত্রতা পতি তুঃধ না সহে অন্তরে। পতিসধা পতিগতি নিরন্তর হেরে ৷৷ পতি যদি হয় ভার পতিত কি দীন ৷ পতিব্ৰতা সভী নাহি হয় প্ৰভাহীন।। অসংকুলেতে যদি নারী জন্মলর। প্রায় সে অসং হর জানিহ নিশ্চর। कुलिंगत शिक्ष यमि इस अग्वान्। সক্ষেত্ৰ সমীপে সক্ষণা পায় মাৰ ৷৷ ভগাপি ভাহার ভার্ব্যে নিন্দে অনুক্রণ। ভান্তিতেও সেবা নাহি করে কক্ষচন।! সংকুলে হয় সজী নাহয় অনাধা। প্রসাগ আকরে কাচেব জ্বা কোথা। সতের স্বভাব কন্তু অস্থ কি হয়।। বিবাহ করিতে বাপু কোরে। নাকে ভর व्यापत वहम वाशु कत्र अवगा। সংসারিও হোতে পারে ধার্মিক সুখন। পুত্রের কারণ বাপু ষভ সাধুলন।। সভের কুমারী দেখি করেন বরণ। चित्रभाष इक्काल नश्नातका किता।। ভপক্তা কররে সাধু কাননে বসিয়া। रेवकटबंद्र इदि श्रृका कथका क्वता। शृह कामि वरन शिरल कि एहरेव कल।।

# धक्र णिया डेज्दा कर्षाशकथन।

श्र्टर विनिक्त विक्रु हत्रग श्रुक्त । ব্যরতে হরি যার তপ কি কারণ।। य जन ना ভार्त रुद्धि जलाद जाभन। কেমনে করিবে সেই তপ আচরণ !! धार्मिक (य इब्र सूख्कि भाव मिहेकन। পূর্কেছিল রাজা এক ভক্তির ভাজন 🛭 करमरङ स्ट्रेश जुल हति ङ खिरान । রমণী সহিত রাজা পাইল নির্বাণ।। ফর যোড় করি বিজ শ্রীপভিরে কর। এ কথা বিস্তারি মোরে কহ মহাশ্র !! क्वि लाइ उक्क मन कि कर्म कतिला। किक्टल कामिनी नंद औरति পारेल।। ভাক্ত বলে खान বাপু সবিশেষ ভার। **अ**डिमाठत्र याह। कतिल व्यक्तात्र ॥

# সভীষ চিত্ৰভান্থ কাব্য ৷

# অথ গ্রন্থার ।

### मीर्च विश्वा

महत्राक मशहत शाम, द्याक महत्रक माम, शोत्रदव क्लीत्रव शकि नम । मटर्ल जुला मम भित्र, काल त्रात्र त्रामित, विशक्तित्र शक्त थ्य यम ॥ डिखं त्यम मक्सीत, शुक्त वीत तूरक धीत, भरारामी धार्माक स्वनता ঋপুৰায়ী জীতে ক্রিয়, সতের পরম প্রিয়, দরিতো হেরিত শত কর ।। কি কহিব অধিকার, প্রায় ধরা অধিকার, করিয়া ছিলেন ভুজবলে। ছত্রধারী দণ্ডধারী, বিবে সেই দণ্ডকারী, विजीत हिल्मा जूम छल्ला। षाहिल भव्रम छन. भालाम भव्रम छन, ধরিতেন নূপ । গুণুমণি। क्टल वर्ण फिक नमा, कथरना असन यम, चात्र कारता धरत्नि धत्री ॥ जुलिक बदबावमा, जुलबाव चनूलमा, হেমলতা হেমলতা মত।

### शक्त निया উভয়ে কरेंथाशकथम।

श्रद विनि कद विकू हुद्र । श्रुकन । ব্দস্তরেতে হরি যার তপ কি কারণ।। रय कर ना छाट्य हिंद्र व्यष्टद्र व्याशन। কেমনে করিবে সেই তপ আচরণ ৷৷ ার্মিক যে হর মুক্তি পার সেইজন। পুর্বেছিল রাজা এক ভক্তির ভাজন 🛭 ক্রমতে হইরা নুপ হরি ভক্তিবান। त्रमधी महिल जाला भारेल निकीत।। কর যোড় করি বিজ প্রীপতিরে কয়। এ কথা বিস্তারি মোরে কহ মহাশ্রা। .कवा त्रहे खखा जन कि कम्म क विला। किक्टल कामियी नर औरति लाहेन।। ভক্ল বলে শুন বাপু সবিশেষ ভার ৷ क्षेत्रभाष्ट्रतथ याहा कतिल **व्यक्त**ित्र ।

# সতীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

### \_\_\_\_

# ব্যথ গ্রন্থার ।

### मीर्ग बाशमी।

जिट्यांक स्थादत शाम, हर्मांक स्टब्स स्थान, लोबटर कोंद्रद शकि नम । লু প ভুলা দশ শির, কিপে রাম র্দশির, विश्वाकत शिक्ष (यम यम ॥ 15 ख त्यम मध्यमीत, शृतक वीत बूटक थीत, ! महत्रामी धर्मात्क, वश्नात ! अनुकारी कार्ड लात, भरतत भरम थिय, দরিছে (চরিত শত কর !! कि कहिब अधिकात, श्राप्त पत्रा अधिकात, क्त्रिश ছिल्म पुष्यल । ছত্রধারী पश्चभाती, বিলে সেই দগুকারী, বিতীয় ছিলনা ভূমধকো।। आছिल शहम खग. शालाम शहम खग, धतिएक नृष अवस्ति। श्राण वर्ण पिक प्रभाः कथरना धमन यणः व्यात कारता धरत्रमि धत्री । ভুপতির মনোরমা, ভুলনার অনুপমা, 

গুণবভী পুণাবভী, পতিশ্ৰতি সদা মৃতি, পাতিব্ৰহ্য ব্ৰতেতেই রত ৷৷ ভার গার্ড সমৃদ্ভা, সর্বাগুণে গুণমুভা,

ताक यूका नाम मदबाहिमी।

ভাষার কপের ভুল্য, **অমৃত অধিক মূ**ল্য, নমতুল্য কামের কামিনী।

कः श्रम लाक्षिया छन्, (इति स्मार्ट्स कृलधनुः, हक्षनाटक एक्षना दाविल।

কৃশকর কটিদেশ, ভাহাতে মদনাবেশ, নীলামর নিরদে ঢাকিল।।

কামের কলস ভুচ্ছ, কুচযুগ পীনউচ্চ, লোহিত কাঁচলী ভাতে শোভা।

প্রক্র কমলদল, মুখোৎপলচল চল, মধুলোভো ।।

ভিল পুল্প জরজর, লজ্জিত বিহল্পবর, নেহারিয়া নাসার বলন।

কুল্ড কুস্থুমের পাতি, রদনে মঞ্জন ভাতি, ওঠাধর অরুণ দলন।৷

. সুন্দর কুরজ অফিচ, অথবা **খঞ্জন** পকিচ, নুভাকরে কমল উপরে ।

ভুক মনোজের ধনু, ফুলধনু নিজ হনু, । অপাঙ্গে লুকায়ে দর্গ করে।।

মৃগ চিক্ল ভিন্ন ইন্ছ, ভালে মৃগ মদবিক্। মুখেতে মধুর মৃত্বাদ । বনোপ্রিয় ভাষা জিলি, ভাষা ভাষে বিনাদিনী,
কাদ্যিনী জিনি কেশ পাশ!!
এই ৰূপ ভার ৰূপ, ভর্ষণ রসের কুপ,
রক্ষে ভক্ষে মাধুর্য্য গমন !
নির্থি মাভজ্বরে, জপমানে বনে সরে,
মরালের গমন দমন !!
আদশ বর্ষি বালা, নাজানে ম্মাণ জালা,
সুথে কাল কর্ষে যাপন !
কবি করে অনুরোধ; যাতে ভার রসবেধে,
সেই কথা করি বিজ্ঞাপন !!

# মসোহনীর স্বপ্ন দর্শন। প্রার ।

खन खन क्षित्र निया ज्ञान्य कथन ।
कनात ज्ञाहिल क्षित्र यो हातिकन ।।
भनीयूरी (नोमामिनी कमिलनी तमा।
और हाति नयी जात हिल्ल ज्ञानुभमा ।।
थाकिङ এ हाति नयी नयी नमाजात नक्ष्म ,
कतिज नकल्ल भीड वामा नृष्ठा तक्ष्म ।।
मही मध्या क्ष्मारिक कना क्ष्म कथा क्षा ज्ञा जाति ।।
वान ज्ञा जाति जाति जाता वानि किन ज्ञा क्षम ।।
वत्रक्रम (हातिहिल वर्गत ज्ञामम ।

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

चाक्राटक अखरद जात श्राटमत केनम। त्म हे कथा विखादिया खन मगूपश् ।। . এক দিন ইতোমধ্যে শুন সমাচার। মলোহিনী নূপবালা সুধার আধার :: দিবস হইল গভ নিশী সমাগভ। ইমাংশু উদয় প্রভাকর অন্তগত।। कमलिनी मानब्धी छाटम ज्ञ्यनीदत ! कुम्म উल्लाम भाग (इत्रिशा मामीरत्।। व्यापनात व्यक्षिकात कतिरह तकनी । मात्रन आंगारत शिल कमल वस्ती।। (कामल भेगारियाभरत कामल वालिम 1 ভাতে কোমলাঙ্গি ধনী ব্ৰাথিল আলিশা৷ अकृत अञादि लाम मूनिल नसन। द्राक्षकमा अहे कात्न कतिन भग्न।। **अट्टब्स शक्रकाबन (अट्टे जाद शाहा** উদর হইয়া নিজো চৈতন্য হারণয় 🔃 বাহে দেখ শাহিত্য হইল মুদিত। অন্তৰ্গত নেত্ৰে প্ৰেম শশাক উদিত।। च्रान व्यादभरक धनी करत नित्रीका। स्रुठाक श्रक्ष धक नवन त्रक्षन।। উক্ঠাম দেখিয়া কদলী কল্পান্তিত। তনু দেখি অতনু হইল কম্পায়িত !! भीन **भक्र** कीन कक्क विधित घटन। করিবর কর জিনি বাছর গঠন ।।

নাভিকুপ সর্যোবর ভাতে রোমাবলী। नव चित्र ४द्रिशाटक् अत्र विवली ।। শুক পক্ষি লইয়াছে নাসার ভঙ্গিমা। चक्र भारतिह चाक्य चरत त्रक्षिमां।। ভুক সার শরাসন নেত্র ফুলবাণ। থারে হালে ভার ভার নাহি পরিতাণ। ৰূপের ছটায় হয় স্ক্রিতা দামিনী ৷ ভজিবারে পতিসহ চলিল কামিনী !! लला है एक्स भूर्व कुछल कु कि है। वादका चांमुरकद रहारला शोत्रव सूक्षिक।। নবিন পুরুষ সেই রূপে গর গর ! पृचिमाटब बाला कारम (शारला कर्र !! সেইৰপে কামিনীর অন্তর হরিল। প্রিভাবে বালা ভারে বরণ করিল। রভি হেতুরস্বতী দিয়া রভি মতি ৷ পতি সহ রতি সুখ বঞ্চে কলাবভী।। মলোহিনী বালা এই ৰূপ রঙ্গনীতে। चक्ष (पथि नागद्भद्र लाभिन ভाবিভে।। काशवर्ग रता जात ज्ञान बिरम्हन । অনুভাব করি বুঝে প্রেম পরিছেদ।। चार्श्वत विद्वाहरम हत्ना विष्कृम मानत । भवरम मत्रम काम लाशिल व्याप्त ।। কোথা স্বৰ্গ উপভোগ কোথায় রৌরব। কোথার ছুর্মন্ধ কোথা প্রত্যের সৌরভ।।

# সভীন্ন চিত্ৰভান্ন কৰিয়।

কোপা পূর্ণিমার শশী কোথা অস্ত্রকার। महानत्म हत्ना निवाननः পावाराष्ट्र।। যেমন দরিতা ব্যক্তি হারায়ে রভন [ एक्त कुमाती कृश्य इटनटक शहब।। শেই যুবরাজে চিজ কোরেছে বিশাস। ना रहिता अभिकार हाफिए नियान।। অভ্নারে অঞ্ হৈছে সিক্ত হলো শ্যাঃ দূরে গেল শরীরের যত পরিচর্ষ।।। विषारम विमीर्गा वाला ভाविट्ड छलन। এ কালে রজনী গত উদিত তপন।। छेक्ति वालिका रेक्ट भश्न ममन। अम्मान अलीन कार हस्त्रमा रामन।। হেরিয়া অরুণ আ্রাখি লজ্জিত আরুণ। অধর হয়েছে শুফ য। ছিল ভরুণ।। षालु थेलु पृष्। वान कवती धटनहरू। व्यथंत वित्रह मंत्र ऋष्टम भटमट्छ ॥ রোদনে অলকাবলী কিবা ছিন্ন ভিন্ন। ভাপেতে উত্তপ্ত চিত্ত ভাব ধরা কিল।! অন্তরে দহিছে জালা বাহিরে গোপনঃ विक कवि ध्यम वीक कत्रिल द्वाभन !!

क्षाती थांच नशीशरात थादाध मान।

প্রভাতে উঠিল সতী, ছিন্ন ভিন্ন বেশ স্মৃতি, রুমবতী মানস বিদীণ্।

মৌন আদি হলো বঁধু তকিল বচন মধু, নাগরের বিরহে বিশীণা।।

भरत्याहिनी त्रामवाला, পाইया वित्रह जालाः। भरत्य केल कतिव शांशनः।

প্রেম কি গোপন হয়, কন্ত্রী কি ছাপা রয়; মানিকে কি ভিমীরাচ্ছদন!!

विजल धनी विमान, कर्तास आणि निर्विशास्त्र, कुमाब्रीटक कब्रिल मछाय ।

কাছে হেরি স্থিচয়, বালিকা না কথা কয়,

না করিল হাস্তু পরিহাস !!

ভাদেখি সজিনী গণ, হইল বিসায় মন,

কারণ বুঝিতে নাহি পারে।

সবে বলে একি রীভ, কর্ম অভি অনোচিত, দেখি ঠাকুর কীর বাবহারে।।

শেষে কোরে অনুভাব, কন্যার বুঝিয়া ভাব, যোড়করে সবিনয়ে কছে।

একি দেখি রাজসুতা, কেন হেন ছঃখযুতা, স্থভাব শভাৰ হলে রহে !!

क्रिक्ट इंदिए इंतिन, शुक्त वषन नतीन, क्रिक्टन (भा स्टाइ विषमा) কি কারণে আছ ছঃখি, বলনা সুধাংশুরুথী, স্থী প্রতি হ্ইরা প্রসন্না।। ঐশর্ষোর লাহি ওর, রঙ্গ রসে থাকে। ভোর, ভবে কিসে গাচ ক্লেগোদয়।

আমরা সঙ্গিনী তব, চিন্তি তব, সুখার্গব, হাল দেখি হয়েছি বিশ্যা।

ভব দুংথে ছঃখি হই, মঙ্গলে মঞ্চলে রই; ভোমা বই আর কারু নই।

দেবা করি চিরকাল, বল কেন হেন হাল-ভব ছঃখ পরাণে না সই।।

বুংস গো ভোমার মন্ম, করিতে দুর্ঘট কর্ম। সাধ্য আছে আমা দ্বাকার।

লেখিতে কেবল নারী, আজ্ঞা হলে কি নাপারি, বলো আনি ফলধীর সার।

এই মতে স্থিগণ, জিজাসিছে বিবরণ, কভ ক্ষে কহিল রঙ্গিনী।

खिनिया चर्त काहिनी, वटल उर्शा म्ह्याहिनी, जन्मत्वा नकल निन्नी।।

স্থা কভু সভ্য নয়, চিত্তের চাঞ্লা হয়, বায়ু ধর্মে স্থান দেখায়।

কলতঃ এমহে সভা, শুন বলি ভার ভথ্য, স্থা ছারাবাজী স্বভিপ্রায়।

শ্বপনে বরিয়া কার, ভাবিতেছ হার হার, কেবল খেরাল মার সারা। পরিহরি এ সোচন, মানসে কর মোচনং
মিছা মিছি কেন অপ্রথারী ৷৷
এই মতে সবিগণ, করিল অনুরঞ্জন,
সেবা হেডু সেবিকা সকল !
শীতল সলিল দির', তার মুখ ধেয়াইছার
নিভাইতে চাহে চিন্তানলাঃ।
গোমেতে বাহার মন, করিতেছে ছালাতন,
তার শান্তি হয় কি সেবনে ৷
হোলে দাবানলোদয়, তা নাকি নির্কাণ হয়,
বিনা ইন্দ্র বারি বরিষণে ৷৷
এই কপে দিন গতে, বিভাবরি সমাগতে,
নুপজ্জা করিল শয়ন ৷
শীতমাচরণ কয়, নিদ্রা যে সুবৃত্তি নয়,
পুনঃ স্বপ্র করে দর্শন ৷৷

্মছে:হিনীর **ভিতীয় হ**প্ল কথন। প্রার।

অপূর্ক শ্যায় ধনী শ্রনে আছিল।
বিরহ সন্তাপে শীল্ল নিজা না হইল।।
কতকণে কত কঠে নিজা উপজিল।
পুনঃ সেই গুণাকরে স্থপনে দেখিল।।
ত হ ভাব দেখি তঃখ দুরে পলাইল।
নিজগণ লয়ে সুধ ভুরিতে আইল।

### সভীত্ব চিত্ৰভানু কাব্য।

পরস্পর মনেং সজোব পাইল।
পতি পরিচয় হেতু, সতী জিজাসিল।।
প্রিয়া বাকো মনে তার আনন্দ জনিল।
নামক নারিকা প্রতি কহিতে লাগিল।।
কুশাস্থ নামে ভূপতি অতি পুণাশীল।
কালীপুরে যেই নিজ পুণা প্রকাশিলা।
খার পুত্র আমি মাত্র বিতীয় না ছিল।
মাথা আমার নাম সকলে কহিলা।
ভামার রূপের যশ জগতে ঘুবীল।
ভামির উমাচরণ পুলকে পুরিলা।

बिष्ठां अटकाहिनीत विलाश ।

जभनी।।

লায়কের সঙ্গে সঙ্গা, কত কথা কত রঞ্জ,
হেনকালে নিদ্রা অসঙ্গতি।
বিদ্রা যদি গেল ছুটে, নাগরী জাগিয়া উঠে,
বলে কোথা গেল প্রাণপতি।।
কে এমন বন্ধু আছে, যাইব কাহার কাছে,
কে মিন্তাবে মোরে রসার্থব।
কে করিবে এ সুসার, সে বিনে সব-অসার,
কেবা হেন কার কাছে কব।।

11 ৩ 11

क वृश्वित्व (मात्र कुश्त्र), क आनित्व मन मूथ, কে করিবে মোর উপকার। (य कतित्व अहे हिट, कहि नामि सुनिन्ति है। পাসীত্ব করেব আমি ভার!। विभा ह्यालः (भय छात्र, नाग्रत्त्र क्रनूतांश कदिएकटट् कटलक स्मिती। ह्म कारल ए। दर भीक, पूत्र (भरत किमरिक, अन्ध इहेल विश्ववदी ॥ মনোড়ঃখ ভরুজেতে, আর নেত্র তুর্জেতে, नुश्रवाला ज्ञारय कूल है।तन। উঠে বলে गिर्क मिनी, (यन पाकि व्यनाथिनी, कुश्रुषणी (यन हेन्द्र विटन।। ক্ৰী হেন মৰি হীন, বসু বিনা অভি দীন, रधन मीन मलिल दिश्दन। বিলে কুফ যেন ধরা, চাতকী জীয়তে মর', ' दिना चन वाति वतिवर्गा। मूर्याद्रलात्व कति, कहिर्छह महहती, মরি মরি হলীৰ চক্রাঞ্চ। कहिएक विल्याद हिन्नों, मा वास्थ मा पिल विष्नां, भारति हार्ल महाल क्षकाणा। त्थरम करह भगोस्थी, भनीय्थी रुख स्थी, জ্পনিয়াছি তোমার মরম।

वल प्राचि विस्मिथिया, भीकल कतिव हिंद्रा, यात यादव नतम खब्रम ।

### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাৰ্য।

রাজা রাজ কায়ে মন্ত, রাণী নাহি করে ভত্ত, ছঃব দেখি হিয়া ফাটে হার।

থাকিতে আমরা স্থী, যাত্রাপাবে আর কি, হেমাক বিরহে গোলে যায়!!

এক্প যৌবন নব, না মিলিল পতি তব,

প্তি বিনা স্ব নির্ণ্ক।

ভোমার পূরাস ঘ'রে, যদি ঘটাইতে ভারে, পারি ভবে সকলি সার্থক।।

এবে। শুনি বলেরামা, ছোমরা সে জানো আমা, ভাই কহি শুন সহচরী।

গত র তের শ্যাতিলে, মিজ। যাই কুতুরলে, পুন ভাহে সপ্লে দৃষ্টি করি।।

(महे युवद्राक कानि, श्रकानिया श्रिमद्राणी,

নাল ধাস কহিল আসায়।

মন্ফিন্ত ভদব্ধি; নয়ন হোষেছে নদী, সে বিনে এ দেহ শ্ব প্রায়।।

অভএব ভার ভরে, পরাণ কেমন করে,

किरम शाव वलमा मकनी।

कारलंट नकल करत, याद्य मधी कारल पहल,

नाहि मादन पिवन त्रमनी।।

अभव इहेल काल, भंगारला कलेक जात.

ৰিজা মোর হোলো যমদুভ।

কর সধী অবধান, কিসেতে ব চিবে প্রাণ্ঠ সালিয়া আইল কুফসুত ॥ ्वाश्रमारतः विकाशतः, बला परित विमान, मक यानु मादयत्र ना र्य । मारत्रत्र मन्त्राण मरक, दारभन्न विहान पर्थ, रम कि ना रम कदि जरा। धकावन श्राप्त श्राप्त, बाबा चाटक कांत्र क्राप्त. कि मात्र घडे 'दल स्माद्य विथि।' करव পाव यूवद्राक, यूफारव चल्डब माक, श्परग्रट थाव द्रत्रविधी।। नधी मीर्तिय। क्य, कथाश्रास लांका छत्र, थ (क कथा ज्ञर्थित मृत ) शांश्रांत वांतिष्ठ अाथ, मिर्य इत्व श्रद्भान, त्राका रेक्टक म्यूटल निर्म्मृता। ডেমা ছেল মেয়ে হত, সপ্ল দেখি এইখড क्वां ना कि: दश्ह वाश भाग। प्रमहिष्टी चर्ला बरल, विक्रिटलक कूल्वाहरूल, भरत दिशा देकला धरम जाम।। তুমি ধনী সেইৰূপে, কহ গিয়া রাজী ভূপে, ভবে সিভি হবে মনর্থ ৷ গোপনেতে দায় बाबा, श्रकारण (क करत्र म'ब', **এই खन प्रशेष्ट्रत भ**य।। রাধামোহন ত্রাজাণ, ধান্মিক অভি সুজন, चामा शूख जांत्र अञ्जानाथ। उाहात कार्क मन्त्रम, विक अविवाहत्त

कहिएक्ट चित्रिश अभाष।।

### गरीष हिंबाओश करिया।

त्मीमामिनी मशीव मदण क्यावीत कथा। शबाब।

(इनकारल जोगामिनी, नशी छेपनीछ। कहिएक लागिल कारत, कूमात्री किश्रिय।। नदब्रस निक्नी बटल, त्रीमामिनो खन। कि कव मद्रम कथं, शद्रम माझन।। কিছু নাহি লাগে ভাল, প্রাণে স্থ নাই। (य) वटन टक ना मिलाल, ठाकूत यामारे।। গোপনে স্থপনে যারে করিলাম দৃষ্টি। চিত্তে রোয়ে সেই নেত্রে করে থেম র্টি।। হাদ্র নিরুস মোর বিরুস বদন। क्रिक्टम म काम शांव कह म क्षेम।। আমি দেহমাত প্রার, প্রাণ সেই জন। त्म विना रहारत्रिष्ट्र भव मव व्यकात्रगा। मथी वत्न ऋत एउ कि इत्वं के। मिला। वल कि कदिब आिंग डेडला इहेला।। উপায় করিয়া আমি ঘটাব নিশ্চর। छेलारत अध्यकी चात्न हति वर्ष हता। वाकारत वाशीरत भारत कहि खबिरमव। গোপৰে আমিলে পরে উপ্রক্রীবে ক্লেশ।৷ ষ্পপ্রকাশে যদি কর একর্ম নিকাশ। ... , व्यकानित्य **व्यकारण ज्यकीरण व्यकाण।।** त्याय नाजी यथार कारत्र एक जमन। कि कव पूर्व है नाम च्टाइंड (डमन।।

করিলে এমন কাষ যাশ হবে ভক।
ঘটাবে কি শোষে উবাহরণের বক।।
কবি কহে ধৈষ্য হও শুন রসবভী।
মুখ্যেরে মিলাইব হব নিজ পতি।।

--

মথোহিনীর আক্ষেপ উক্তি। লঘুচতুষ্পাদী।

এসব হচন, শুনিয়া ভখন, ं कविया जन्मन, कामिनी कथा। र्वकृत्व अप्रातः, यल मधी छातः. কাত্রিনা আর, প্রাণ নারয়।। खीवन विद्योग, अंदिक (यम भीन, তেন নিশীলিত গোদনে থাকি। পাইল ভাইয়ে, তথ দুরে ্যার, যতনেতে ভার, হাদয়ে রাখি ।৷ বিরহ পাবার, বাড়িছে অ'মার, যোগ্নের ভার, সহিতে নারি। বেহ ভরীতুল, নাহি পায় কুল, ভ:সিত্রে বিপুল, বিনা কাণ্ডারি ॥ यल मध्हती, खेलाश कि कति, रेधवृक्ष बाधिति, त्रिक्षव विद्या (गई अनगत, इहेल निषय. তাতে ছুখোদয়, तक्की मिटन।!

### সভীষ চিত্ৰভান্থ কাৰা ৷

্ মদনে আকুল, থোবন মুকুল, কুটিয়া সে কুল, পুরিল মধু। ভিজ কবি কর, এমন সময়, কোধারম মর: ভ্রম্মা বধু।

#### পরার ।

खुनिया मिन्निनै श्रेष कहिएছ वहन। म्बन १ का मरमाहिनी कति निरंदणन । रेनद्विया (काब कथा नाहि इह निकि। বিদর উলাগনে পাবে মনোমত বাজি !! लेक पंतर वाक कि छू अभा अप. जिक्षम १ कित काकि कर्रारयम कारहाक यहन।! मांभान् ही नदी दल खन खनवडी। ভ'বিংশে কি হবে শ্ৰ আনার ভ'রভি। िमार्न्सा दक्ष थाः व नाहि कारमाज्यस्य। (व: १९१व मधान देवति नाहि जिलूबरन।। মুভ সম জেহ বল কার প্রতি হয়। रेन्द्रशद माखि नाई जानिह निक्छ।। रेलवयाल खळा एम्ब म्बारक कीवन। कः निवाम नहिल मूर्किटव देवभाष्त्र।। অভএব দৈবশক্তি হয় গরীয়দী। रेप्तरभन्न दल बाहे खबला कभनी।। कमिलनी दल खन खन मरवाहिनी। ভারতে বিস্তার আছে অন্ত কাহিনী!

### তহ সভাষাচত্ৰভাম কাব্য।

नम्रज्ञा महाजादक हत्लाः रेनव प्रमा ।

स्था भागि छे है रेन्न स्ट्रिंग्ड्र कनमा ।।

वर्षे वर्षे बर्षे विन पिन माम द्रमा ।

स्थानित्क कृतिन स्भृष्टा कथा मरनादमा ।।

वर्गे वर्षे कर्षे कर्षे मरनादमा ।।

वर्गे वर्षे कर्षे कर्षे वर्षे वर्षे ।।

वर्गे वर्षे कर्षे मम्बर्गे ।।

वर्गे कर्षे स्था क्रिकी ।

स्थान क्रिकी कर्षे क्रिकी मिन्नी ।।

स्थान क्रिकी कर्षे क्रिक नाशिन ।

भूदान क्रिकी कर्षे क्रिक नाशिन ।

भूदान क्रिकी क्रिकी विद्यान ।

### সমরণ রাজার ইভিহাস। তিপদী।

ভারত বংশ কাছিনা, লুন ওগো মন্মোহিনী,
বিশেষিয়া কহি সে তদন্ত।
চল্রবংশে ঘশকুপ, উত্তব পৌরব ভূপ,
সেই বংশে জনিল দুমন্ত হেমনী ধনা,
ভরত জনিলে যার পার্ত্ত।
ভরতের জনা মর্মা, ভন যত ধর্ম কর্মা,
বিস্তার ভারতে আলিপর্কো।
এ কপে ভারতবংশ, সেই বংশ অবতংশ,
মহারাজা নাম সম্বরণ।

### সভীপ চিত্ৰভান্থ কাৰা ।

জীতেন্দ্রির ধীর দাস্ত, তপনের তপেস্বাস্ত, প্রতিদিন সূর্যোর অর্চণ।।

এক দিন ফিভিপাল, সক্ষে পারিষদ জাল, মৃগ হেতু বনে উপনীত।

কাৰৰ ভাষণ ক্ৰমে, ক্লান্তিযুক্ত পথভামে, ৰৱপতি নীৰ পিপাশিত !!

নিকটে হেরিয়া শৈল, নৃপতি সম্মেধ কৈল, উঠে দিক নিরুপন হেতু।

সোপানে উঠিতে রায়, দীপ্তি এক দেখি ভার, অন্ত মানিল ধর্মকৈতু।।

कताः अक निक्षामा, जिल्ला मरनात्रमः, जाहिगी निन्हिता स्थः हित।

কলিবর গুঞ্জ গুঞ্জ, ভীক্ষুত্র কেলপুঞ্জ, উদয় ভূপার যেন রবি।।

अभानी हेलानी त्रमा, जुननात इस नमा, किया काय मधन युवली।

ভদ্রপ দেহের রক্ষ, হর কোপে কাম ভক্ষ, অবেষণ করে বুঝি পভি।।

বদন শারদ শাশী, মন্তকে কলক মসি, ধরিয়াছে শিরোক্ছল।

ক্রে ওঠাধর ছদ, নিরবাসি কোকনদ, সে গণ্ড মণ্ডল চল চল !!

কামেরে কি দিয়া ফাঁকি, নিরা ভার সুখপাবি:
কোরেছে কি নাদাব বলন ।

### নভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

কিষা এই অনুসানি, বুঝি ভিলফুল আলে 🔩 নিৰ্মাণেতে বিধিৱ বভন।। দেখিয়া পুরুর দাপ, ফণি কণা পায় তা কালচাপ বুকি গল রাখি। (बर्क छत्रा इजाइल, पृत्छे यन छेलाउँल, दिनग्दण शुक्ष द्वान भाषि॥ बद्देन क्लाल, श्रृतेष्ठता किनि काल, কভালে বিচিত্র বাস পরি। গ্ৰিছর প্রোধর, রাজীব মকুল বর. की भावा जाटक क्रावामदी।। নিডায় জাঘন জ্লা, মহিধর সমজুলা, मदबाज विवादय (महे द्वान.। নিট্ন কর পরিপাটি, চারি খণ্ড করি কাটি, केक कुछ ४ ट ल विश्वान ॥ এজাপে কম্যার ৰূপ, হোর সম্বরণ ভূপা, त्मः ह शिल कुलवान वादा। হ গুটল মন জ্ঞান, মলিন তমুর ধানি, विक क्य मत्म वाशात्न।।

লঘু চতুপদা ছন্দ।
হৈরিয়াদে অপ, সমরণ ভূপ,
নিজকাম কুপ, উথলী ধার।
কে তুমি কামিনী, কাহার নালনী,
আছে একাকিনী, কাননৈ তার।

### সভীন্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

चकरल दलना, छाजिया छलन', काशत नन्मा, र्तित्न खान। ভোমার শরীর, বুঝি কাম ভীর, করিল অভির, আমার প্রাণ।। হেরি ভোর অজ, মন নিল সজ, যেমন কুরুক, পড়িল খালে। পীঞ্জারর পারি, প্রাণ হলে। নাকি, ान कृषि की ति, वमने छ। एन 🗅 " ७ कृष्ठ मध्य, मह्म मावानल, लायण धदल, मलील सुत्र। (योदन जन्भारि, किन व्याप क्राप) भूज्ञत्वत्र वर्ष, मा कत्र खरा। শাসা মহি**২**; যৌবলের তরি, खाविष्ट मुलदी, अन्य मला। ভাটেত মোর মন, প্রমন্ত বারণ, করি আ রেশ্ছণ, ভাবিয়া জলে।। ় ফির নহে জল, করি করে বল, . তরি টলং, নাবিক বিনে।° কছি শুন সার, হইবে সুসার, क्त कर्नशात, अहे स्थीरन।। फूमि ला कामिनी, कूरन महिनी, थण्ड मलिनी, ब्रदम्ब छता। क्यत्लद्र शरका, जालि मंकद्रावर, मानन जानत्म, भारेट पता ॥

### সভীষ্ চিত্ৰভান্থ কাবা।

चिति स्रांश, यूगात क (तांश, कत छेशटंगा, भागात महन।
तमन किताल, चारतक वांगाल, कीवन वांगाल, भागीन कहन।
नामा तस्म सूल्भ, करह कछ कथ,
मगम कूल्भ, मगन तरम।
जिस्स करि करह, मूथ खित नरह,
रमाम ह्रांसा द्रांड, भाना दरम।

#### ---

#### প্রার 11

কামোরেতথে ভূপভির বচন শুনিয়া।
ভ্রমণন হোলো কন্যা কিছু নাবলিয়া।।
কন্যার বিজেদে ভার শুনা হোলোজীব।
ভ্রমনে হারে ভবে পড়িল পার্থিব।।
ন্পুপরে মুক্তিত দেখি থাকি শুনা ভরে।
গুহে যাহ রাজা কন্যা কহে উচ্চৈখরে।।
কেমনে জালমে যাবো কহে নর রায়।
ন্ন প্রাণ মোর ভব পীছু পীছু ধায়।।
ভাবীনের প্রভি দয়া নাহি ভব লেশ।
কি জন্যে নিদয় প্রভ না জানি বিশেব।।
শুনিয়া রাজার বাক্য রবিকন্যা কয়।
এখন ভোমাকে দিই নিজ পরিচয়।।
ভপন ভনুজা জানি শুন মভিমান।
ভপতি বলিয়া রাজা মোর অভিধান।।

### সঁতী ৰ চিত্ৰ ভাষ্ট কাৰ্য।

त्राषां बटल क्लविक एवं इंख तम इ'31 এ অধীনে আপনার কান্ত করি লও ।। ভপতি বলয়ে শুন স্ক্রীঢ়াপত্য! (य कथा कहिला कुमि हेड्। बट्ड कथा।। ভূমি হোলে মানব দেবভা কন্যা আমি। অভি অসম্ভব ভূমি হবে মোর স্বামী।। সমরণ বলে শুন জাকর ছহিতা। ভোমারে হইভে হবে আমার বনিতা।। একান্ত ভাবেতে মোর তব প্রতি মন। ভোষার বিচেছদে আমি ভাজিব জীবন!! ভবে ভূপ প্ৰতি ক**হে অৰুণ অঙ্গল**। ভুয়া ভজি ভুলিব কি কলঙ্কের ধলা।। রাজা বলে অবগতি করলো স্থন্রী! यादित कलक किया हाटल देम्हायती।। কন্য। বলে পিতা যদি হয়েন সন্মতি। ভবে যা ৰলিলে ভাহা হয় নরপভি।। জনক ভোষারে যদি করেন প্রদান। হইব তোমার জায়া শুন মতিমান।। हेश विल अध्यान रहेन ७०।७। ছিল কৰি কছে ভপে গেল নরপতি।।

লমু তিপদী। শুজনীত সুভ, হোরে ছঃধযুত, স্থানে না খেল শার।

### AP.

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কৰে।

रेमबागटन तात्र, क्द्रिल दिमात्र, ভারা গেল রাজাগার ৷৷ দেশে গেল পাত্ৰ, এক মন্তি মাত, द्राधिल क्यान्य मद्रम् । (इर्दा এक मन, जात्रादर्श ज्लान, ররপতি **বিরাভকে**।। দিন জবসানে, ফল মূল আনে, প্রথমে আহার ভাই। ্রভীয়ে আহার, হোলো নীর ধার व्यनं हिन्छ। यदन नारे।। (नवटलाक भारत, शृंदक विनकारत, कल कूल जल निया। क्षक घटन ७%, भारभाग लक्ष करा, ধ্যানে জ্ঞান যায় নিয়া !! এনতে ভাকর, ধাায় নুপবর, किছ पिन शंड रेस्त। (मर मिवाकड़, ভাতে ভুইতর, एथानि धाराक रेनन।। ভবেতো রাজন, করিয়৷ সারণ, वनीकंटक छथा आदन। কুল পুরোহিত, আদিয়া ভুরিত, विरणव इंखों छ कारन ॥ লইয়া বার্ছা, দিবাকর যথা, कारन शन ज्लाधन।

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

मार्ड विकटि, कहिए शक्दि, या बिलल नवत्रां। রাজার সাধ্যে, তৃষ্ট ছিল মনে; মনোবর্ডি ছিল যাহাণ ভাছে কুপাৰিষ্ট; হইয়া বশীষ্ট, ব্যাসিয়া কহিল ভাষা।। হোয়ে ওফ চিত্ত, বাজার নিমিত্ত, निक कना फिल त्रवि। বসন ভূষণ, জঙ্গে সুশোভন, क्रवन्द्रभार्व हिव ॥ त्रविकम्भा नत्त्र, सूनि सन्ड स्ट्रांटन, जुलवरंत्र फिल मान। পাইয়া ভপতি, রাজা হর্মতি, भारवटक मक्क्स् दीर्गा (समन हटकात, जानटम विटलात, (क्त्रि भूर्विमात्र भणी। मुर्थिष्ठ मिल्ब, इरेल छुजन, विटष्ट्रम श्वित्रा अंति।। क्रृहश् शिल पूत्र, जानम शहूत्र, কিমিল উত্তয় সৰে। बरे द्वारन वांत्र, शक्न विलाभ, मूर्थ करत्र क्र्डे करमा। षामम वदमत्र, कीषा नितंषत्र, क्रिया छ शक्ति निष्या 🐔 🖪

ভার্বা কর শেষ, স্থাদেশে নরেশ,
প্রেক্তির, এক পুত্র ধীর,
কুর নামে জনমিল।
ভূমে ক্সুপান, কুরুক্তের নাম,
নিজ পুণো প্রকাশিল।।
কুরু হৈছে যত, বংশ হোলো কভ,
বিস্তার আছে ভারতে।
ভাবি পদ ইন্ট, কবি কহে মিন্ট,

-9-8-6-

मत्याक्तिते भिवादाधना।

প্রার ৷

সন্থ ভূপতির শুনি ইতিহাস।
সন্থ প্রতি কহে রামা মৃতু মৃত্ ভাষা।
শুন সহচরিগণ বল যুক্তি সার।
দেব মধ্যে উপাসনা করি মামি কার।।
রমা বলে শুন ওগো রাজার কুমারি।
রাধা চক্রাবলী আদি যত এজনারী।।
কাভ্যারনী পূজাকরি ক্ষে পার পতি।
লিব স্থারাধিয়া বর পার উবাবভী।।
মহেলা স্থারাধ্যা আদ্যা মহেলানী যিনি।
আরাধিয়া সংহলে মহেলো পান ভিনি।।

### সভাৰ চিত্ৰভান্ত কাব্য।

শিব রুক্ষ এক আগ্রা শক্তি ছাড়। নর। जित्न এक अरक डिन कानिर निक्ति।। ভাতএব দৃ**ঢ় করি পুজ শান্তু পদ।** मत्मव वाञ्चिष्ठ भारव वाष्ट्रिय मण्लाम ।। শুনিয়া স্থির বোল অজ্ঞানত। টুটে। এক কালে সৰ স্থি সায় দিয়া উঠে। তেন যুক্তি দিল যদি রম। সহচরী। श्वम व्याख्यामि हिख इहेल मुन्द्री।। স্বয়সু সাধনা হেছু নানা দ্বা লয়ে। স্থি সঙ্গে শিবালয়ে চলে জভ হ্রে॥ रेनरवमा लहेल (करु नाना छेशहात्र। वनम कृष्ण (यर ऋर्षात काकात्र।। ধুপ দীপ মধুপক সুশীতল জল। ठन्सन कृष्यम माला नव विखपल।I ইত্যাদি বিবিধ অবা লয়ে গুণবভী। ষোড়োশপচারে পূজা করে পশুপতি।। रैनटवन्गापि नाना खत्र कट्ट निरवनन । कतिल मानन भूजा हत्त्व अक मन।। करत करत कत्र ठाली शाल वारमा ९म.व। পুজ। অবসানে করে ঘন ঘণ্ট। রব্।। खि भाष्ट्रां कटत बटतत शार्थना। वत्न खर्क् भीख (यन शुद्राप्त कामना।। वक्रि धेकार कना शूटक विस्ताहन। र्त करिक् नमा कब्ब बब्बब धार्भम।।

नाश्रदकत कथा कि हू खम जाण्डा । कहिरह देशाहदूर शहर कि कता।

### ्यमार्थत विवत्रग ।

#### প্রার ৷

কালীপুরে কুপাঞ্ল নামেতে নৃপম্ণ । প্রম পৌরুষান্তিত নানাধ্নে ধনি ॥ একছতে বসুমতি করিল শাসন। বছমূল্য কিরীট কুগুল নৃপাসন !! অব্নিতে মহারাজা যেন পুরন্দর। পরম ধার্মিক বিফুভজিতে তংপর। এক পুত্র ভূপতির সংসারে বির্তম। मन्त्रिथ धरत्म नाम क्षा छन महा। कानिया बदबस दृक्षावद्या जालनात। विष्ठाद्रिया मन्त्रार्थस्य (पन द्राका जात ।। किছू कालाखरत बाब्बा शिला भत्रत्नाक। হাহাকার শব্দে পুর**জনে করে শোক।**! তিরদংশ পিতৃতাদ্ধ কৈল যুবরাক। যশেতে পূর্ণিত হোলো অব্নির মাঝ। बचाथ इहेता छे अविके जिरहानत्व। जमालाश करत जमा वकुक्रम जस्म ॥ शकात शाल्यां जात्र त्रकाक्टन त्राका । विहात पूर्वक ताका करत ताककारा।

### সতীৰ চিত্ৰভন্মি কাব্য

मारबटक वृद्धित (मर्भ क्षेत्र) स्था स्था तहा। स्के करन यममा चिक कविकशा

---

স্থাপর কানন ভোজনঃ

#### প্রার ৷

এফদিন মহাব্যকা আনন্দিত মনে। বফুৰৰ্গ সহ চলে কাৰন ভোজনে!! অশ্ব আবোহণে রাজা চলিল কৌতুকে। আৰু উত্তরিল গিয়া উদানেতে মুখে। व्याकृत्म मर्नकाव करत छेपरवर्म। च चार्या नूषार खा जूना वनिन नरतम।। স্নানকালে গদ্ধকৈল মাথে সবেমেলি। क्ट क्ट मद्भावद्य कृद्ध **क्**लक्ति॥ অ'প জলে থাকি সান করিভেছে কেহ। দাসেতে মার্জন করে নৃপতির দেহ।। सामभद्र इंखेटम्यार्कन क्दन मद्र। (कर् भारत कं ककरण कलरथेरक रूटत ।) কভক্ষণে প্রজা সাক্ষরাজার হইল। कलপানি দ্রব্য হেতৃ অনুজ্ঞা করিল।। লুচি পুরি ও কৌচুরি আনি দিল পাতে। मिल्लक (भार्य खार्ग का हार्यां छ। ।। वत्रकि वामाञ्च दिक (भारत मिल कीत। मरायर्थ बात नरवे हरेता मुस्ति।।

### সভীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

মধ্যম সমরে অল আনে স্পকার। শাক সুপ অয়ল পায়স পুপ আর !! ভোজন করিল ছয় রসে সবে সুখে! আচমন করিয়া তায়ুল দিল মুখে।। क्ट्रा भवन किल क्टूब भया'व। কেহবা পরম খে'দে দেভ'র বাজার।। ঢোলক বাজায় কেছ কেছ ছাতে ভান। কোনলনে উপবনে খুসিতে বেড়ান !! रेवकाल नमरत जुल करद्रम जमन । क्रांत च्रांत (नक्षित्र ए क्रांत - लिकि !! (हमकारल शिल ब्रांको कंपरचंत्र खला। (क्रम सुन्द्र भूष्ट्रा देवज्ञाति वत्न ।) সেই ইকে বসি ছটি প্কি সুক সারী। পাঝি দেখি বিমোহিত রাজ্য অধিকারি।। मुक नत्ल (एथ माडी किया क्रम धाम। **(मरश्हिशू (मध् व्यात अहे (मथिलाम !!** তাঁতে এঁতে মিলন করায় যদি বিধি ! মিলনে শোভিবে ভাল ছুই ৰূপ নিধি।। রাজাবলে বল বল সুক কি বলিলে 🕽 कि (मर्थह (महे आद्र कहे कि प्रिवास)। क्रकरता महाताक करता अवधान। হেমাক নামেতে ভূপ সরোজেতে স্থান।। मदमाहिनी नाटम छात्र कमा थटवानिनी। कि कहिय कर्ण (यून कार्यात कार्मिनी ।)

### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ত কাঁব্য।

ভোমার এ কাপ রাজা সেই কাপে সীমা।
একপে জানিবে সেই কাপের মহিমা।।
রাজাবলে কেমন সে কাপ স্থক বল।
ভিজকবি কহে মনো হইল চঞ্চল!!

#### - MAN & MAN

#### ं भूक भवान।

#### बिशमी।

স্ক বলে মহাশয়, তার রূপ কথ্যনয়, (महे क्ल (महे क्ल्प' मीमा। রসালে মাজ্জিত অর্ণ, স্বর্ণ স্বর্ণ বর্ণ, छन्थानि त्रणीत्र व्यक्ति।। व्यक्तक मूर्य हैं। ए, किंद्रा छुछ छम है। ए, किवा नव घन (क्रम भामा। রঞ্জিত মলিকাফুলে, সদাকামি জনে ভুলে, मम्दा क्रम्दा डेल्गामा। किया भिक्र एन एन, भीद्र शास मीलार्थन, कूक्ट छ र मन यात्रधन्। অধর বন্ধ্ব ঘটা, সুধানীক হাত ছটা, शृष्ट्रकि न्दर्भमल क्यू ।। কামিরে করিতে নাশ, ধরেছে কামের ফ্রিন, ্ভুক্ষার এই পভিপ্রার। নিতম পীবর ভর, ক্রব কটি মনোহর, (रह्नू (माटल (थटल मन वाम।।

শুন শুন ওহে ভূপ, হেরিলে ভাহার ৰূপ. গোগী জনে লেগে যায় হন্দ।

বসন ভূষণ অঞ্চে চলে কত রঙ্গে ভকে.

গঞ্জনিন্দি গতি অতি মন্দ।।

रामन कलनी तरहे, लिमनि कलक धहे,

ভার যোগ্য ভূমি মহা**শর।** 

त्म हे कन्या (छाम। मिटल, (छामादक छाहारत मिटल मानिदक सूर्वर्थ छड़ा हत्र ॥

নতুবা পদের মেলা, যেন ভেক সঙ্গে খেলা, ভাবত নিজ্জল হয় ভূঞে।

আর দেখ হিরারত্ন, লোকে ভারে করে মতু. ভালে ধার পড়ি মেধ শৃক্ষে।

শুনিয়া সুকের বোল, রাজা হোলো উচরে ল. মন ভাতে হইল চঞ্ল।

কি মোহন কপ রাশি, পদিল অন্তরে আদি, ভূলিতে কি ভূলিল সকল।।

মরমে মরম লাগে, সেই রূপ হৃদে জাগে, রাজা ভাবে সকলি অসার!

কি কংশ পাইব ভারে, এমর্ম মুধাব কারে, দিক কবি ভাবিত লপার।৷

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

मनुद्धत्र वित्र वियागाः व्यक्षस्मक भन्नात । ष्यञ्चित रहेशा शृद्ध एटेलन मध्यथ । अमहोटक अमत्र माटक हटलन मनार्थ !! পাঠাইল তলবার বেড়ি রাজালর। मत्या प्रश्रदेश विष्क्रमीय विक्रियाकालय ।। লজা পেয়ে যুদ্ধ নাছি করে ভূপদং। কাম বলে বিরহ যন্ত্রণা ভূপদহ ৷৷-বিচ্ছেদ ভরক্ষে রাজা দিবানিশী ভাসে। পাৰ মিত্ৰ বাজবেতে তোষে মিউভাবে ৷৷ রাজা বলে স্থেছের ঘাইনু আরাম। স্থাম করিতে হত হইল স্থাম।। चना चना चनल विस्ति रह करला। विद्रक् विक्वानल कटल चाट्डा क्टल ॥ **क्वित्र भोख्ल मन्द्र मप्तिष्ठि।** মোর হাদে বক্তহানি করে সদাগতি !! একে হৃদাকুল অধিকন্ত পীকরবে।। ভাতে ভূঙ্গ রবে প্রাণ কি ব্রপেতে রবে।। ক্ষাকর কর পুটে বলি হীম কর! অগ্রিভুলা কর ভব মহে হীম কর।। नाना द्राप्त नाना धरन रहे जामि धनि! ख्यालि निर्धन च्यक्ति विना त्मरे धनी।। च्यं चलि हिल यात्र कृपि शय मला। विष्ण्य माण्यम अरव वल कत्रि मला।।

कामात कारमण दह ठकुतक दल।
क्थाठ कामारहाপद्ध काम कदत दल।।
गादधामं इछ श्वाग स्तूनभात भादत।
भादत धित कत्र माकि कृतभाद मदत।
य क्था कहिल कृत धना। (महे माती।।
य क्था कहिल कृत धना। (महे माती।।
य क्या कामा दात कामा।
य क्या कमल श्वात कामा (मात दिम।।
य म्यू विहीदन मदन मन लाश विष।।
काङक स्थान किय। इति कात कथ।
क्या भाद क्या किय। इति कात कथ।

मत्याहिमीत विद्रह ७ वम् वर्गमा

#### শ্যার ৷

### সভীত চিত্ৰভাত্ম কাবা।

বসস্ত ভূপতি বুঝি হোলো বনোভূমে। ারে ধরে ছেমছত্র কেশর কুসুমে।। ফরিছে শিরীয় পুষ্প চামর বাজন। হেরিতে বাাকুল **হোলো কামিনীর** মন। ফ্ল হয়ে নিশীগন্ধা উড়ার পতকা। विक्ध मलिका कर्ण मलक्किं त्रोका।। বিরহিণী বিনাশেতে মলিকার কলি। े कपुथी कमल विमल (भाउन करता मात्रत मदक तदक व्यानटक विरुद्ध ॥ ্রভরে জুলভর গোলাবের দল। व्हि अमदात मन करत हेल मल ।। এ মেগদে লবঙ্গ লভা ফুটেছে করুণ। ফামিনী করিতে নাশ কলপের ভূগ 11 মলেচী চল্পক চারু পলাশ কাঞ্চন। ক্রাভি যুথি ববা গন্ধরাল স্থাভন।। इक्ट्रा कड़की किरश्चक दक्कवक। अक्षूषिक कुक्किक (खाना कृष्टम्भक।। দোলন কন্তুর কিবা পিবস্তি পূর্ণাগ। বিরহিণী হাদয়েতে দংশে যেন নাগ ৷ मालभूलो त्यडेकि मून्यत्र मीलभूष। चारमाक चार्यमानिका वामक वक्तक।। স্গিকিছ গন্ধরাজ ওলাল পার্মণ। न्मत जानमदन कूटि क्रम वकूल ॥ 11 6 1 1 C

রামা বলে ফুলগণ কাম পারিবদ।
সকলে কি হোলে রত করিতে ত্রী বধা।
নকিব ফুকারে খন কোকিল ভ্রমর।
গলা বহু মদ্দ মন্দ গতি নির্ভর।।
সারী স্থক মুখে মুখে মদ্দ লালস।
স্থানে স্থানে পক্ষিণণ সুঞে কত রুদ।।
বদদ্ভের শোভা বুকে লাগে খন শূল।
ভিক্ত কবি কহে রামা হইল সাংকুল।।

--

ललीक क्षतम इस । कूरिन बाबा कून, कूजिन मनिक्न, कृषिल स्कूर्म भूदि। মান চধুপানে; সবলে মাতি গানে; मगर्ग सन् सन् संदेशी (भीत्रदेव खत्रा (मह, त्योत्रदेख मटक (कह, (बीवव चिन अकटि। दम्भी के इत्ल, अमि क्लिप्स दत्ल, क्रममि घडेटम लम्माटे ॥ ब्रधुल खन खन, जनुल कर खन, লোলুপ ভূমি হে নিভান্ত। वर्ताक मधु त्थरम, मत्नाक श्वन त्रारतः नद्रारंक डाक्टि स्वास्ता। अबदत अब शोक, अत्मरक करका विक, ्तिभूग कृति (क् अ त्रत्म।

## সতীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

ফ্রারে ভার আর, কর্মারে ভ্রমরার,
ট্রারে কোদও অনজে।
আলিরে শুন বলি, ঢালিছে বিষ অলি,
জালিছে কোকিল ক্ষাও।
কিলিয় মনোনীজ, জ্বায় সরোনীজ,
দহর ভাবিরা সে স্থাও।
কিসেতে বাচে বালা, বিষেতে দেহ জালা,
রিষেতে বসস্ত অরীফা।
কহিছে কামবল, বহিছে অঞ্জল,
কহিছে বিজ কবি মিফা।

#### পরার !

কামিনী কাতরা অতি পৈরে কামছালা।

মূল গলো অধিকন্ত দহে নূপবালা।।

হান হে ভ্যালতক শুন হে অশোক।

ভোমা সবাকার মূলে মিফা হয় লোক।।

অভাগিনী হেরি সবে হোলে প্রতিকুল।

দল শুেণী রভস পারক পরি ভুল।।

রসাল মুকুল ভুমি বরিষ আগুণ।

কাম নূপ ছত্ত দণ্ড বকুল প্রস্তুন।।

কেশর ভাষাতে ছত্ত কামিনীর কাল।

হোরেছ মদনাশন অরবিদ্যা জালা।

ধোরেছ কামের কেশ ভুমি হে শিরীশ।

এই হেত অবলারে দহ ভাইনিশ।।

বুকিনু চল্পক কলি ভর অভিপ্রায়। অন্ত অঙ্গুলি হোয়ে বিনাশ আমার!! খরতর সার নথ ভুমি ছে কিংশুক। विषातिक विविधिनी कामिनीत वुका। मन्न दगनाकृष्ठि कृटखब्र विकाम ! কেতকী হইয়া দন্ত মোরে কর প্রামা। खन निवाद्या यवा खन एक वक्का কানের অধর হোছে প্রসারিছ ছ্বাঃ শুন হে করুণ ভূমি বড় নিদারুণ। रानिए इस् स्नवाग (हास कांबजुन ।। (शदह उजनीतकः कारमत निनान। बारे (रेजू निभी निया नह सात व्याव।। ন''প্ৰ লিখন ভূমি ৰাংগখনকটে। পেই ভাবে অংশ মোর লাগে কালকুট।। नकरन विशक्ष कि रह इहेरल आमात्र। षिक कवि कटर कटन उ।किटन काहास।।

जिभनी।

কলপ কটক যত, করিছে কামিনী হত, অধিকন্ত মলয়া সমীর। গল্পাযুক্ত স্লিফা গভি, দেহে লাগি কণ্বতী, কামলুরে হইল অধির।। রামা বলে গল্পাবহ, কি হেতু আমারে দহ,

### সভীৰ চিত্ৰভাত কাব্য।

নাহি মোর প্রাণনাথ, সদা হান ব্জাঘাত, रहेटल कि कुछा ख आमात्र।। मलका भीधद्व ब्रदक, शांकर पूकक नदक, ভূমি বহি বহিস্থা বায়ু। এঁহ ধর্ম চাই রাখা, হোয়ে বিধানল মাথা, বিদাপ করিছ খের আয়ু 11 ালন হে মক্রথজ, ক্ষম অতিক অক্ল, ধরি আমি তুজনার পায়! कामिनी कतिरत दभ, वल शादव कि मण्लान, हिरम रेकल हिन माहि छात्र।। শ্রুম ওকে বুভির্জি, ভাজহ সমর সাজ, আ'মি বালা পতি বিৰা শব। ्मथ कव देवड़ी नहीं, आमादत इट्टल अही, বল দেখি পাবে কি বিভব!! শুন ওছে হীমকর, ভোমাল্ল কীরণ খর, হীমকর কে বলে ভোমায়। छ। (इर्टल अमन क्मन, लाट्य पर्यानल हम, नित्वधि अरु भारत गात ।। चुशाक्त खत बाम, निखास व्यामाटत दाम, (मर्थ (मात्र चटन कामामल। এইতো তোখার কার, ভাতে ভূমি দ্বিল্রায়, युष्ट नित्रा केत्रिष्ट व्यवना।

खनरंशा मखार्श नथी, त्य मिक यथन निश्,

कवि करह इल घर, छव यस्त मिरव वह, तहें पित क्लिंग हरव व्यखा।

---

শার্চি বিক্রীভিত হন।

বে গুণমণি, বিহীনে ধনী। হাদরে দংশিছে বিদ্যেদ কণী।
স্থীকে বলে, পদ না চলে। বিরহ হাজাসে শ্রীর টলে।
পথিরা স্লেছে, আনিয়া গেছে। চন্দন মাথার ভাছার দেছে।
আহনা জানি, উপক আনি। ধৌত করাইল বদন খানি।
বিরহাগুণে, কামিনীখুনে। বাড়িছে ভাছাতে আঠারোগুণে।।
শুনলা আলী, কোধায় পালি। শরীরেতে দিলি গরল ঢালি
সঙ্গনী গুন, মদনাগুণ। মসোপরে ধরে স্কীব গুণ।
কৈছোলো মরি, ধরানা ধরি। ধরণা ধরণা ও সহচরী।।
স্থিরা ভাবে, ভার অভাবে। নিভান্ত ইছার জীবন যাবে।।
বলোক হবে, উপার ভবে। রাণীর নিকটে চললো সবে।।
কভেক জালা,সহিবে বালা। ভেবে ভেবে দেখ শরীর কালা।
উমাচরণ, চট ব্রাজাণ। রাণীকাছে কহে মিই বচন্।।

রাজ মহিনীর প্রতি স্থী গণের উকি। দীর্ঘ চতুস্পদী।

धनीत महम कानि, नशीशंश चनुमानि, यथाहिल ताकताशी, ख्यानत्व गाहेता। नित्तपत्त शूरेशांशी, खन मार्गा खन वाशी,

भव्याहिनी छेव कम्मा, काल छटन मान्या धन्या, काशत क्राथंत कना, नाकावित्न किंकू ला। তিনি যেই ধীরা মেয়ে, তবু এত ছঃখ পেয়ে, ব্দাছেন তোমারে চেয়ে, না রবেভো পীছু গো।। करेशा बलुकरीम, विद्रहिनी हिद्रमिन, ख्राव ख्राव **जन्कोन, अन्न अन करा ना**। म्ब्राम मत्रम (छप, काल करत्र कार्म हिप, कास्विन। अत्नाद्यम, याद्यानात्वा यूट्टमा।। যৌবনে যাতনা ষত, স্মরে করে প্রাণ হত, ্ত মারে কি কব কভ, ভুমি কি ভা জান না। জান আপনার বেলা, কেমন কামের খেলা; মেহেরে করছ ছেল', এবে বুঝি মান না !! শ্রনিয়া স্থীর বাণী, মৌন যুক মুখ খানি, लक्जारभरत दाकदानी, करह निता दाकादत। শুন দেখি মহারাজ, কেমন ভোমার কায়; কহিবারে পায় লাজ, কি কহিব ভোমারে !৷ এতবড় মেয়ে হয়, বল কার খরে রম, नः हरेल পরিনয়, বালা ভাসে ছুখেতে! मत्नाहिनी अर्नलका, रहेल योजन शका, ভবু ভার বিয়াকখা, নাহি আনে৷ মুখেতে ৷৷ कमाकाल विश्वक, रहेल अधर्माहुाक, পিতৃলোকে ক্রোধসুত, আর খেদামান হে! যদি হয় সুজ যোগ, কুলে ভুঞ্জে পাপরোগ, लिएदलादक अनद्भाग, क्रा प्रक शान (र ॥

# সভীয় চিত্ৰভাস্থ কাব্য।

कुक्रिका सुविवी पृष्टि, तूम्ह कः मां भित कारीम कि विलिव कारि, के श्रवृक्ति गाते (है। ক্রভুমি সুবিচার, যাতে হয় প্রভিকার, चित्र करि कट्ड आहे, महिट हला अपि ह

### मत्रमत्रा छत्माति,।

लघु बिन में।

खिन दानी सूटण, बाका महा छः एर वाहिरवर्ड मिलावाद। अाउ ए काहेम', जाते जानाहेश'; काबाइल ममाठात ॥

ক্রিণ লিখন, নিজ বিবরণ नग्रप्रदा मिदिस्मेट्य।

লইহা লিখন, খত ভাটগণ, চ.ল গেল নানা দেলে!!

अत्र यत्र द्रांडे, कलिक मिद्रांडे, मल्यूमी मिथलाश।

कविष् प्रम, भाखवा नश्य, महातरणा पृष्ठ साम्र ॥ दैक्टक्य (क्यूल, ठलिल मिर्ह्ल,

क्राक्व कामकाल। किंद्रांड कर्नाहै, जिल्ला नव छाँडे,

नम हार्ब जिल पुटल !!

### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

বিরাট পঞ্চাল, চলে দুত জাল,
জানায় কছোজে আসি ।
গয়ঃ অযোগ্যায়, আরিকাতে যায়,
মথুরা প্রয়াগ কাশী।।
কালীপুরে শেষ, করিল প্রবেস,
নরেক্র মনাথ যথা ।
মূপের লীখন করিয়া অর্পন,
জানায় সব বারতা।।
শুনি নরপতি, হর্ষিত মতি,
পুলকিজ হোলো অজা।
ভিনি করি কয়, চল রসময়,
মনোছঃথ হবে ভঙ্গা।

बन्द्रायंत्र मद्राय नगरः याका।

#### পরার !!

রাজাবলে কি কলিলে বল ওরে দুত।
শুনিতে শীতল মম হোল অস্ত তুত।
শাশার বাড়িল অক জুড়ালো জীবন।
করিব সরোজ পুরে তুরিত গমন।।
মনে মনে নুপতির পরম উলাস।
সম্বরে যাইতে হবে হেমাক সকাস।।
যদি মোরে সেই কন্যা মাল্য দান করে
পারে। শুর্গাধিক পুশ-পৃথিবী ভিতরে।।

এত ভাবি যুবরাজ আন আচরিয়া। मृष् मत्व देखे चात श्रिकृत्य चार्फिशा। গললাম কুতবাদ যুদ্ধি ছুই হাত। একান্ত ভাবেতে স্তুতি করে নরনাথা। एक करनाबि एक सकूनम एक मधू मृपंत ! किकदब कक्षण किছू करता विভन्न।। বাঞ্জা কংপভক্ত নাম দীন দরামর। अ अरम (यन किছू क्रशामृकि इत्र।। ক্মল। সেবিত তব চরণ ক্মল। च्छ दका रहकू लीला अगरह निमाल।। প্রহলাদে করিলে রাজা দৈতা করি হত। उक्न उनामनात श्रांत मत्नावर ॥ ডুমি নিতা নিরাকার আখা নিরঞ্ন। क्षाः कति कत् भग मः भाम खक्षा ।। क्ष्म करह खिंड यमि किन बद्रमाथ। हरेल अकाश वाशी खटन अक्सार।! **मञ्जू अमन् कर्द्धा वश्का मिकि हरव !** শুনিয়া মহাথ ভাসে পুলক অৰ্বে।। इति श्रमाधूटक कत्रि वस् व्यनिश्रह। গমৰ সাজন হুৱা করে কিভিনাথ।। আপনি, মন্ত্রা মধ্যে করিরা প্রেশ। वाहिता छेख्या वाकी लहेल नारतमा नाना श्रीतिष्ट्रिष करत पाश्रमात त्रका भाषा दश्ति म्यून भुद्राम्य भाव सक्का II

আন আরোহণ রাজা করে ত্রা করি।

শীহর জীহর কারি করিল শীহরি।।

অব্যের হেরিয়া বেগ ভারার ত্রাস।

ক্রেম গিয়া উত্তরিল সরোজ মিবাস।।

অবিপ্রাম গমনে মূপতি পরিপ্রাস্ত।

নিকটে উদ্যান এক দেখে নরকান্ত।।

বিরাম কারণে করে আরামে প্রবেশ।

রচিল উনাচরণ ভাবি হ্বিকেশ।।

#### छम्। व वर्गम

#### त्रगावलि इन्हा

ক্ষিতি তলে উজ্জল বিনোদ বিপীনং।
মন্মেরে মুনিজন মতি উদাদীনং।।
জাতি মুখি মলিকা মালতি কদবং।
ভমাল ভক্ন শ্রেণী ভাল পরিলয়ং।।
সন্মেরের সুন্দর শোভে চারি ভিতে।
সরোকর বিকশিত ভুবন মোদিতে।।
বছতি সমীরণ নানা ফুল গল্পং।
বর সুখ অজ্জনে গভি জভি মন্দং।।
শত শভ গান্তারী কভ দেবদারু।
বিকশিত চল্পক গোলাব সুচারু।।
নির্দল সলীলে কমল দল শোভা।।
মধুকর আবলী ভাতে মনো লোভা।

कल कल किंकिल खेरू खेरू खेड़िं। বুসুম সুশোভিত জম লছা পুঞ্জং!! नद्रशंददत्र की एक इश्निमी स्थम। **७**। इक कांत्रख्व मात्रस्त्र वश्मा। নুহাতি খঞ্জন শিখি শিখি ব্ৰিভা। স্কুক সহ সারিকা মতি ইর্ঘিতা : **डिझारम वक्षकि द्राक्त उभरवाणी।** সভত কামানলে দহত্ত বিয়োগী**া** কুটভি কুসুম চয় জ্বয়ত সেলং! मल्य ममीत्रा विशिक्ष किन्।। নরপতি মনাুথ ভরুতল বসতে। ক্লভাবে কুল উপহাদে হনতে।। অন্তর্গত রিপু নহি নহি দুরং: क्लिकि मलश बीटल मानम भूद्रः।। इक्टि शिष्ठेमाठद्रग व्यवनार ! इमिलं मृद्यास्त्र द्रभावली इन्स्र ॥

নাথক নাথিকার পরস্পার দর্শন। পরার।।

छिन्। दिन छिलान इक देवल दान कूटल। वित्रदृष्ट्र करियां कूल देवटन छक्त मृदल।। धकारलट्ड महन्नाहिनी लंदा नदीशन। जिन्नालस श्रृकाहिकु कृतिल् श्रमनः।

#### मिंदि विकाशिक का

इरकत डंटलट्ड (इंद्रि मनीत छेपस ! हमकि ड स्टार्य धनी निक्नीदत क्या। একি একি ৰূপ স্থী কর নিরীক্ষণ। (पश्र शब्का हेंहा (पशिन खपन।। যে ৰূপ অন্তরে মোর জাগে নির্ব্ধ। हितिएक ७ क्षेत्र निक्कू थात्र निक नेनी। मयाथ इंकिकनार्त्र कति मत्रभन। ए নু হোলো পুলকিত গেল অফি মন।। कत्य कुनुमाकात भीव्रतिष्ट चनु। लियिटक प्रिचिटक कारक वाटक मरनाजन् ॥ कारण द्वित कामिनीत मन छेल छेल। ভগমগ ভনু রসভরে তল চল।। বিকর্ত্তন হেরি থেন স্থাবি কমলিনী। লখী হেরি যেন প্রফুলিত কুমদিনী। উভয়ের কপে মহা উভয়ের মন। भवन्भव (अमर्फार्य तहेन वस्त्रम्। **উভয়ের সক্তেত বিবাহ এই স্থানে।** क्रे कर कारन माज भरना नाहि कारन 11 পরস্পার মলোমালা বদল হইল। (मथा (मिश्र इष्ट्रेंट अकिट्ड अकि निल्।। मत्रम वनन शत्रुक्शत शतिशान। कामरणव व्यापनिष्ट करत्र क्यो, मान।। **७३ कारण कृहेकास हहेल (माहिक)** णिवश्रुका करत जामा (हारते <u>श्रुक हिका।</u>

পূজা সাক করি ভবে যাম বীরে ধীরে।

যায় যায় নাথ পানে চায় কিরে কিরে।

শরে বন্ধ কুর কিনী দেখে যেই মত।
ভদ্রপ রামার চক্ষ নিমেব নিহত।।

চলিতে না চলে পদ গদ গদ কায়া।
বলে ফলে হবোলো উহার আমি জায়া।
প্রাণ লাম প্রান দেহ লবে ধনী যায়।
বাচল উমাচরণ মিন্ট রচনার।।

#### ---

### मत्यारिनीत रेकावती।

#### श्याद्य ।

তথাতে হেন্দ নূপ করে আরেছন।
কররে অপূর্ক সভা বিবাহ কারণ।।
কল বল্প কলিকাদি যত রাজাগণ।
কলে ক্রেমে সকলেতে দিল দর্শন।।
চেনকালে আইলা মল্লথ মৈতিমান।
হৈরিয়া আপেনি রাজা করয়ে স্মান।।
সিংহাসনে বসিল মুবক কিতিপাল।
বকের সভার যেন শোভিল ময়াল।।
হেমাক সভার ভূপ হেন শোভা করে।
কপের ছটাতে যোর অক্তকার হরে।।
মনে ভাবে রাজালা বুবিশান তথা।।

অই পারে বর্মালা বুবিশান তথা।।

# সভাৰ চিত্ৰভাৰ্ম কাব্য।

अभारत रहमाञ्च भूको कतिता मूर्यभाः मंखा मार्चा क्षेत्रवं क्रिल श्राट्या ।। मिनिय्थी मधी निल कुष्ट्रसूत्र मोला । সভা মধ্যে সৌদামিনী সহ ভূপবালা 🗓 क्ना रहित नर्स करन हरला हम्किछ। হেরিতে হেরিতে হলে। নমন স্থকিত। त्राकाशन अधिमूर्ध कना उननेह। नथी পরিচয় দেয় কনার বিদিছ।। পদ্মিনীর মন কি ভ্রমর বিনা চারা ঘৰ বিনা চাতকিনী আন্যে নাকি ধারাঃ সকল ভূপতিগণ অভি ছুংখে ভাসে। नथी लाम (भल काद्र मगायंत्र भारम।। ন্যরামণ সমিধানে লক্ষ্মী পান শোভা। রভিপতি হেরিয়া রতির মন লোভা ৷৷ দরিজ হেরিয়া যেন বছ প্রাপ্য ধন ! বারি হেরি ধার যেন পিপাশিত জন। त्रहे कल निष्य मार्थ रहतिशा कामिनी। পুলকে কম্পিত কারা যেমন দামিনী :। करत बिन्ना कुलभाना महा क् जू राने। धमान क्रिल व्यमाना व्यभटन।। व्यथम्दर्थ त्राकाश्मे (शदत व्यथमान। पिक क्षि कटर मद्य क्षिल अश्राम्।।

थाटच क्रिकांकि श्रेपान। প্রার 1

महा सूर्य मनार्थात निमा वन्नमाला। গমন ক্রিল ভবে নুপতির বালা।। मन्यर्थ भारतहरू गमि कबा। स्वयंत्रा । विवाद केंद्रनाटक करव ब्राक्ता किन युद्रा ।! खाकिन कः विकृप रुना वद्रपाटक। किना हिट्छ। निट्ड छेस्टरह शादक।। হরিজা ও ভৈল লয়ে কুলাভনাগণ। वाक करक माथाहरक क्रिन शमन॥ বলের হেরিয়া কপ নারীগণ যত 1 नक्षाम्या ब्रट्स नत्व वृद्धि कारम स्छ।। ৬.ব ডালেশ ভারু মাবিল। নারিকো। . न ६ हेश दे**टर एन 6ज भू**खनिका ॥ य आक्ष रथन श्रीत शिक्त लाउन। ा माधा त्म अन देश्य इन्ट्रेटव स्माइन।। धन्द्रभव बदन मच व्रमी व्यवहा। হস্ত হৈত্তে গেলে পোতে ছবিলো কটবা।। कारता कत रेक्ट (भारक शिन रेडलवाडी। अमानरम चरम कारता श्रीतरधन्न माणा।। कारह थाका त्रारला कांत्र माथारव कि कारक। छेथलिका भएषः स्थः कारमत कतरणा मत्नाक्टर्वामत्नरक क्लिन्नी मध्रुर्थ। मुनादक रित्रा इत्य किया हामानगा

# সভীয় চিট্ৰভাস্থ কাৰ্য।

প্রদিন প্রভাতেতে উঠে নরপতি। অবিবাসে আহমাজন করে শীত্রগতি।। রাজার মহিষী ভবে কন্যারে সাজায়। হেরিয়া মোহন বেশ কাম মোহ যায়। বিচিত্র বসন আর নান। অল্কার। অলমল করে খেন ভড়িভ পাকার।। स्थकाहाति (काट्य त्राका वटन नान्नियूट्ये। প্রক্রিলা গণেশ গৌরী কেশবে কৌভুকে।। বোড়শ মাভুকা বতী মার্কণ্ডে অচিলা। কন্যভালে ছেঁ। মাইল। মহি গন্ধ শীলা।। थाना फुर्का कल भूको शांत्रहना निधा निखिक निन्मृत भन्ध आत्र नदकीयिथ।। সিকার্থ কজ্জল আর রজত কাঞ্চন। যুত্ বীপ পূর্ণ পার চামর দর্পণ।। র্ভিপ্রাজ করে রাজা হোমে আনন্দিত। পূজে পিতৃলোক গণ বৈধির বিহিত।। করেতে বাহ্মিল স্থত। যেমত বিধান। আংরোপি কদলীতরু করাইলা স্নান।। একপে কন্যার কৈলা গল্ধাদি বাসন। **एटणिक रहत्रत**ित्रम नमाभ्या। গোধুলি ছুইল লগ্ন সৰ্ব্ব দেখি ছীৰ ৷ णाशमन देकता यत सूदक निवत।। प्ति शृंखि भूमक एवन काष्ट्रा**न**् काष्ट्रा वाजिए ब्राम्स्टिकी कशिकाव वंशी।।

व्हत्त्व वनात्र द्वाका महल्टकाशद्र। द्रिक्त डिमाहद्रग नाद्रमा क्रिक्त ॥

लानि छार्व वर्गनाः

लयु जिनमी।

কুল পুরোহিত, বিধির বিহিত, भीरिशाशस्त्र वमारेला । वद्यद्य दद्रगः कृद्रिया द्राज्ञन, रज पालत्व (निला ॥ বলে পুরেংহিত; হরহ তুরিত, खी आहादत्र याह लदत् । বেন মহাশয়, বিলয় নাহয়, लध्नार्ह यात्र वटत्र ।। ভবে মহারাজ, নিজ পুর মাক, लहेशा किल्ल वरता (मिश्र भहीशाल, शांकिश्र मांडात्त. नाबीहा लाकन करब्र ॥ (इमकादि इंडि, सूर्ण काद मार्थ, ুৱাণী সঙ্গে কভ বালা। अक्रांत्र हेल, जालिया विश्वल, क्ष्या यत्र जाना ॥ तामतानी ब्रद्भ, बाद्रीशन नद्भ, बद्र खद्र जानमिछ।

### সভীত্ব চিত্ৰভাষ্ট্ৰ কাব্য :

ক্মা**এরে আ**নিয়া, উলু উলু দিয়া, করে যথা বিধি নীত ।। ছাউনি নাড়িয়া, উভরে ক্রিয়া, উভরের মনটলো।

ন্ত্রী আচার পরে, বাছিরেতে বরে, বন্ধুগণে লয়ে চলে।। কন্যারত্ব থানি, সভামাবে আনি,

द्राका कदद मन्भूमान।

क्ष क्ष त्रव, यहा यरहा क्षत्र व्याप कार्य।

প্রদক্ষিণ পরে, দৃষ্টি পরস্পরে,

वनल कदिल भाला।

শুর বাদানাদে, ভিজে এন্থিন। বরসহ বর বালা।

করে ধরি পুঁথি, করে লাজাছভি, বিধান প্রমাণে সব।

শত শত ঢোল, মন্দিরা মাদেলে । শিস্পাবেণু শংখরব।।

छेलू छेलू फिस्रा, वज्र कना निका, वामद्र बमास तानी।

জিউমাচরণ, ভাবি নারামণ, বলে মধুর্স বাণী।।

### শতীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য 1

নত্পতীর স্বলেশে গমন। প্রার।

প্রম আ্মান্সে হোলে৷ বিবাহ সম্পান। ष्ट्रिंश गफीत मृश शद्रमात्त षा ।। বাসরে ভূপতি সহ ভূপাল বালিকা। পরিহাস করে রামগেণ সুর্দিকা।৷ विदाह वाषत राधः श्रुत्थ महनाद्ये । विमात मार्श मचर्थ डेठिया श्रकारक।। রালার রমণী ভবে কনা। কোলে করি। গদ গদ ভাবে কহে ভার থুঁতি ধরি।। মালতে মোহিতা রাণী শোকাকুল দেহ। খ্ভাবত জানে সবে জ্পভার সেহ !! বংর দিলা থেইতুক করিয়া পুরক্ষার। भागः तपः दथ इस्ड वद्धा कनकात्र।। শত্র শাশুড়ী পদে করি প্রণিপাত। शास्त्र ि भी अध् छलिएसम नव्रमाथ ।। चाटक कर्रवण्य (ए।ल (शाल चंद्रकाल । कंश्ना मन्द्रिः। वीम (वर् भूद्रमाल।। আগে আগে নহবত বাকিছে টিকারা। মধুরি বল্লকি শস্থা দোধরি দোভার:!! মধুর সংগীত কেই গায় কাছে কাছে। ममालटम बद्ध । अध्य वातायमा मारह ।। ভুরিভ গমন কৈল বিদায় সহয়া। ्निक्शुरत नत्रविक छेखतिन शिवा।।

# সভাৰ চিত্ৰভাৰ কাৰা।

পুরক্ষম সকলেতে আন দিত হয়।
বরণ করিয়া বর কনা। ঘরে লয়।।
নিয়মিত কুলাচার কর্ম যক ছিল।
এয়োগণ ভাহা সব সম্পূর্ণ করিল।।
ভলাতি বক্ষু স্করেতে পায় মহাহলাদ।
ধানা দুর্লা। শিরে দিয়ে করে আশীর্বাদ।।
বরকনা। হেরি করে নহন সফল।
বলে কি শোভিল এ ইন্তাণী আখণ্ডল।।
পুরক্ষম সকলেতে পাইল উৎসাহ।
থিক কবি কহে হোলো বিবাহ মির্কাহ।।

#### -9.3.

मदमाहिनीत कृतमधी। ७ दामत वर्गन ।

#### তিপদী ৷

ব্লশব্যা পরদিবী, রাজার উৎসাহ কিবা, বলে নিশী যায় কভক্ষণে।

ভাবে প্ৰিনীর নুধু, কতক্ষণে পাবে মগু, নিজানাই ভাবে ভাই মনে ॥ ছদও থাকিতে রাজ্য, নৃপতি তুলিয়া গাত,

ञ्चागर्ग कर्त्रन म काना।

পুরীর মার্জনা করে, কেছ যায় কার্য্যান্তরে কেছ থাকে নুপতির ভাগায়

मात्रीशन कुणुक्दल, कन्गादत माकारक हत्त. जूनगोत नामा जन्म न्या

# সভীষ চিত্ৰভান্থ কাবা।

কিবা সে ৰূপের ছাঁদ, যেন যোলকলা টাদ ি নেহারে নমন স্থির হরে !!

स्विक रेडल मिश्रः, मिल क्या चौठिष्त्रः, वाश्विदत्र कवती मत्नाश्त्र।

मिल भारतात्र त्याचा, स्ट्रिस्ट मध्य त्याचा, भिरा भारत निमृत स्मत्रः।

বিচিত্র ছুকুল অঙ্গে, পরাইয়া মনোরজে, পরাইল নানা অভরণ।

ভূষাভূষা ৰূপ যার, ভূষণে কি করে তার, সাধনত দিল নারীগণ।৷

জ্বরেডে মণিহার, অপরপ শোভা তার, যেন মেরু শৃঙ্গে তরশিণী।

বলমল কর্ণকুল, আলো করে কর্ণমূল, রবি ছবি ধরিল রঙ্গিনী।।

নাসতো নোলক দোলে, যেন ভারা শশীকোলে বিভি পাতি ভারার প্রকাশ :

একে রক্তাবর ভাগ, ভাতে তাছুলের দাগ, পুরাইতে পতির প্রয়াম।

রতন কক্ষন করে, দামিনীর প্রভাগরে, শোভিছে বলরা পৈছে ভায়।

ভূকে ভূক বন্দ রড়ে, বাজুবন্দ অভি যড়ে, নবরত্ব তাতে শোভাপার।

নিভখেতে চল্লার, কিবা কর দে বাহার, এসিকের রুসে <u>মনু হরে।</u>

### ৰভাষাতত্ত্তীয় কাৰা

নারা অভরণ পার, বিশ ব্য করে ভার।
উদর করিতে পঞ্পরে।।
একেভো কপের শেষ, ভাহাতে করিল বেশ।
হেম বন্ধ যেন করি রদ।
হেরি রাজা হুদোলাশে, আনন্দ সাগরে ভাসে,
কহে ভিজ কবি গদ গদ।।

#### প্রার।

मामा ब्रटक मधीशन करत शादशास्त्रमा कुक्तम कर्खुति हुमा व्यथक हन्मन ॥ জুলময় শ্যা থানি প্রয়ন্ত উপর। ভার চারি ভিতে দিল ফুলের ঝালর। ফুলের মশারি ভবি ফুলে উপাধান। কুলের চামর কিবা রচে বিদামান।। नाना कुरल जलकात तिहा विरमव। कामिनीत कत्राहेता जिले कुल (वर्षा। थाला ভরি রাথে কুসুমের माला गाँथि। অশ্ৰীয় সামগ্ৰী ব্ৰাখিল নাৰা জাতি ৷৷ ইকু শসা রম্ভা ভাব নারিকেল জল ! পাকাজাম রসালু কেন্তুর পাণিফল ।। জয়ির পেরারা পেঁপে <mark>আভা স্মধু</mark>র 1 आभाकृति नश्काद्ध भूश्वत अकृत ॥ নাধন মিছিরি মেওয়া দধি কীর ভালা। चन एक का होत्र न जात न जात होता ।।

ছানা কুটি ছানা পানা আর ভার পিঠা। अपूर किनिया अध्यापन यात निकाश नःसंभा दामामङ्क्षि आहं कौतभूली। বরফি কীরের গোলা রা**বে কত গুলি।।** মঞ মুগু ছালা বড়া চিনি রস ভরা। वाटथ महनाह्ता तम खूरन महनाहता।। রাবেথ কাংনি গলা মলাদারি পানিতোরা ! গ্রম পাপড় ভালা লুচি মালপোগা।। কিস্মিস্ বাদামাদি মেওয়া বাটি পুরি। মগদ মোহনভোগ খাস্তার কে চুরি ৷৷ চৰ্কা চোষা লেহা পেয় আদি বাদা বতা দ্বৰ্পাত্ৰ পুত্ৰি সধী রাথে মনোমভ।। মনোহর খিলি বামাইয়া সহচরী। वः तथ माजारेमा कनत्वत वाहा अति। शांशिल कामानि थना छवाक ब्रोड़न। क किल्ल अला लक्ष करेंगी क्रपूत्र ॥ পাতরিয়া চুন কৈয়া খ্দিরাদি করি ৷ ' नर्स खवा अञ्चल कतिन नक्हती।। এই बाल नशीशन देकल आह्याना चिक कवि कर्ड (शालाः मिना जाशमन।।

नय्-जिभगे। ভाষিতে त्राक्ति, द्राव क्षकर्ण, समाग्र यासिनात्।

#### পভীষ চিত্ৰভক্তি কবি।।

হু দি নভে শশী, পাইব প্রের্মী, छेथलिद्य व्यमनीत्र ॥ धमन ममत्र, निभीत्र डेपत्र, রবি পেল। অন্ত গিরি। कुशून श्रकारम, काशिनीत शारम, রাজা চলে ধিরি ধিরি।। यक मिश्रिश, चामिया छथन, चुरशदत स्मवनं करवा। চামর বাজন, করে কোনো জন, (क्र कार्य नमान्द्रा। चिद्धामक वानि, ठत्रन छश्पनि, কাল্ন করায় কেহা भूग भणवृष्ट , आनि मलवृष्ट , माथात कतिता (अह।। माभितः मिन्नो, त्थाम कत्रक्रिमो, বৰাইল ভার বালে। (धन कामित्रनी, माधा भोनामिनी, শোভাইল রাধা ভাচেম্য সহচরা ভার, চামর তুলায়, व्राप्त करक् व्रमञायः। त्कर कदत्र ठाउँ, नाशतीत नाडे, কেছ করে পরিহাস !! भी अ ध्रष्टिं, शुलिश (यामिटें। . चटल (मर्थ (मर्थ ग्रूथ) .

#### विक कवि कन्न, नव नथित्र, ध कटम करत्र कोवुक।।

-01010-

विशादाम्याग ।

#### मालकी इना।

কামের সমীপো কি রভিকে গেল রাথির।। ভাড়িপাতে সবিগণ বাহিয়েতে থাকিয়।। কাছে কান্তা কেরি ভূপ কামাশক হইল। वमन दूबन कब्रि त्कारल जूल लहेल ।। প্রকির স্পর্যে ধনী ধর ধর কাঁপিছে। लाएक गण क्यांनन चन वान वालिएइ।! চির বিঃহিছ ভূপ বলে একি প্রেরসী। क्लिटक कि प्रभुष्तादम लाक करत्र मात्रमी।। বত বা স**িব জার দহে কুলবাণেতে।** नदस्या मदस्यः वाद्य मदस्यात्मा आत्रिकः। বিগলিত করে রাজা ছাদয়ের ছুকুলো। করে ধরে যুগল উন্নছ কুচ মুকুলে।। খুলকে পূর্বিভ হোয়ে ভবে নব নায়িকা। প্ৰভিপ্ৰতি কহে কথা গভিপ্ৰীতি দায়িকা।৷ কি কর কি কর নাথ এছ ব্যস্ত কেনেছে। শাসরি কি করে। ঠাট ছাড় ছাড় বেনেছে! निमम् क्मम् कर क्या कर नाशिक **অতি তাপে কৃদি মাকে তুখাসুর জা**গিছে:

### সতীত্ব চিত্ৰভান্ম কাব্য।

কান্তা প্রবেধিয়া তবে করে কান্তা বল্ল ।
শুভ হেতু কুচকুত্তে দিল কর পলবা।
ক্রাণাথা তোমার অতি স্বমঙ্গল কারণ।
হোরেছে যৌবন তব কন্দর্পের বারণ।।
মদনের আগমন হবে আশু তরলো।
উন্নত্ম রন্তা তরু আরোপণ করলো।।
প্রিবাক্য শুনি ধনী মৃছ্ মৃত্ হাসিয়া।
পুলক অন্বৈ তনু ভরি যায় আসিয়া।।
উন্নত করিলে পান কুরাইবে মধুহে।
ভূরিতে করিলে পান কুরাইবে মধুহে।।
অনলের মুখেতে কি মৃত্থাকে কঠিন।
মধুকর ছাড়ে নাকি কুলতর নলিন।।
কণায় কথায় রভিরসে লোকে মজিল।
ক্রিটিমাচরণ চ্ট এই কপে র্চিল।।

প্রকাবলী হল।

একাবলী হল।

রমণ কথন সে কথা নয়।

রসিকামুরোধে কহিছে হয়।।

রুম বুরা বুরা ভাবক ভুলো।

দৌহার বিহার প্রক্ষেত্রপো!।

বিধু কমলিনী একই ঠাই।

বিপরীত রীত বিরাগা নাই।।

# ' সভীষ চিত্ৰভাস্থ কাব্য।

मद्राष्ट्र छेलद्र चेक्षम मारह। **ठ**रकांत्र পড़िल है। स्मित्र में एक !! हुयक शायार्थ विभाग ताथि। চুत्रिक लांत्लटक श्रीवाल बाकि॥ कण्यक्रमप्त कार्यरम क्रामा। উভয় বিরুতে উভয়ে বাঁধা।। ধরেছে ভাহাতে চতুর দল ৷ স্থের কুসুম রভির ফল।। मणन श्रद्धाः ऋचित नग्न। मम्ड किल्ला ड विजेशी खन्न।। मघटन एक्लएस (थलएस त्रासः। কৰু বা পলৰ মুকুলে ধায়।। प्यान्त्रक्षा दि तम्ब तम कस्वदत्र । শ্ব ব্যক্ত আধার শক্তি ধরে।। **ब्राध्य इंडिमद्राल ख्**रा **उ**ट्या डाक्टिइ क्यांक्लिया। जलित ककात मच्टन कछ। ভাবণে করিল ভাবণ হড 🛚 व्यक्त भवन याहेल पूत्र। कत्लब्र भोबर स्ट्रेन हुत्।। **अ**डिमाठ्यन तिल रेश। कथानि मिंशित ना श्रुत न्श्रा।

# সভীষ চিত্ৰ ভানু কাৰা।

প্রার । প্রার ।

রতিখ্রান্তে নরপতি বারি দিলা মুখে। कन्भावि डेभट्डान थारेत्व स्थ। প্রেরসীর সহকারে ভাষুল ভক্ষ। স্থ জনে সুজনে মেলা অভি সুলকা।। বদন হেরিয়া ভূপ রতি অনুরাগে। কামিনীকে বৃদাইল নিজ কোল ভাগে।! शक्तिश्री व्यवक द्रारत गरन गर् पूर्व। হাক্ত পরিহাস কভ কহিব কৌভুক।। কামরূপে মাভিয়া কামিনী রুসাধান। পতিথতি করে চুম্ব জালিক্সন দান ৷৷ বিরহ্ সস্তাপে দোঁহে জ্বালাছন ছিল! প্রেম সরোবরে এবে আরদে ভুবিল।। রভিৰপ পক্ষ হইল ফুলভর। মধুপাৰে মাভিল মদন মধুকর ৷৷ मूर्य हरमावली छाट्य स्थय की छा करता गूवक यूवजी लिंदि आनटम विवृद्ध ।। কামের কৌতুকে কামিনীরে করি কোলে। রভিরকে নিশি সাক রাজা অক ভোলে: প্রাভঃরুত্য সাঞ্চ করি নিজ কাথে যার। পাত্র মিত্র আদি সবে আইল সভার।৷ ताककारय (भेन मिया नगागंड निगी। अया श्रेष विविधित्र शाहरत महियो।।

कष्करं बार्धं इहेर्द जार्गमन ।

ताथिल ध्वकृति किन्ने युगल बरमा।

रमकारल পण्डि जानि जुनिरू मिनिला।

भौरन धन मौन रयन मार्गदि शिलिला।

विकास रक्षा निली मनन जार्दरा।

विर्ण्डमानि कूलद्या शिल मूनरम्भा।

जामान्न कन्निम मानन हेल्मला।

ध्वामान्य कन्निम मानन हेल्मला।

रश्मानरम कन्निम मानन हेल्मला।

ध्वामानरम बहे कर्म मन्त्राण जानिला।

द्विष्ठमानरम बहे कर्म मन्त्राण जानिला।

#### 

র'লার ও রাণীর কানন বিহার এবং রাজার প্রতি রক্ষাণ ও জ্বানাণের প্রতি রাণীর শাপ ।

#### পয়ার ।।

रशा याल खन ज्यानित्र व नक्ता गण्या घणिल याचा जात विदेशन । याचे कार्य कि हुकाल नागरी नागरत । यानरमाध श्रीत ज्यास स्रथंत्र मागरत ।। धक किन मरन् हिनी मन् थिरत दरल । देखा इस खिनदारत कानन मखरल ।। रश्य स्राह्म खन्याद कानन मखरल ।। दश्य स्राह्म विद्यादिक कुर्मन निज्य ।।

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

প্রের্সীর মনোসাধ পুরাতে নরেশ। वरन थित्र करव आकि कत्र मूर्वन ।। পভির আদেশে गडी अयुद्ध इहेन। प्रताकति मरमारलाचा मुमञ्जा कतिन।। একেছ নবীনা ভাছে ৰূপে সৌদানিনা ५ कि मद्भ हत्ल इद्भ (यन भाक्षिणी।। चिम्रिक समिरक मृश श्रिशमीत मरन। छिन नेष इहेलन এक छरनावरन।। কুষ্ম কানন সেই অতি মনোহর। নানা জাতি ফল ফুলে শে।ভিত স্থুনর ।। গেলাব চামিলী জাতি চল্পার টগর ৷ भंडेकि ब्रक्रमीशका दक्त स्मारा। ২ছ মৃত্ বহিতেছে মলয়া প্ৰন। रमें बरख स्थाहिक क्रब मम्दाब मन !! তালে বসি পীক গণ ভাকে কুছরবে। बकाति खमत खरम कुष्म (मोतरक।। ভাষ্ার মাঝেতে গিরা নবিন রাজন। नात्री नटक तनत्रक कटत्रन तम्याः भूरथ भूरथ दूरक दूरक मन्या मन्या । विश्व करत्व क्षांट् माछित्रा मन्ति।। (भीलव बामा असि, संद्र (महे जान। প্রাতে উঠে গিয়াছিল। করিবারে আন।! **পूजा कर्णात्राक क**ढ़ि मिबा जनगाता। **छिनाइफ इहेरलन निक्र वान**िद्धारम ॥

मृद्र थाकि पिथि यशि मङ इरेगान। शक्क लिंड इरेशिन क्लांध इर्डाच्या ।! निष्वं वहान कन मन्द्रायंत्र थालि ! কে ভুই আমার স্থানে ওরেরে চুর্মতি। বৃদ্ধ কল নতো তেরি আপনার পাপে। মৃত কলেবর হবি মম অভিশাপে।। শুনিরা অব্নি পতি প্রমাদ গণিল ! মুনির চরণে আসি দম্পতি ধরিল।। विनरत नुश्कि छव करवन कैं। हादत । बिट्यं महिमा अष्टु कहिएड क् भारत।। প্ৰতিযুগে বিপ্ৰৰূপে থিকুর উদয়। দেবগণ হোতে ছিজগণ শ্রেষ্ঠ হয়।। শঙ্গার সমান ভীর্থ নাহি তিছুবনে। कूरवन्त्र जमाम स्पर नाहि (पर गर्या। रेनकरवटक मिवनस क ब्लाइ डेखम। স্কৃত্তে কেহ নাছি হয় প্রা সম্যা সভাের সমান ধর্ম নাহিক কোথার। লাহি কেহ পতিব্ৰতা জানকীর প্রায়।: रेमव नम दल माहि शुखं नम थिता গুরুর সমান পুরু কে আছে ভিডীয়।। নাহি কেহ বজা জেও আডার সমান। आक लिका तम बाहि मिल क्रुलावाम। একাদশী সম ব্ৰক্ত তপে অনশন। विमा थन नम् कुला सुरहि स्काटना थन ।।

### সতীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

(न हे क्य मूत्र नत्र चानि यक कन। বিভার সমান কেছ না হয় গণন।৷ বেদেতে বিধাতা ইহা করিলা প্রকাশঃ পৃথিবীতে সর্বজন ব্রাহ্মণের দাস ।। তে জন ব্ৰাহ্মণ গুৱু নয়নে দেখিয়া। ন্দকার না করেন সম্ভন করিয়া।। কাল মূত্র নরকেতে হয় ভারে বাস ৷ एक দিন চন্ত্ৰ সূৰ্য্য গগণে প্ৰকাশ ।। এ হেন বিপ্রের বাসে আমিকরি বাস। থেমন ভুজক গৃছে মণ্ডুকের বাস।। কাননে আসিয়া কছুনা করি বিহার। কৈ জানি কুবুদ্ধি আৰু হোলো দোহাকার।। শাস্ত্রাজ্য বচন কিছু না ভাবিয়া মনে। ·ক:ফিনীর সহ কেব **ভাইলাম বনে** 11 বিশেষ ভোমার বন কেমনে জানিক। काबित्न मर्लित यूर्थ कत किन मित।। কামে মন্ত হোরে ভ্রুজ্ঞান হারাইরা। কুকন্ম কোরেছি আঞ পিছু না ভাবিয়া।। তুমি জ্ঞানি ক্মাবান তপত্তি মহান্ত। কুপাকরি কুপাকর, ত্রোধে হও শাস্ত।। নৃপতির স্তবে ভুষ্ট হইর। ত্রাহ্মণ। মনে ভাবে সামান্য না হবে এইখন ৷৷ भानकति शति जानित्वन स्मित्र। अना (क्र नट्र मद्राटकत्र म्थ्रद्रा।

-ভথন হইয়া ৠয়ি খেদালিত অভি। निविद्य करितन महाताम टिडि: • प्यात्रीन द्राकाविद्राक क्यरन कानिय। काबित्न चाभना थिकि भाभ क्रिन पिता! রাণী বলে করি প্রভু দয়া বিভরণ। महाद्वारक माल देहरक क्यूह (माहन।। क्रिम अर्थारख्य श्रम अरक् प्रधानम् । ল্যুপাপে গুরু দণ্ড উচিত ভো নয়।। युनि वाल अस वाका ना श्रव लक्षन। কণ কলে মধ্যে রাজা হবেন পভন। us अनि मत्यादिनी कै। मिर्ड के। मिर्ड। उथिव भूमित्र अञ्चलाशिला कहिएछ।। का करत त्यमन निरम दिना (भारत भारत) ८४:वास गानित कामि ऐत्य नाहि भागाः বিভিত্তে উদাত জনে করিতে বিনাশ। शिख्टिकदता नाहि शाश नाद्य सुधकाम।। ম্ম শাপে বাকা লোপ ছউক ভোমার ৷ কার সাধ্য মম বাক্য খণ্ডিবারে আর 🔃 পুন কভু দিভেপারি পভির জীবন। **कर्दि बाकाक्कुर्कि कर इहेरद क्थ**न।। मडी माश खत्म सूमि खदाक श्हेशा। 🌸 চিস্তিভ অন্তরে গেল: কুট্রে চলিয়া 🕦 শাপে ব্লুক্ত হোতে ছপ জপ আরম্ভিলা। - mfarer mifsier !!

# মহারাজের যোগাবলস্বনে জীবন ভগ্না

याः भाग श्री मार्थ वाकन। ব**টচক্ৰ যোল মাড়ি ভেদি সেইক**ণ।। মূলাধার স্বাধিতান মনিপুর পরে। অনাহত বিশুক। আরু আছে নাম ধরে। **এडे व**ेहक त्यांत आफ् व्यदिशंग। একে একে কৃছি শিখ্য করু অবধান।। 🖮 🖓 समुग्रा (समा शिक्रलायेग 😎 नि । পর্মজ্ঞান প্রেদা আরে মনঃ সংযমনী।। বিশুদা বিৰুদ্ধা আর বায়ু সঞ্চারিণী। বুলি সঞ্জারিণী জ্ঞান জ্ঞান কারিণী।। (डम: ७क वल शृष्टिकति, व्याग शाहिगी ! त्रख् थान इदा शूनकी वन कार्तिगी।। এই ম্বাবিংশভি ভেদ করি শীভ্রগভি। मनः नह इश्म ख्रुचात्रस्य कृदि स्थि।। এই ৰূপ যোগ করি মুক্ত থাকিয়া। भारताइ व्यापन व्याचा मिन ममर्लिहा।। গলের ক্টিক মালা লইয়া করেছে। क् भि: क लागिल विद्यु नाम च काक्र (व र हा। পশ্চিম চরণ রাখি পুর্কদিকে শির। अक्टत मेडिया रुति छाजिल भवीत ।। कात्रिनीत जीहतून क्षम कमत्ना। পুणिता भूणक क्रिकेशहत्रव बरला।

# স্ভাষাচত্ৰ ভাস পাবা

#### क्रांगीत कामरम दिलाभ।

গ্ৰা

মলে।হিনী প্তির মৃত্যুক্সপ ব্জাঘাতে ভচেতন হট্যা ক্ষত্র ভূমিতলে পতিত হইলেন এবং পুনর্কার চৈতনা অ'ও হইয়া ম্মাথের মৃত দেহ কোছে নিবেশিত করিয়া উচ্ছৈত্রে ক্রন্দন করিছে লাগিলেনা হু! নাথ, কি হইল, ুমি কি আমাকে পরিত্যাপ করিলে, ছাদর এত দিনে িকি জানিতে পার নাই যে পুরুষের মন পাষাণ হইতেও क्टिन, भूकटवत चालाभद्र विटवहना नाहे, प्रशान हे रमठा নাই। প্রাণনাথ উঠ উঠ, আর নিরপরাধিনী কূল কামিনীকে ক্রেশিত বে'রেছে, একবার বিশাল নয়নে বীক্ষণ কর, হ্চলটোনী সংখ **হিনী পিচা মাতা প্রভৃতি** পরিভাগে করিল তে নার চরণে শারণ লইয়াছিল, একংণ শারণা-গ্রহাক পরিভাগ করিয়া ভোমার পলারন পর হত্যা एँ डिइ.सन. (४ महल क्षप्त इ**हेटक अधुरत छेटला हिंह इहेल, अक्टर** इक्ष्म सन्नी, देदभवा **राज्यश तन्त्रिकातः वितक** ल क्रिशिष्ट कंद्रराथ नश्मिष्ट श्रहेल. **धक्कर्य कीरम वि**कल, eाधमाधः अधिनीएक कि फार्य **शतिकाश कतिरल, बुद्धि** পুৰ্বেকার অপমান মান পড়িয়াছে ভজ্জনা এভক্ষণ ভিয়মান व्रक्तिष्ठ, श्रिमादियामं क्षण मान, क्ष इल, क्ष दल, क्ष एक्ष করিয়াছি ভাতার অভিফল প্রদানার্থ বুকি এ ভাষীনীকে क्का किमी कामन घर्षा तार्थिया ध्यक्त कतिरहार धारतमा অংমি ভোমার অধিনী, অভএব দাসীপ্রতি দয়া কোরে । अक्यांत्र भारकाश्यान क्या, हो, व्याग युल्लका कृषि व मानी रक

श्चनय दारकारक नर्नामां कृष्टिक य खामात नर्दिक कथन अ ति फून इक्ट्रिया, अक्टर्ग तम कथा क्यांथी कविशा कि:थाय शमन कतित्व, व्यानकान्छ, उ है। मस्त्य निवानिनि বলিতে যে, প্রেয়নি, "ভোমাকে জ্বরমন্দিরেস্থান দিয়াছি এ कथा यकाशि यथार्थ इष्टेख खरव आमात्र (मह कि कांत्रर्ग পতন इहेल नः, ककरा अधिनी दुखिएक नः दिल य नादीत নন এতারণা করিয়া সুলাইতে হার, হার, প্রিয়নাথ তোমার फंडिए कात अ करिनी सिविट्ड शाहेटवन, ब्रमगैत क टिन को वनत्क विक, अर्थन ७ कामात विकास व किस মাজি, ওরে পাপকারিণ্ প্রাণ এখনও প্রাণেশর সভাবে कामात (लटकटक त्रिक्शिक्ष, त्यामात जुला निर्लेखीटक! आह (कहरे न हे, এইक्षर्व श्रावशांख्य श्रम्हार अन्न कर्र, उद्ध हु । अत्वार्थरक हाद्राहेन्ना चात काहारक पूर्वन कदिएछह এই करन यूषिक इ। ७८ अन अथात किन्ता मधात्र-मान पाह, त्र शर्थ शाननाथ गमन कदिशाद्यन, (महेश्रां नामारक मौद्य लहेश हल, माथ छेठे छेठे धकवात नधी-नीव मित्क मृथिभाक कर, नाथ कविनोटक मना काटन একবার গাৰোত্থান কর, হে বনখাসী বিনিভিত পক্ষিগণ ভোমরা একবার অনুতাই করিয়া নাথকে গাতোপান क्रिटिंड चानूमिक क्रेन, (ए क्यार्तभार, क्रारम त्रक्रमी निक গাঢ় তিমীর ছারা শ্রমস্থালী ব্যাপিত করিছেছ, অদুরে পেচক কুলের শুমস্থান ও ছবিত চিৎকার ছারা এখন तन्गीत वन्यानीय यानामद् दिन्न हरेल्ट्र, त्रक पार्वक

শ্রেক পরা রাশী মুনীর শালু অদুরহিত গিরিগুহার প্রতি ধনিত হইতেছে এব্রিধ স্মরে কুলকামিনীকে বনমধ্যে অসহার রাখা কর্জবা নয় অতএব উঠ উঠ একবার অধি-নীকে দশন কর হা এক্ষণে কি উপায় অবলয়ন করি মনা শাস্ত হও বিপদ নমরে অভিরত। প্রকাশ করিও না শোকাবেগ সম্বরণ করত সুযুক্তি যুক্ত উপায়ের পন্তা কর, এক্ষণে শিবের শারণ লাও। ইহা কহিয়। মন্মোহিনী শিবের তথ্য করিছে লাগিলেন।।

भरमाहिनी कज्क मित खिछ।

(णार्क इन ।

নম শত সংরেশ সরাত কারী।

শালী অর্চ পাঁনাক বিশুল ধারী।।

তুমি বিশ্বনাধ প্রস্কু বিশ্বপতি।

থানি কিন্তরি হে তব গৌরিপতি।।

হব চিন্তিত হে নহি অনা জন।

গাল পরে তব মন ডীতু মন।।

হবে রুই কেন, হোরে তুই তর।

যোর শকটে শকর বাণ কর।।

বিশ্বনাত্ত শক্তক শকা হর।

স্বর বিশ্বর বলিত অংঘিররা।

তব বল্পন মন্তর মান্তবিরা।

তব বল্পন মন্তর মান্তবিরা

স্বর্গনির মান্তবির মান্তবিরা

স্বর্গনির মান্তবির মান্তবির মান্তবির স্বরা

স্বর্গনির মান্তবির মান্তবির মান্তবির স্বরা

স্বর্গনির মান্তবির স্বরা

স্বর্গনির মান্তবির মান্তবির মান্তবির স্বরা

স্বর্গনির মান্তবির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বর্গনির স্বরা

স্বর্গনির স

B. M

### अर्थ कार्याच कारान

कुला कल्लाडक जीम जल्ल नरह!
निज उट्ट किन वड निर्मन हर!
व अल्ला अनस्म ताथ हत्रत्।
कामाजिम नाहि जानि जनाजरम।।
कूक मानीरत किक्टिड क्लामान।
नरह भक्तत भक्ति यात अल्ला।
धात जालरम निलम त्रक उद!
हमाहत्र कक्रणांक्री क्रा।

রাণীর সহিত মজির সাক্ষাৎ এবং ওঁংহাকে রাজ্য ভার দেওয়াঃ

#### **\*\*\*\*\*** 1

परे नात्म में कार्य निर्देश खर्म।

(इनकारम भूक निर्देश खर्म।

कूक् ने कारकाछ करत कमत्रव बनि।

मार्थित वित्राह हात हाता करत बनी।।

पर्वारमण तास्माल महिमीत महन।

विहाताच निर्देश निर्देश कार्य।।

पर्वारमण निर्देश निर्देश कार्य।।

प्राप्ता हरमानी दक्त भूमताश्मम ।

वृत्रिया हरमानी दक्त भूमताश्मम ।

वृत्रिया हरमानी दक्त भूमताश्मम ।

क्षातिश कर्व मिख विक्रमन। यटन जिल्ला करतन (में क्रांत व्यव्यय ।। क्रवरणाव डेशनीक इंदेरतन क्या। त्राक्षद्राणी एकं राम क्रिट्न यथा ।। मिश्याः अभिन्ना तर त्रकाभिन थीत्। রাজার শোকেতে অতি হুইলা অধির। भरकाहिनी मिखियात कति महभन। व्छिष भारकरक **जा**रंत्रा स्कार्य सन्त्रः। अभवत मजियत रेथ्या थ्या मामा व्रापी श्रीक कहिएकन आबि ध बहरन।। क्लाब क्रिल बाली भारवर्ग त्राकादा । रेमवाधीन इब याश विश्वटक कि भारत्।। चक्रवर चात्र मार्गा करतामः कल्पन। त्राज्ञ एक करत् कत्र शृटक् ज्यानामन ।। च्या अवस्ति श इस विक्रिश त्र'रकाटक याहेका कहा संरव **अ्विन्ध्य**ा। मजित्र कर्एन नहीं (थेमाबिक मत्नः) 'यावना यावना मित्र जात्र निरुक्ति ।। ছার রাজা ধনে মম নাহি প্রয়োজন। यनि विधि इत्रिनिल পणि त्रञ्ज धन।। 🖟 আখার থেকিছে। শুন মৃত্রি বিচক্ষণ্। यपि क्षू पिरक भाति পणित की बग्रा करव शकि महा श्रुष्ट कृतिव श्रमन। मक्ता व (नर् मन कति व श्रवन ।।

### নতীয় চিত্ৰভাত্ম কাৰা।

ভাত এব শ্বন মন্ত্রি জানার বচন।

তুনি গিরা কর এবে প্রজার পালনা।

রাণীর জাদেশে মন্ত্রি জন্তির ইইরা।

মনোছগুরু জাইলেন গুহুুুুুতে চলিয়া।।
কানাকে না কহি রাজমৃত্যু সমাচার।

পিড়ীত জাছেন রাজা করিলা প্রচার।।

অনা বিংহাসনে বসি সভ্যাশন ধীর।

প্রজার পালন করে ইইরা সুন্থির।।

তি দাম্পি পাদ্পত্ম করিলা বচন।।

প্রিন্তরণ কাব্য করিল রচন।।

मत्त्र हिनीत था अक यूर्टकत क्रेडिक । अवर कारात थाक मत्त्राहिनीत डिक्टि ।

#### প্রার ৷

खेक वरण खन खन खाला बलाव । छ महरत वाहा याहा इहेल यहेन।। तालतानी मंज्ञ करत तहिल छथात।। धकाकिनी भव लटक तहिल छथात।। कि कतिरव स्वांधा याँरत या शाल छेशाव। स्वतन मार्थक लागि करत है। के हाल ।। वर्ष्क भव बनाया स्वद्ध संस्कृतिनी। करशरू कतिला जारना स्वत्र स्वांधानिनी।

বিধি বারে বাসু ভার পটের পদে বার। क्षा देहरड मुदा अक अहे श्रव गात्र।। र्कां पिथा (महे जाम्बर्ग कार्मिनी। पाना क्या स्माम (पन व्यक्तिक्कः मामिनी ।। मुक्तित योवना ठात ठण्णक वद्रश । भातन शूर्वन्द्र ग्रंभ भक्तम (लाठना।। রুহ্মিতম ভার পীণ পরে।ধরা। রত্ব অলকার অংক পীতবক্ত পরা ।। এই ৰূপ ভার ৰূপ দেখিয়া ছুৰ্ছাত। মদনের বাবে হোলো পীড়াযুক্ত অভি।। टिकतानी धकानिएइ मठी करलबरम। ' विकटि वाहेटक माथा वा **स्टाटना भख**्या। অন্তরে থাকিয়, ক্য় খোহিনীর শ্রভি। শ্ব কোলে কোরি, বনে কে ভূমি ছুব্ডী ( धवासी किन्नी किन्ना मामविश्वहेटवा चनल वहरन धनी मामारत कशिरव ।। मरणार्शनी वतन वान् कि समिरव इःव। मचन त्रामात्र तारी विश्वाका विश्वच ।। युवा बहुन मम श्राष्ट्र करेन्द्रा नगरा े भटदरत*्वा*लक। छल आवात्र आलव।। केकार क्षत्र मिनि किया कर काश्रा कृश्ये पूर्व वादव अहमा क्रव कात काता।। मरतारिनी युवरकद्वाहन वाका स्वा

### সভীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য

कार्श (अरविश्रम् कृषि शार्मिकी कृत्रन ! এখন জানিবু আমি ভোষার মনন।। कान हीन (हारह त्यहे श्रद्ध श्रप्ती हरत। यात्र (मर्डे कुछिलाक नद्रक इसद्र ॥ চতুর্দ্ধশ ইন্দ্রাবধি ভাষা কোরি ভোগ! **हिं एत्या चर्त करना करना क्रिंट्रा**र्ग ।। ভাষাত্রীর ভোগ হর ঘোর কালচক্র। शावर कद्रम द्राका व्यक्तामम मका পরে আসি জনালর চণ্ড'লের ধান। এত কহি মদ্যে किमी स्टेल। বিরাম।। गृत' क्य अकथाम क्लिटन गृत्जी। তে মারে যাইতে হবে আমার সংহতী। সংক্ষে না যাও যদি <mark>আমার আল</mark>য়। वत्म भति (लारत याद्या कादत कति कता मत्ना हिमी ७। द्य अकि इः स्थानदत नात । व्यान यात्र माहि छत्रि शादक वर्षे यात्र ॥ कानिट्डा रेमरवत्र शर्द्व वेल बाहि चात्र। ष्यताथा नाथन इत्र नाटम कालीकात ।। এত ভাবি कानीकात खेव **जा**त्रहिन। पृत्र वाकि मुद्रानेय खैनक नाशिन।। कालीकात अपर्युत चर्मत वर्णला श्रुकिता श्रुक्त कि छेगा इत्य बर्ला।

# म जीव विक्र के कि कादा ।

मरन्त्राहिनी कर्जुंक कालीक त छव।

ভুজাক প্রেয়াত ছব্দ। ৰমস্কারিণী অিপুর তাণ করী। नमण्डिका छ छ छूर्न ६ इ.जी।। ত্বরী ভুকাতি ভুকাতি ভুঙ্থ হর।। खाउटम खाउटम खाउटम मा कावा 🗓 नमः मुद्रती भिद्र भूत रख।। नमः मृष्टी कवी समः ছिল मखा।। नग मक्तिकाश सम भागाकाता। खाउटम खाउटम खाउटम मा छात्रा ॥ नम कुछला कुछला चूछमाली। ন্ম উগ্রহণ্ডা প্রহণ্ডা করালীয়া 🦠 भागानी समानी जित्रशांत नाता। ख्**ञाम खक्राम खक्रम मा का**नी ॥ समान महादेवक वी विश्वमांका। মহদেও শুভ নি**হাত নিপাতা।।** ° नम निखाकभा निहाकाष्ट्रा काहा।। खल्प खल्प खल्प बाल्या।।

সর্পাদাক্তি যুবকের প্রাণভাগে । প্রার্থ

र्क्नमरक करेंद्र नहीं खेर काली नाह । रेक्नमात कर का का किस किस काली का किस

> म्दन्त्राहिनोत स्वरणामिश्दर मान्यमादनामामः।

----

প্রার ৷

শুক্র বলে প্রিয় শিষ্য কর শ্বপৃতি।

শৃতঃ পর বা করিল মন্মোহিনী সভী।।

শুপুরে শুরিয়া পর্ত শ্ব সেই বনে।

প্রিয়া রহিল শিষা নিশী শুচেতনে।।

রাত্রকালে রক্ষা করিলেন নারায়ণ ।

প্রতিত উঠিল সভী পাইয়া চেতন।।

किहर्स नार्त कति कर्रन मुख्यो। ভূমি জগন্নাথ শোষি জগৎ ভিতরি।। कश्ड शाल्ब कात्र चाहरत (टामार) কি হেবু ৰঞ্জা প্ৰভু করহ আমার।। कि कर्ष्य जामात्र कास शिल काषाकादर কোন স্থানে কার হাতে অপিলে আফারে জগতে ৰতেক মুঢ় আছে নিভাৰন: विष्यार्थ भक्षे भारत मध्यास्य भागनाः 🕽 विषय जे वर्षा (जान नवात यथार्थ। षालन हेकात काटक करत दूरार्थ।। ভ'র সংক্ষী যত সাধু জগত ভিতরে। कः जिम्ना जैसर्वा कव अम शान करता। िक्छ क्ष्यू यापि दक्ष चना दक्षन कन. 1 ें चर्च, द्र (फार्ट्स व्यटन) कहर ह दक्षण, ॥ ভাব দে ব্লিভ জন পার বড় **ছঃব** ! ভইদ্যে ত্যাগ বিনা নাহি হর সুখ। অংহএব এনুড়; ব্রিড: দানী প্রতি। আমার বাঞ্ছি অন: দেহ জিয়ঃপতি 🛚 ইন্তৰ দেবত মোক নাহি চট অংমি। 🌝 চতুৰ্গ হৈতে ত্ৰেষ্ঠ দেহ সম স্থানী 😥 🍃 कृषि कर्राटक्र नाचे अटह नातारग। **अहेक्टर एक अभ शृक्ति औ**दन । অনাথা এথনি শাপ দিব তোমা প্রতি। লাপ দিয়া ভোষারে এবনি প্রজাপতি।।

#### সত ছ চিত্ৰভান্ত কাবা।

বিনাশিব ভোমার এ সৃষ্টি অবিকার।
গ্রহ্ শন্ত জ্ঞান লোপ করিব ভোমার।
গ্রহ্ ধর্ম ভোমার করিব ধর্ম লোপ।
গ্রমর যমত্ব আদা করিব বিলোপ।।
গ্রাইন্যপে মন্মোহিনী মহা সাধী সভী।
কহিলেন কোপ করি সর্বাদেব প্রভি।।
গ্রহ্ কহি শাপে দিতে উলাতা হইয়া।
গ্রহ্মতা নদী জীরে গেলেন চলিয়া।।
গ্রহ্মতা নদী জীরে গেলেন চলিয়া।।
গ্রহ্মতা নদী জীরে গেলেন চলিয়া।।
গ্রহ্মতা দেবভাগণ হইল কম্পিত।
চালিনেন দেবগণ অত্যে করি বিধি।।
উপনীত হৈলা ভীর ক্ষীর প্রোনিধি।
ব্যার্থ বিষ্ণুর স্তব্ যত দেবগণ।
গুইগানি হোষে কহে শ্রেইমাচরণ।।

দেবত। কড় ক বিকুর স্থতি।

नीर्च किल्ही।

কুনি নিরকোর শূন্য, তুমিহে আকার গাণ্ড, দীনবকু দ্রামম হয়ি। জাকাশ পাতাল ভুমি, যত কিছু দ্ব তুমি,

णाद इः तथ छतियात छत्री । साध्य समुख्यमा, अनव सत्यादमाह्य, भूताती स्कूल्य स्त इत्र।

#### সভীয় চিত্ৰভাম্ কাৰ্য।

নমঃ গোবছন থারি, নমঃ গকুল বিছারি:
গোবিন গোপাল গদাধর।।
নমঃ পলাপ লোচন, নমঃ পর্বগ আগন,
পাল্লাভ পাবন গাবন।
নমঃ কালীয় দনন, জগনাধ জনাগন,
প্রশহ নৃতিংহ বামন।।

নিবগণের বিজ্ব প্রভি উত্তিন, ও দৈবন্দী প্রভি, এবং মালোহিনীর নিকটে জাগদন: প্রভাৱ 1

এই মণে ক্রিবিকুর করির। ভবন।
বিবেদিল সব কথা কমল আসন।।
দুনি দিলে ব্রহ্মাণ্ডের শাধকারি পদ।
১৭ সংখাছিনী শালে যার সে সম্পাদ !!
এই কণে ক্রিমে জামে যার দেবগণ।
নিজ নিজ রূপে করিলেন বিবেদন।।
যালভাগী চুল (ভাজা করিলে সকলে।
শাল ভাই যার মালোছিনী মাপোনলে।।
সালে জাগরণে সাল কার্যে সালুগণ।
সর্ব জুপে পার হয় মাধ্য স্থেগণ।
সর্ব জুপে পার হয় মাধ্য স্থেগণ।
আভএব রক্ষা কর আনে। স্থাকারে
আভ বলি দণ্ডাইলা সভার শালুগে।
আইকাল্লে দৈববাণী হোল অক্সাণে।
সালে সার্বি কথা আলি যাহের শাল্যে।

# সতীত্ব চিত্ৰ ভাষ্য কাৰ্য।

गेम खिन (भवशन (हादा जानिक्ट) মলোফিনী স্থানে সবে চলিলা ভুরিভ দ (५) क्रांस পुडि स्मया श्राम्ब रण्डे नक्ते । প্রকাশিছে ভেজ অগ্নিশাসম জ্যোগি स्थानामारम विमि शिक्ष भाव वरका नित्। वामित्र काष्ट्रिक माला भवा कटत कावार াপ মুক্তা করি সভী পতির জেলেডে। ্রির ভূপদী মলেং পরিয়া গলেডে : ामा अन्यस्ति पृष्टा উक्ताः। ा. इन निच्छत् विका देख् व्याल कला ।। ८०० वर्णे छ। सन्: श्रुष्डित उथौदसः त १९४१.४व इन्स इन्लाह बहरा । ः (म.य (भवशन व्हेतः विकास । ে: ইন্য ক্ষরে অন্তরে শাপ ভয়। িশার পাদভার ভ্যের কামতের। ्र कर श्रुष्ठक अधिम: हर्न व्रत्न ।।

<sup>ি ্</sup>য বৈধ্বলক বেশে মলোকনী নিকটে অংশমন ও ভাঁহার সঞ্জ কৰোপক্ষন ৷ শ্যার ৷

<sup>ি</sup> ক বলেন শিব্য কর্ছ আবণ।

ে দ্বাস্থাক আথ্যে করি দেবগণ।।

১.০ জিনী নিকটে এলেন জ্ঞাতগতি।

পোধ সভী বরপুটে বরিল এপতি।।

#### সভীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

স্থামিকে রাথিয়া ফাছে কান্দিতে লাগিল এইকালে এক ভিন্ন বালক আইল।। হতুক্র বাস পরিধান তিলক ধারণ! শিরে ছত্র করে দণ্ড পুশুক শোচন । नकारण हमान लिख क्षण बरमाहरू ।। सादा गर मरबा एक रमार छ जामंबह ॥ িণুর মারায় সাবে বিকাভ হইল : ८ वर्गार्थ किमञ्चल कहिएल मार्थित ? ব্রজ্যা শিব শত্রে করি ওকে দেবগ্রা कि रहेकु चाहेरल रहेश कह अ नड़स ॥ পারে **দিক কহিলেন মলে** 'হিনী এতি। मदम भव अकारिमी (क कृषि तुंबक्षी।। ক'র পত্নি কি কেবু এখানে আগমন। क्ष श्रीम सुमन्नी नकल विवत् ॥ क्षांने भरमा को निरक्ष धाराम क'तन। যথাবেটা সংস্থেতন ক্ৰিডে ল্যাগল : नदारकात वर्षे अपनि कहे सम अपन्। नकाल काम देव शाम महमाहिनी नही। সম্পৃতি সামার পতি শাবর তালিয়া। অনাথিনী করি মেণ্র গেছেন চলিয়া।। विलाभ कदिया (भवशरत ए किलाम। প্রভির জীবন মম দ'ত মাগিলাম।। मिव्डांव नम माडा चात्र महावान। निह्न लिहरव छात्रू नरह विमामान।।

#### সভীম্ব চিত্ৰভাম্ কাব্য।

এই হেডু দেবছা নিকটে সর্বজন।
স বাঞ্জিত বর সবে ক্রমে প্রার্থন।।
পতির জীবন প্রান্থ জ্ঞানার বাঞ্জিত।
না দিলে দানিব দেবগণে স্থানিন্দিত।।
দ প দিয়া পুনরপি শুন ছিলবর।
সোধত হইব সভা স্বার্থ উপর।।
এতবলি মন্যোদিনা স্ক্রিয়া হইল।
প্রার্থ প্রবন্ধে দিশা ক্রিবিরাচলা।।

বিথাবালক সভ্যোহিনার পতির মৃত্যুর করেণ গজালা করেণ এবং ভালতে মৃত্যুক্তন্যা া কলে খনাদি দশন করান ৷

ক্ষা বিশ্ব সাম্বাহিনী কছ লে বচন ।
বান রোগে ভব কান্ত ভাজিল জাবন ।।
পার নদী জামি সার্ব রোগ চিকিৎসার।
অবগ্রি কর ভূমি ক্ষমতা জামার।।
বে গ্রহে মৃত্যু ভূল্যে জ্বলা বিমাপে।
বাপে বেন বন কৈতে গল্প আলে বাধি।
কৈলাবলৈ পাবিগো ক্রিতে জান্যন।
আবল জাছি সব ব্যাধির কারণ।।
শাহা বৈতে বাধি বীজ ছক জ্মল্ল।
সপারিতে নারে জামি জানি সে সকলা।
সাহা বৈতে নারে জামি জানি সে সকলা।

বিনার্টের যোগে শাপে অথবা বিষাদে। यानि मात वाँडाइटल शाति अधिमाटम ॥ सुन्तिः खिद्यन्त्र याका मयास्य वृत्ती । ্মফ চিত্তা স্থীচেশ্যে কং্েমিইব 🔧 🖯 যপ্তম শিश্বৰ প্ৰায় করি দ্রশন। মহাভানিবান সম ভোমার বচন 🖰 এ ভিজা করিলে মম বঁচেটেবে প্রি: বিপরীত নকে ভব আছায়ে শক্তি !! কিন্ত অভুসক্তে যে কিছু মম খাছে : उद्भ कतिया পতि वै हाहै व পाइ !! কাৰিত হইলে পভি সভ; সলিধানে। 'জ্জাবিতে নাপারিব পতি বিদামানে '**'** তুমি ভারী ব্রজা আদি যত দেবগণ! का शक्ति देवटक (आर्क मच् क्यारमाक्रम । বুম বুর হার্চ, করে: শাস্ত্র: স্থামি যিনি ১ শ । 🖻 है। 😎 🖂 সংকুল জ। কামিনী।। थ भारत कुलते। इस्ता बादी इस वाहे। . निक पिंच मध्य व्यक्ती करत्र (महे।! প্रक्ति यान दम्पीरत कहरत्र भाजन। কেবা শকা হয় ভাগা করিছে বার্ণ 🖯 जिला अध्य देखादिथ कुक् नद्र गर। नर्सकन भर्या हेर। बाह्य स्विराहि ॥ স্বামি রমণীর কর্ত্তা স্থামি বিদ্যমান। बज्ञशीत काक बाहि चामित्र नमान !!

#### সভীষ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

যুদি দ্বিজ ভোমাতে সকল শক্তি আছে ক'ল যম মৃত্যুক্ষণ ভাকো মম ক'ছে।। মলে। বিনী বাকো ভিজশিত সেইফাণে। সভামতে আহ্বান করিরা **তিন জনে** !! किश्हिन मृङ्किना। कर प्रभान ! द्रकृत्वः পরিধানা লোহিত বসন।। চ সংমুখী শাল্ডি দর মুক্তা মহদৈতী। राभिक्ष ठलुध्यिष्ठ मखान मःइलि॥ ल कि इस्ता स्थल मिटक्ट्स गवाकादि । न हात मिक्सरा एमध कालविल याँदि ॥ मात्राह्म **अंटम काल महाउँश क्रम** । ্ৰকট আকার গ্রীম ভাকর স্বৰণ। ६ । दूथ (वालक्ष क क्विन लाकन। ध्य शम कृष्वत् (लाहिक वमन।। হন্তন ইঘদ হাস অক্ষালা করে ৷ इन्द्रिक्त कुक्षन्य अत्रम अधित्।। যমে সনদুশান সভী কর হার পরে ! थणा विल भीरत भूम वलरह मरमारहा। उल्लब्स कृष्टवर्ग त्रवित नलन। य शिर्ह्स नम्भारत ज्ञाननाटन।। ভবে মন্মোহিনী ক্রমে দেখি ভিন জনে। क्षांबरक साजिता चटका यम नद्यांबरन ।। অকংলে কি হেড় ভুমি হর মমপতি। श्रुति यम कहिरहन महन्। दिनी थाउ।।

कशरक कराल नहीं (कह नाहि मरत । के श्राप्तव व्याकारिका काहमांश करवा! অংমারে কি হেতৃ তুনি কর জিভাসেন: ্বৃত্যকন্য জ্বজনবিদা লাকরি এক া শুনি সতী জিজাসিলা মৃত্যক্ষা ৺ হৈ, অংমি বজে কি হেতুমরিল মম ১ ছি.! কুমি নারী জান সভা স্থামির বেদন। তবে কেন মম পতি করিলে হরণ " শুনি মৃত্যুক্রা: ভারে করিল উত্তর , প্রথমেতে সৃষ্টি হবে করিলা ঈশার !! করিলেন এই কম্মে আমারে স্ভান। ংকালেমেটেছ আমাটেছতে নাহয় বারাং 🥫 পতীমধ্যে তেজাবিনী ভূমি হও বনী। ५ र कि कह मधी धामारद अधिन ।। कर्त गरा अभग्रह सम्भा नद्वि। কিন্তু কালে দেখে সতী লাছিক আমার ং জ্ঞার মম চতুষ্ঠি পুজ্ঞাব্যাহিপার 🛚 কলে অভেতিন ভারে নাকরে স্প্রান ভবে শভী যথাগে গ্রাকালে নমসূরি। জিজা সিল কেন মম পতি লাইলে ১(১) কলে কহিছেন শুন আমার ভারতি। কে আমি কা মৃত্যুক্ষ্যা কেবা পিতু প্তি 🛚 । কেবা সর্ব ব্যাধিগণ কার কি শক্তি।

### পতীত্ব চিত্ৰ ভাত্ম কাব্য।

গার আজাবশে সূরনর কন্ত্রণা ৷ बिक बिक कर्य गर्व कत्रस्य माध्या। र्वात ভরে বহে বায়ু হর্ষোদ্ধ হয় 🗄 পরে ভবে প্রকাপতি দংসার সুজয়।৷ গার ভারে বিষ্ণু সৃষ্টি করেন পালন। शांत खरुष न शांत करद्रन अक्षासम ।। একগতে ধন্ম কন্ম সাক্ষী ভয়ে মারে। কালচক্র আদি ভামে শাসমেতে যার । किकलाल अन रीत आप्डता निरंत धरहा া হরে আছেলায় রক্ষ কল পুলা ধরে 🔀 মার ভাষে মেঘগণ করবের ব্যাণ ें व ऋदस ध्वामत कटतम धाद्रश 📳 बिन्य के इस (वरण आणा ज्या यें। इ স্থাভিপ ঠ পুরাণ:দি করয়ে ই।চার ।। অপ্মরা যে কেই সবে যঁহরে প্রেরিভ গার আজঃ বিনানারি করিছে কিঞ্ছি সেইজনে চিন্ত সভি হোমে এক্ষন। ७७ कि करत नरव नद्यास्य शमन ।। মাখাহিনী অভি পরে কহেন ব্রাজ্য কলে যম মৃত্যুক্র্যা ক্রিলে দর্শ্ন 🔢 कर मञ्जे स्वितकति आधारत अथन। কেনে রোগে তব কান্ত ত্যজিল জীবন শুনে এইকণে সামি করিব উপার। ग्रहाटक खन्मवि कत शक्ति अप ---

ভবে সান্যাহিনী কহিলেন হাউমনে।
না মরিল পিতি মম রোগ সংঘটনে।।
ব্রেক্ষণাপে জীবন তাজিল মম পতি।
প্রাণদান দেহ জিলবর শীপ্রগতি।।
মন্যোহিনী বাকো বিপ্রকাপ নারায়ণ।
সেবগণ প্রতি শীপ্র কহেন বচন।।
কালীকার পদমুগ হাদর কমলে।
প্রান্থা পুজক প্রীউমাচরণ বলে।।

বিশ্ব বালকবেশে বিষ্ণুর দেবগণের সভিত নন্যোহিনীর পভির প্রাণদান নিমিত্ত কথেশে কথন ৷

#### প্রার ৷

ভক্ত বলে ডিজকপে শ্রীমধুস্থদন।
দেবগণ নিকটেতে করিয়া গমন।।
দবাকারে যথাযোগ্য সম্ভাষা করিলা।
দেবগণ কেহ ভাঁরে চিনিতে নারিলা।।
পূর্ব্বাপর বিশুর মায়ায় সংমোহিত।
পরে ডিজ কহিভেলুকারিলা যথোচিত।।
খেত ডিপে শ্রীহরি নিকটে সবে গিরা।
কোরে ছিলেন্তব শাপশক্তে পড়িয়া।।
ভাহাতে আকাশবাণী হোল জকস্মাৎ।
গ্রাহ সর্ব্বে ভধা আমি যাইব প্রশাহ।।

# সহীত্ব চিত্রভান্থ কাব্য।

ত ই দেবগণ আমি তোমাদের তাণে। বিজ্ঞাপ ধরি আসিয়াছি এই স্থানে!! इहेक्टल महीटक वदाव कमार्थन। শুনঃ তাঁরে মানস করিব সম্পারণ । ি ভত্তব এ বিষয়ে য' হয় বিহিত। एक नर्वकारमञ्जू, कारलव छे हिड ।! <u>াতেক শুর্নিয়া সবে বিকার হইল।</u> প্ৰে ব্ৰহ্মা স্তব বাফ্যে কহিছে লাগিল। ্য :কংনে। অবস্থা গত শুচাশুচি নর! ভাক্তি অগ্নিলে বিশ্ শ্চি বাহাদের । অংনি স্টিকরি স্তি সংহারেন হর। পম কম ৰাফি তব আজা অনুৰর।! পাণিগণ শাস্ত, যান তোমার স্থাক্তেতে ৷ इ क्षेत्र क्षेत्र प्रशास माधारण ।। धामात महिमा ध्व चू वर्निष्ठ (क भारत। বণিতে বৰ্ণিতে মম চতুমুখি হারে !! অনন্তর হাসি হাসি কহে মহেশার। কোন বংশোদ্ভব ভুমি কছ ভিন্সবর্যা क ब्रिल काहात्र ज्ञारम (यम अधार्म)। কি নাম কাছার শিষা কাছার নন্দন।। শিশু হোমে পরহিতে এতেক কাতর। বিড়িষিতে আনিয়াছ যতেক অসর !! এই ব্ৰহ্ম: সকলের সৃষ্টিকর্দ্ধা হন। বুদা ভাবিছেন প্রভু ভোমার চরণ।।

করিরা তপজা তব লক্ষ্যা মান। ভবে সৃষ্টি সৃজিতে হোলেন জানবান।। আর্মি তব তপস্থা করিয়। চিরদিন। ভূপি না জনিমূল মনে ভান ভক্তাধীন।। আদ্যাপি ভোষার নাম গুণ পঞ্চয়ুখে। স্গৃহাহীৰ গাইয়া জমৰ করি সুখে !! मृज्यकारल अथवा य मना मर्ककन। জাপিলে যে নাম যম না 🕏 রে স্পূর্ণন 😲 তব নাম গুণ আমি কীর্ত্তন করিয়া। भुड़ाक्षत्र हरेबाছि भुड़ाद्र किनिया।: ছে:মার মহিলা প্রভু কহিছে কে পারে। कहिएक कहिएक सम शक्षमूच काइन 🔃 ্শাংঘ বিজন্পে ক**হিছেন** প্রিরংপতি ! জিল্ডামিলে মহেশ্বর আসারে সম্প্রি।। विशः सम नाम कात वंदिन्द छेर्पा छ। ভূমিতে সে পরিচয় জানো উমাপতি । धकर्ष भवा कथात्र वाकि धात्राज्ञन। শীঘ্র দান কর, সভীপতির জীবন :৷ ছিলবর দেবগণে এতেক কহিল।। স্থির হোষে বভাষণো বদিলা হাদিয়া।৷

মন্মাহিনীর পতির জীবস প্রাপ্তি ও দেবগণের
স্বস্থানে গমন ও মন্মোহিনী পতি সহিত গৃহে
আমন ও পৌলব মুনির বাক্যফুর্ন্তি।
ত্রিপদী।

তবে সর্ব দেবগণ, হ**ইলেন হার্যমন**, বিফুর কথার দেইকণে।

ব্ৰসা শিব করি আগে, গেলা মন্মোহনী ভাগে, যথা সভী বুসি যোগাসনে।।

লয়ে বিধি সুনির্মাল, নিজ কুমগুলু জল, প্রদান করিলা শবোপর।

সেই জলে চমৎকার, মন হোলো সুসঞ্চার, জ্ঞান দান দিলেন শঙ্কর।।

ধর্মজ্ঞান দিলা ধর্ম, জীব দাব দিলা শর্ম্ম, অগ্রি দিলা জঠর অনল।

সর্কাম কাম দিলা, পরে বায়ু সমর্পিলা, নিঃশাস প্রশাস প্রাণ বলা।

স্থর্ষ। করি অধিষ্ঠান, দৃষ্টি শক্তি দিলা দান, বাণী বাণী করিলা অর্পণ।

চন্দ্ৰেট হোলো শোভা, পূৰ্বমত অঙ্গ আভা, প্ৰকাশ পাইল স্থাচকন।।

শায়: বিনা সেই বাক্তি, কিন্তু হোলো হীনশক্তি, পূর্মমত রহিলা শয়নে।

দেখি হেমাজের স্থা, হোরে অতি ছঃখযুতঃ, ধরিলেন ছিজের চরগে।।

# ১০৮ সভীত্ব চিত্ৰ ভানু কাবা।

ঘিল বলে শুন সভি, পরম ঈর্ষারে স্থাতি। কর শীঘ্র ছোরে এক মন। তাহার করণা বিল্ফু, হোলে শক্তি সম্সিত্র शक्तिकर्ण इदय विद्यालय।। শ্নি মন্যোহিনী সতী, হোঁৱে অভি ভবিচমতি আরম্ভ করিল ভারে শুব। ুমি বন্ম কর্মাসাফিক, ভূমি জাগতের অফি. ভোমা বিনা সবে হয় শব।। পর্ম: প্রকৃতী যিনি, সক্ষ্ণার স্বর্গিনী, ভোম কৈতে হয়েন উৎপতি। নেট দাইফুটি একা, প্রদরে ব্রিগুণাথিকা: বিধি বিষ্ণু পাৰ্ক্ষতীর পতি।। উংরে পুলি প্রলাপতি, হৈলা সৃষ্টি অধিপতি, कशंक श्रांलिएक अधिकात्र। প ইলেন নারাহণ, সেই সৃষ্টি জিলেচেন, व्याख देवला कतिएड मरहाद ॥ প্রকণে ভোষার নাম, জীবে পায় মোক্ষান. रें दु 'तु कालम आंकि छूहरा। প্রকানন প্রকৃত্য, তব গুণ গাম সুখে, हजुर्मा (थ कर्भ हजुर्मा थ।। मान्त्राहिमी खाद जूती, छेल्झ शक्री विद्रुः भारतम आसरम थारविभक्ता। পেয়ে টোহা অধিষ্ঠান, পাব হোলো শক্তিমান,

याज्याक मीख मधारेना॥

#### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য। ১১৯

তবে ম্যাপ রাজন, স্নান করি শুদ্ধ মন, ভिক्তि जादवं बिट्डा व्यविमा। (मश्च यक एमरागन, कति श्रुक्त रहियन, দক্ষতিরে আশিষ করিলা।। भारत नर्क (मदश्य, विश्वकाशि काम क्रिम, ৰিক ভাবে করিলা গমন। পতি লয়ে সভী খরে, আসি বহু জ্বিস্বরে নানামতে করাণ ভোজন !! এখানে পৌলব ঋৰি, সুক ছোমে ছিলা বসি, भाः भ रेक्टक इहेला (माइन ! किन्माहत्व क्य, मजीत्यत क्य कर, व्हि वृद्धि बला नक्कन।। म मर्थत मृशशा ७ लोतीत मृशीत्मर छाता। প্রার 1

🖹 পতি বলেন শুন শুন কিপস্ত। শ्वह ब्रह्म कथा शब्भ चस्रु छ।। কিছু দিন র জা তবে করে নরনাথ। যদ পুণ্যে দাৰে ছোলো ভ্ৰৰ বিখ্যাত !! কাননভোজন আর মুগরা কারণ। रुलंगा मटलाय पाटक मचादश्व मन ।। এক দিন মহারাজ উঠিয়া প্রতাতে ৷ मुश्रमा काब्राण याम रेममाश्रम मार्थ।। চলে রাজা বন উপরন অভি ক্রেম। कृत्दक्त व्यवद्धानामा कारन व्यम।।

रेम् (यार्रा जक द्वारन (इद्रिल, द्राक्रन) कूत्रक्रिमी ७४। এक कत्रदश खम्।। মৃগী হেরি মহিগতি হরিব অন্তর। ভার প্রতি সন্ধান করিলা ছুই শর 🕕 শ্রাঘাতে জীবন ভাজিয়া কুর্জিনী। শাপে মুক্ত হোরে হোলে। সুন্দরি কানিনী।। र्द्रल चास्त्र क्ष द्राच मरनाद्रमः। मात्री माधा क्रिक् जात्र माहि इस नमा।।। নুব প্রতি করিয়া কটাক্ষ আক্র্যা। निकटि पानिश চাट्य क्रिक ल्लामंन । श्रृद्धंकथा मन मन्य क्रिका अहर । মনুধেরে দিতে যার প্রেম আলিকন।। वाका वाल क्वा कृषि कर्ता मुलती। च्या इटल करण मारक मृगी कप प्रति। त्यात मान वटक हार कत्रिएक विरात । प्रमाते इहेशा खत किया यायहात !। कथाया शिलब माहि इत ७व गान । হ্টাতে রমণে ল্ড্ডা ভালিবে কেমনে।। नह्र अक्षेत्र निकारणी पिरुपत्र। ण्या श्रुक्तरतत्र कोट्ड कथा वाकि कहा। এচকর ব্রমণী হোমে দেখে খন্যা পভি। কামিনী আপনি কোধা বাচে আদি রতি।। दिखात ना भारत बना कि दलिव बाता। ख्द इ**क (५८५ -(अश्रु भक् (क्**रिन) क्रिन्न)।

### সতীৰ চিত্ৰভাম কাব্য।

কহলো আমারে ধনী কারণ ইহার।
কে তুমি হরিণী রূপ কি হেতু ভোমার।।
যন যে আমারে দিতে চাও আলিক্ষ।
বিস্তারিরা কহ দেখি এর বিবরণ।।
কন্যা বলে প্রাণনাথ তুমি মোর পতি।
আমি গল্পী ভোমার শুনহে মহামতি।।
নত্বা যে লক্ষা থেয়ে চাহি আলিক্ষ।
ভূমি আয় বিক্ষৃত না ভানো বিবরণ।।
আতিকারা হই আমি শুন নারেশার।
বুচিল উমাচরণ সারদা কিক্ষর।।

গৌরী বিদ্যাধরীর পরিচয়। দীর্ঘ ত্রিপদী।

কং ক্রা: রূপবতী, শুন ওছে নরপর্তী, বৈশ্যাকুলে আমার জনন। সৌরী বিদ্যাধরী নামে, আছিনু ইন্দের ধামে, নর্জকীর মধ্যেতে গণন।। উদ্যানে কুমুম দীন্তি, হেরিতে আমার ভৃতি,

মান্তে মানত ছিল সার ।। শুন্তে অবনীপতি, নলন কান্তে গতি, এক দিন ংইল আমার ।।

रहनकारल मृश्यतः, औमक्रल माम धतः। व्याहेल এक शक्कर्य मुख्याः।

### সভীত্ব চিত্ৰজ্ঞান্ত কাবা।

কি কপ তাহার কপ, কথনে না যায় ভূপ, তার কপে হইনু মগন !!

মজিয়া অনক রকে, বিহরি ভাহার সকে, অলশে অবস কলেবর।

पाश्कान मूत्र रहा, त्रिक चकुश्च नवतः, উन/राम चारेल भूतनात्र।।

ের তুজনার কাষ, কোষ করি দেবরংজ.
দেহারে করিলা অভিশংপ ৷

ইন্স বলে গৌরী যেন, করিলি কুকর্ম ছেন। মর্ক্তে মুগীরূপে ভুগ্ন পাপ।।

ই মকল যাও ভূমী, এস্থান অযোগা ভূদি। ক্তিবংশে ভূমি হে জনিয়বে।

প্রেপ্তে মলারে মতি, হোরে এর উপ্রতি, অনুহাপ সর্বদা ভুঞ্জিবে!৷

ত্বে ইন্দ্ৰপদ ধরি, কহিছু বিনয় করি, কবে শাপ হইবে লোচন।

বিনয়ে পাইবা ভোষ, মোরে পরিহরি রেজ, কহিলেন সহত্রলোচন।।

শ্রীমঞ্চল হইতে যবে, মুগীদেছ নহা চবে, সেইক্ষণে পাবে পূর্ব রূপ।

ষার জন্যে পেলে ছঃখ, ভাহা হইতে পাবে সুখ, এতবলি গেল স্থর ভূপ।।

বচন বাসব উক্ত, শাপ হৈছে কৈলে মুক্ত, নেই জন ভূমি রুস্মর।

### সভীয় চিত্ৰভান্থ কাব্য । ১১১

পুরাও আমার সাধ, নাশো মনো অবসাদ, দেখ হে আমার অসময়।। র্মহ পরাণে বাঁচি, এছেতু রুমণ বাচি, -কহিলাম পুর্ব বিবরণ। সেই ভুমি সেই আমি, ভেবে দেখ ভূবীস্থানী, विक कवि कतिल तहने।।

----

বিদ্যাধরীর প্রতি রাজার প্রত্যুত্তর ট

পদার 11

मुन्दला स्मात्री धनी कौडिপडि कत्र। কোমার কথাতে মম না হয় প্রতায়।। नित्भारय विलाल जुमि य त्रव वहन। মের জ্ঞান হইতেছে নিশীর স্বপন্যা भि द्री वरल क्षांगनाथ नकलि कुलिला। ज निया नन्त्रवटन जामाद्र रहिला। मृशीकाल हिनू वटि निवान कानता। পুর্বজন্ম কথা রাজা পড়ে মোর মনে !! ষ: বলে: যা কছ নাথ ভূমি মোর পভি। আলিক্সন দিয়া প্লিঞ্চ করছে ভূপতি।। द्रिकत्रक स्थात् जटक कत्र व्यविद्यादश পাইবে পরম প্রীতি আশু হৃদবোধে! রাজা ভাবে ছিল পুর্বে মৃগীরূপ ধরা। সে দেহ বিগতে হোলো ভূবী সনোহর !! কাৰ ভাৰ লাবনো আপাজে মাহে নন।
রমণী আপানী আদি যাচিছে রমণ।।
বিদ্যাবরী হবে কলো করিনু বিতক।
ত্র্থপদ্মে ওঠাধর প্রভাতের অকাঃ।
কনে ননে ভাবে রাজা একি পারমাদ।
রমিতে উহার সনে মনে হর শাধা।
কৈন্ত ইথে ধর্মাথাবে মজিল কলকে।
লোভে কি ভ্বিয়ে রব পাপারপ পঞ্চো।
বছ যে পোলয়ে আধাছুবনে বদন।।
নন্বার দেখে রাজা বাধা কি অবাধা।
বিজ কবি বলে রামা নহে মোর সাধা।।

#### প্যার ॥

রাজার বচনে বিদাধরী কিছু কর।

কি বলিলে একর্ম ভোমার সাধ্য নয়।
রমণ রমণী হোয়ে যাচি পুনঃ পুনঃ।

সংধিতে সাধিতে শাধ বিষাদেতে খুন।।
রাজাহোয়ে ধর্মাধর্ম না করে বিচার।

কিলে ধর্ম কিলে হয় অধর্ম সঞ্চার।।
ধর্মভিয়ে মোরে নাহি আলিফিতে চাও।
রাজ ধর্মে সাকাতে অধর্ম কত পাও।।

মোরসঙ্গে রমণে নহিবে লখুপাপ।

কেমনে সহিবে মহাপাতকের তাপ।।

#### সভাৰ কৰভাত কৰা।

अधरमण्डा हेस्सवाका मिरव विवर्कत। ষিতীয় উপযাচিকা ত্রী বিবর্জন।। ভৃতীর পাতকে রাজা মহাপাপ গনি। **क्यामात छेलात् वर्ध निवरह अर्थनि ।**! ভোমার বি:ফ্:ফ নাথ ভাজিব পরাণা খ্রী হত্যা পাতক যে ভুঞ্জিবে মুক্মিন। লাব লার পারেধরি শাধিনা রমণ ৷ न्याटहादम् जुमि नाथ हरेल समन ॥ दभुषा शालक खुनि मारन कर्न माडा। শ্রিকে রুতান্ত প্রায় প্রণান্নর হাত: !! .লই য∤জ চলতেই তা∌, দেহ সেইকাণ ≀ ল'ত চংত্রন আমি তুরঙ্গ বারণ।। নচেছে বিমান মণি মুক্ত র্ভুগণ। বস্ত্র অলভার অল নাচাছি রাজন।৷ ध्धा जालिकन मध्य धकवात ह है। है (थ अमामर्थ रेहल विलहाति याहै।। विषाधिती वहान लिक्किंड नत्नाथ। र जिया जैयनाशास्त्र देवला पृथ्विश्व । । মনে মনে বিবেচনা করি বছরণ। এরে ভাগে জনোচিত ভাবি কহে ভুপাঃ আইন প্রীয়া ভোমারেতো আলিকন দিয়া: চন্দ্রাধিক শীতল করিব তব হিয়া ।। মন্মৰের ৰাক্ষে ভবে ধড়ে এলো প্রাণ ! বলে প্রাণ ভুরিতে ভাষারে কর তাণা।

# ১১৬ সভীৰ চিত্ৰভান্থ কাবা।

এতবলি ছুই জনে হইল নিলন।
উত্তরে উত্তরে দের প্রেম আলিক্ষন।
শুনহ রসিক জন রসের সভাব।
বিরুচ্ছি প্রতিমাচরণ কালীদাস।।

মলাবভীর বিলাপ ও ইন্তেউজি:

लयु-विभनी।

शक्रदक चमस्र, जिल्लादम व्यवस्र, कह कह शक्त जुन। গন্ধৰ ভনহ, মন্মথ ভো হয়, लोशी यमि मुगीक्षण।। ্ৰছ এই বাণী, ভবে ভার রাণী, कि काला मत्या हमी। कर्ट अक्रवंद्र, खन निवादंद्र, অপ্রপ সে কাহিনী। বাসবের শাপে, দৌতে পরিভাপে, कीवम छाजिल ग्राव। শ্রিদস্প সতী, মালাবতী অভি, मधरहाटला (माकार्गद्य)। অঞ্চললে ভাসি, ইনুস্থাৰে কাসি বিনয়ে কহিছে সভী। প্रिधन जन, প্रতিদে জীবন, প্তি যুবতীর গতি।।

পতির বিহনে, সতীর জীবনে,
কিবা কাষ সুরেশর।
হোয়ে জাত্মঘাতি, হবো পতি সাথি,
পাতক গ্রহণ কর।।
একপ বিলাপ, করি পরিভাপ,
সতী মরিবারে যার।
হেরিয়া তথন, সহস্র লোচন,
নিবারণ করে ভায়।

কন স্বপতি, **তান এণবতি**, প্রিহর প্রিভাপ।

ভেমোর যে পতি, পাপে দিল মৃতি, এই হেডু দেই শাপ।! রাজার নজন, হাবে সেই জন,

क्ति हृश्य काव व्यात्र ।

লগ ছাড়ি ভূমি, জম লোহে ভূমি,

দঃরা হও গিয়া তংরনা।

क्षारम, (यक्ष, ७४) (महेक्स,

स्वाधिका नाहि रूदा।

শক্ত বাংকা ধনী, পঙ্গায় তথনি,

भौवन काभिल करव।।

সরোজ নগরে, ছেমাজের ঘরে:
মালাবভী জন্ম নিল ৷

ৰূপ গুণবৃতী, মুন্ম। হিনী সতী,

क्रिक कवि विव्रक्ति।।

# সতীৰ চিত্ৰভাত্ম কাৰ্য।

#### পরার 1

গ্রীপতি বলেন পরে শুন হে ব্রাক্ষণ ৷ এক পতি ছুই পত্নী বিহার যেমন।। (भोतीत चानिया द्वाका तात्थ छे पवतन । নিতা গভায়াত করে অভি সংস্পেনে!! ন্ত্তি চইলা যেন শরত ভ্রমর। নিলি দিশি মধুপানে মগ্ল নিরম্ভর 🖯 দিনে কবে কমলিনী সংক্ষ কাম খেল। য নিনীতে কুমদিনী সঙ্গে হয় মেল'।। এইৰূপ নৃপতি ভাসরে রভি সুখে। निभागारण सरन्तारहनी मह दूरक मृत्य !। দিনে গৌরী বত রতি হাসু পরিহাস। अधेक्षण करत इंग्ला आवस्य विस्तान ।। রজেকার্ষে) ভূপতির নাজি আবে মন। শক্ষি মনেস ভার করিতে রমণ্। বিদাধরী সনে প্রীতি বাজিল রা**লার**। नरःक चयद्भ ः इंटल। मडी वनिडाद्गा। নিজ ভাচ্চলাভা ভবে বুঝি মন্যোহিনী ৷ এক দিন পঞ্জি প্রতি কহিলেন তিনি ৷৷ कर नाथ नर्समा विभन थारकः (कनः নব প্রেমে প্রেমী হোলে মনে লাগে ছেন !! कर नाथ कान द्रामा जूनारेल मन। नर्वनः कत्र यान् छाहात त्रम् ।।

#### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

মনাথ বলেন প্রিয়া কিছু জানি নাই। বল দেখি কবে ছাড়া আছি তব ঠাই।। অনিতা সংসার স্থুধ বলেন স্তুপতি। জিজ কবি বলে সার কোরেছি এপতি।।

#### मन्द्रथत शोती विश्वा

#### পরার।

এক দিন রাজা গিরা গৌরীর আলের। मानव चारवान महा लाटि वनमहा। সামং কলে উপস্থিত রাম বলে আসি। थाक प्रकृष्टिक भोत्रो वरल शामि शामि॥ নিভা নিভা তার সজে পোহাও যামিনী ৷ एं। मारत लारशाह **छात्मा (महे विमानि**नी।। এक मेख अरम श्राह याहे याहे वल। त्म नाती (वैद्यदक्ष मन कादत्रदक्ष भाषना। रहाक्षमान स्यात्रा अथन (बर्जा भिरम मधु। ভালে: यज्र होना মোরে পাইয়াছ বঁধু।। ছ हे भन्नी भंकित्त छम्य अहे माय। वाशिल जरकब मन जरक करब द्वाय।! राम शर्म शाल चलि द्वारत कुम्मिनी। कुशूरम चारेल भान करत कमलिनी।। नद्रत्य दालन साद्र घछिन किगाँह। भारभात्र कृतात्क प्रहेमिटक कानियात्र।।

### ১২০ সভীত্ব চিত্রভান্থ কাব্য।

পুনঃ দৃঢ় শালিকন দিয়াভারে রায়।
শ্বিভ হরায়িত হোরে নিকেতনে যার।।
হইল রজনী রুদ্ধি হয় ছাড়াছাড়ি।
মন্মোহিনী সমীপেতে গেল ভাড়াভাড়ি।।
পতিরে হেরিয়া সতী বেশ ছিল্ল ডিল।
নির্থে পতির অকে সব রুভি (ছিল।)
বিজ্ঞানিয়া সব্তত্ব জানে রস্বতী।।

#### খণ্ডিভান্তাৰ !

#### मीर्घ (ही भनी इन ।

ের্থে পতির বেশা, কামিনী করিয়া ছেব।
মনেতে পাইলা ক্লেশা, বলে একি একি হে।
মনের মানসে রক্তে, বিহারিলে কারসক্তে,
রিউচিত্র সব অক্তে, অনুপম দেখিছে।
কে লুটিয়া সুখভাগ, ভালে সিল্লুরের রগা।
কান্ নিদারণ বধু, নথে ক্ষত কৈলাবধু,
নির্শ করিয়া মধু, নিঙড়িয়া নিয়াছে।
চুয়নে করিয়া ছিল, নেতা গণ্ডে ভিল্লভিল,
দিলাছে ভালুল চিত্র, ভালো ভালো বেসেছে।।
পেরে দে নারীর ধ্যান, কামে হোরে হভজ্বন,
ভার বস্ত্র পরিধান, ক্রিয়া ভো এসেছে।।

ত্যজির। কমলছদ, মণুলোভে বট পদ, কে হকীতে প্রায় বন, বিধি লিপী রোটেছে। নিট্যাচরণ ভত্ত, শুন শুন চফ্রামনে, বৃতি করি গৌরীশনে, এইদশা ঘোটেছে।

> পতি এতি সভীর ভংগনন'। প্রার ।

ে পাৰ ভৱের সংক্রোহিনী করেই হোনের জিলা। अप्रति महता काम ख्यात्मव किस !! রু করু ক্রেমারে এপে ভাতি ভালে শ্রু: ১ জেপর সহল হল সুর'ড লক্ষ্টের ব্রায় ভুলতে মেরে বারে বারে চাও ে হেঃ শা চাক্রি আর মাও মাও মাও। (क्यल क्ष'त क्या छ'तादान भाउत। कः बच्च चनुष्यम नर्यमारे (५ एवं ।। एक विषय है। अपने कि स्थारित किया के कि । जस्तमा हरूल व्यामि (मिथ उन व्यापि । be (नाथ दुवायात्र **छात** (य नकला) াগতে পেয়েছি চিক্ল মিছে কর ছল।; इत्बन्धत (याव्यमध्य जानुनीत्का नाहे। নবনগৌর ক্লিনা গেয়েছ কোন ঠিই। क्षांद्रशास्त्र करववृत्वि स्म नेप्त्री द्रुपको ! নত্র মজিবে কেন মোরে পাইছিল।

ভাবে বলি কুলটা সে মারী অভিপায় ৷ তাই আর নাহি লাগে ভালোহে আমায় !! আমি হৈনু পুরাতন নবীনা সে জন। আমার কাছেতে আর নাহি রছে মন! রভিচিত্র দেখিভাবে বুঝি অনুমানে। বেশ্য হবে হেন কুলবধু নাহি জানে 🕦 চটকে অটক প্রের হোলে ভারকাটে এই জনো অ'ম'রে তাছলা হইয়'ছে!! কুলটা সহিত যে জনার প্রেম হয়। বুলবধু আটি ভার মনে নাহি লয় 🗅 ভাবের বিঘট ৰাথ দেখি দিনে দিন। কভদিনে মোরপ্রীতে হবে উদ্দেশিন ॥ सूर्यथारका व्यागमाथ व्यवनीत नत्न। आभात यांद्राक् निद्यमन ७ हत्र्दा। ইহাবলি অভিমানে কান্দিছে যুবতী। দেখিয়া মলাথ কহে মধুর ভারতী।। व. पन महत थिएत सूर्यम्ह कल। মিখ্যা মিগ্রিকন শোকে হইলে বিকল ।৷ নিভান্ত ভোষার আখি দিবাকোরে কই। েছ'মছি ছে। জনা রুমণীর বৰা নই।। কতকতে তেখারে পেয়েছি নাছি ওর। তেমেরে ভাছেলা কি কখন আছে মোব। বিনয় বচনে রাজা ভূষিছে তথ। **बिल्स एवर ठउँ कदिल वहन।।** 

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

কেন নরপতি তুমি এত নিদার্গ। ভালো ভালো বুঝিলাম তব গুণাগুণ ৷৷ ভালো ভঙ্গা ভজিয়ে ভঙ্গনে দাগা দিলে ভলনের চিত্র গুলা লুকাতে নারিলে। ষা হোক্তা হোক্তুমি ভজন প্ৰান! ঠাকুরাণী প্রতি ছোলে এতেক কটিন:। **প্রাণাধিক যে জন য হারে ভালোবাসে!** সে নাকি ভাহারে ছাড়ি যায় অনা পালো !!] এ কেৰ কামিনী ছাড়ি অন্যেতে বিষ্ণার : পদ্ম ভাজি কেতকিনী শ্লির স্থাকার!! গোপনে করিয়া চুরি না রাখো গোপনে। दल ८एथि ठेरकूद्रागी कि छाविटव मटन ११ স্বীয়া ছাডি পরকীয়া কাছে পতি যান। व्यारह य खेरमा छ। टि कारत थारक मान।। ভাতে যদি ম নিনীর মানে মোহে মন। প্ৰতিকে করিতে হয় সে মান ভঞ্জন !! একবার সাধা মাত্র না সাধিলে নয়। কথার কথায় কোথা ম'ন ভঙ্গ হয় !! জীতে ক্রিয় বলিভাম দেখে ভব ধ্যান। ৰপট দক্ষিণ মত এবে হোলো জ্ঞান !! ভাবিয়া ভোষার ভাব ঠাকুরাণী ছ্খিঃ না ছেরিবে তব মুখ আর বিধুমুখী।। वाका वल वल करव छेशाव कि इरव। कर निश् किटन (मात प्रहे कूल तदन।।

#### ১২৮ সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

স্থী বলে যে মান কদাচ বা থণ্ডার।

চরণে ধরিলে রাগ যায় কি না যায়।।

আনি কোরে দিতে পারি প্রীত তার সনে:

যাদাপি পালন কর আমার বচনে।।

মলাথ বলেন ভূমি যখন যা করে।

না করিব আন তাতে শুন নখি সরে।

সহচ্চিগণে বলে শুন হে রাজন।

ভাদা যামিনীতে তথা করিছ গমন।:

প্রীউমাচরণ বলে মান হবে জীন্।

বিশ্ব গেল তথা করিতে স্বনীন্।

মমোহিনী প্রতি স্থিগণের উক্তি:

ছতি হল ।

শুন শুন শুন গো পতিব্ৰহা।
নায়কে সাধিতে হুইনু রহা।।
কহিতে বিশেষ, অনল কি শেষ,
আদরে লাগিল ভালার কথা।।
সাধিয়া সাধিয়া সন্টপানি।
কাদিয়া কতেক কহিনু বাণী।।
ভোমার ল গিয়া, যামিনী জাগিয়া,
কোদ্যমানে বসি আছেন রাণী।।
ভোমা প্রতি একে আছিল বামে।
অধিক অনিল ভোমার নামে।।
শেষে সবে গিয়া, চরণে ধরিয়া,

### भेजी व हिंदा को सूर्य किया।

শুন ওলো সহচরিং এখন বল কি করি,
না বুঝে করিছু তারে হেলা ৷

মান করি পরিহরি, সে সাধে চরণে ধরি 
বিনয়ে যাচিল রতি খেলা ৷৷
কোপে মানে মজি আমি, ভাজিলাম নিজ সানি,

(म यमि कतिया देश ताना।

জন্য ভবনেতে গিয়া, সেই বিলাসিনী নিয়া। করে যদি স্থাপে কাম যাগা।

্লী মানিনী রয়, অলির কি ভাতে বয়,
কুমুদিনী ভারে রভি যাছে।

অঙ্গ্র স্থিগণ, নাথে কর অন্তেষণ,

আমার তেমনি হয় পাছে।।
১০ গ্রাধীন যেই, কেন মান করে সেই,
নাস্থার খাটে কই জোর।

ভাজিয়া আমার স্থল, তাহার কি ফাভি বল, যে ফাভি সে ফাভি হবে মোরা!

েকে ভ্নোদর করে, ভ্নোলয় সন্দরে, পুরুষ সে পরশ হতন।

অংলি হেন প্রাণধনে, মানিনী হইয়া মনেই করিলাম ভার অ্যতন্যা

মরি মরি প্রাণি যায়, মান কোরে একি দায়, কি হবে সজনী মোরে বল। ম্থিলাম প্রেমদিকু, নাউঠিয়া সুধা বিশ্ত,

उठिल विटम्हम् इनाइन ॥

#### ১২৬ সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাৰ্য।

মলোথে মথিছে প্রাণ, সে বিনানা দেখি তাণ, কর সধী তাহার বিধান। काथा शल छोन्धेन, कारम मुक्त क्र कर, পেরে মোর কাছে অপমান ।। কান্ত বিনা প্রাণেদখি, সকল বিপক্ষ ল'থ, শ্বল সমাৰ এ শ্ৰীল। গুঞ্জরবে হানে শূল, এ দেখ শলিকূল, কলব্ৰ কৰিছে কে:কিল !! विषाक विस्तामध्यम, द्वारी सात देहन (भ य हेर इं जीवरन वियाम। ब्दिकीय सूर्य सूत्री, शद्य द्वर मिल क्र्य, त्रमगैत की वटन कि भाष !! खान अला नहहती, आब ना रेथब्र म प्रव, तकनी याहे ए अक्षत्रात । भाश मिलाइस कारह, जारत मिरल धार वं एक. শ্রীউমাচরণ চট্ট ভবে !!

-

রাজার অভি স্থিগণের উক্তি।

#### পরার !

একপেতে মন্মোহিনী রঞ্জায় যামিনী। কলহাস্তরিতা হোবে তাপিতা কামিনী।। প্রভাতে উঠিয়া তাঁর সহচরিগণ। রাজারে বিরলে পেয়ে কহিছে ভূখুন।।

### নতীৰ চিত্ৰভাম কাব্য।

করিলাম রাজী স্তৃতি প্রণামে।।
রম্গীর কেল এতেক মার।
পারে ধরিলেও অসমাধান।।
যাহা শেষ রয়, তা করিতে হয়,
অনাস্ত কিছুই নহে বিধান।।
পরম চতুরা সঙ্গিনিগণে।
লাগাইল ধ্যান দোহার মনে।।
কেন গুণ ধরে, দিনে নিদীকরে,
প্রিমাচরণ সরসে ভণে।।

শ্ব স্বাধীৰ ভৰ্তৃকাভাৰ।
স্বাধী বিলেগদী।
স্বিত্তগ শুনি ধনী, অধ্যাতন গুণন্তি,

উপজিল সুগ শাধ মনোত্বংখ নাশিষা। আছে কাণ্ড উদ্দীণলে, পথ চাহে ক্ষণে কালে,

হেনকালে রসরাজ মিলিলেন আসিয়া: মুখে মৃত্যাসি ধরি, অপাজে ঈক্তিত করি

লাজেতে ঢাকিল তনু নীলামর ঝাঁপিয়া; পাস্ত্রিন সব ছঃগ, প্রতির সোহাগে সুখ,

পুলকে লোমাঞ্ছ তনু ঘন উঠে কঁপিয়া!!
শুনহে নাগর রায়, নিবেদন রাঙ্গাপায়,

দিলাম যৌবন ধন মনে সাথি করিয়। না চাছিও অন্য পানে, না ষাইও অন্য হ'নে; ভা যদি করিবে নাথ প্রাণে যাবো মরিয়া।

#### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাৰ্য। 200

#### नात्रदगिक्ता लचु-रहीभनी।

কহিছে নাগর, ওণের সাগর, व्याश्रमि या कर् । अन्ता धनी। বিহনে ভোমার, সব শূন্যাকার, দিল ভোষা বিধি, জ্বায় সলিপি, জলনিধি নিধি, অধিক মানি। ভবু বলি দেখি, বদন খানি 🖯 बरसद बडन, क्षय द्राप्त , কভেক যতন, আঁথির মণি। मन्द्रिक त्य कलः जुनिक करी।। রস্থাত যবে, 🔻 🔻 ইবে শনি। ক্ৰিছা ভুলিহ, ক্ৰকাব্ৰি ৷৷

ধন কোন ছ'র, আংণে না গণি। कथा दला धिक, मृशुमास किक. খোভায়ে একাপ, কি কব সে কাপ, विष्युभ ष्यत्रद, अध क्रवा छत्व, বিজের রচিত, পীরিতি ললিত,

> দক্ষতির পুনঃ প্রণয়। প্রার 1

কামিনী বলেন কান্ত কভ কর ভান।। यक काटनाबादमा नाथ काद्य शान काना।।

#### में विकित्यां करिंग

তুমি আমি ভিন্ন নহে কহিছে রাজন। चारमाएक ध्यत्रक्ति स्मात्र न। इत्र कर्यन।। चाइमाला ध्यम्ना चार्श इहे এक चला। পশ্চাতে কহিব আমি ইহার এসস্। পভিপ্রতি সভী ক্ষমা করি সংবি দোঘ ! রভিদানে করিলা পতির পরিভোষ। तमालाभ कलारभन्न ममाख ममम। िका धरीत कथन त्राका गर कश्र। क्रिया किया आम्हर्या लाश्य केंद्र मत्म १ लुक्तं एवन प्रःथं यक व्यक्तिल कीरटन।। যভেক তাঁহার প্রতি আছিল বিরাপ। श्वनि रिफाधती कथा वाटफ अनुत्रांश।। শ্নিয়া আশ্চর্য। লাগে হেরিলে কি হয়। टितित **डाशाद्र श्रेष्ट्र जात्ना निकाल**त्र ॥ র জা বলে ভবে ভূমি পরাণ ধরিবে। क्रिट्ल **इंडरचंट्ड** शिवा हिश्नात मतिट्र ॥ প্রাভর বচনে ভবে কহিছেছে রামা ৷ সুবৰ সদুশ নাকি হোতে পারে ভামা।। भात (मर्थ समद्वत कामिनी भारतक। क्षु नाकि इस शिष्तनीत क्षाय रहेक।। हेट्स त भएकक विमाधती बाटक विमा শচির যে ভাব সেই ভাব নির্বধি।। আছেরে সহত্র গোপী সাধবের রাধা। च्या कामात वाम महीरत्त वाथा।।

#### সভাষাচন্তভামু কবিয়।

একেতে। শতেক কেন হোক্না রমণী। আফিন্য সে আমি আছি শুন গুণমণি। প্রিয়ার বচনে হর্উপজে অপেয়া। কিল কবি কহে গৃহে আনিল নরেশা।

মন্মথের রাজ্য ভোগা। অভি কুত পরার। निः (देव नक् । कर दक छक।। মুখাহলাদে দেছ। নাহি হয় ছেহ।। हाका कट्ट खुर्थ। शहम दकी जुरक त नव (भर कामि। (क्इन्ट् वामी। कड़ि एक दल। मार्ज ज्यक्ला। तकः निक्कन। कृत्येत नमन !! श्कः (काम गार्गः। उत्क अनुतार्गः।। (सर ीक हैके। अरम मरनानिछ।। জ তে:ত্রাধীর। সভো যুধিটির।। प्यांक माम्ब मन्द्र। मामा श्रात श्रीय !! मक्! दीर्घावस्तः है र्घावस करा। भरव अध्य यम्। व्याञ्चलय वर्षाः ছেন মতে রাজ্য। করে নানা কার্যা। विक कवि निष्ठे ! अधिल स्विष्ठे !।

मङा भूरत दाकारकाश करत सदमाथ। नदा नश्लाल तुथ वजूवर्ग नाक।।

পরার ৷

क्षकां करत महाताका करत धन मान। ছুট্টের দমন পণ্ডিভের রাথে মান।। ভাগবত ভূদেবেউপদে মনে। निष्ठाः। কাদীকার প্রতিমুর্দ্তি করিল প্রতিষ্ঠ;।। কিব: কোম যাগ ভার নান। মহোৎসব। क्ति क्रिन इकि ट्याला चकुन देव वर्गा ভাগবছ শুনে ভক্তি করি গরিংসী। हारच देवकटवं द्रधर्मा कति अकामभी।। ল্লাছিনী সভী আর সহ গৌরীবভী। ওুলানার প্রতি প্রীতি রাপে নরপতি।। নানা সুধভূজি ভূপ সহ বিদ্যাপরী। . खाः श्रुपं देश्ल शिल **अ**म्ब्रमादी ॥ নিজাকান্ত: সংক্ষে রক্ষেপ বিলাশা। নিছা নিভা নবস্থ কুছন উলাশ।। এই রূপে দক্ষাতী ভুঞ্জিতে কিছুদিন। সুলকণ যুভ সুত জন্মিল ভিন।। वासाभदत भोगट अविमा छेभा छ्री ক্ষেতে যৌবন প্রাপ্ত ভাই ভিনজন 11 খটাকরি নৃপতি দিলেন পাণিগ্রহ। স্থাপন করিল। এক বিফুর বিগ্রহ।। নানাস্থানে নানা দান রাজা গদ গদ। পুত্র পৌত্র পৌত্রবধু ইত্যাদি সম্পদ। এইকপে কিছুকাল করি স্থভোগ। **जरणटा नृश**ित इकानदा रयाग ।।

প্রধান প্রধান প্রজা জানিয়া রাজন।
জ্যেতির জাজাতার করে সমার্পন।।
সভ্যাশন নামে মিক্রি মহাভাগবত।
সূপতির পরমাত্ম হরিগুণে রত।।
প্রথগ্যে পভোগ গোষে রাজা মহাহর্ষ।
মার কাছে গিয়া ভুগ চাহে পরামর্প।।
উচিত কর্ত্তবা মোরে বল মক্তিবর।
িক্রপে পাইব আমি প্রভু দামোদর।।
বিলয় বামনে মন নাই শাধ জার।
বিলয় বামনে মন নাই শাধ জার।

---

গ্রাণ্যন ম্রির রাজার প্রতি হ্রিভ্রিক উপক্ষেপ :

#### बिलमी!

মন্ত্রিবলে মহাশয়, সংসার অনিভামর,

অগ ভাতে অনর্থের মূল।
বাড়াইয়া মিছামায়া, ভাই বন্ধু মূভ জারা,

সেই ভত্ত বত্ত্বে প্রভিক্লা।
সালির জানিহ ছায়া, নমার আপন কারা,
জীবন জীবন বিমুপ্রায়।
কবে আছে কবে নাই, নিশ্চয় জানিয়া ভাই,
রাধোনন সেই রাজাপায়।।
বেই প্রভু নারায়ণ, নিরাকার নির্প্তন,
বিভাময় সভাসনাতন।

# সভীঘ চিত্ৰভাম কাৰা। ১৩৫

সর্বব্যাপ্য সর্বেশ্বর, তারপদ সারকর,

এড়াইবে ভবের বন্ধন।।

একান্তিক করিমনে, যেই ভলে নারায়ণে,

সেই পার তাঁহার চরণ।

জিউমাচরণ বলে, হরির চরণ ভলে,

দীনে কুপা কর নারয়ণ।।

## यम्मर्थद्र कीर्यशकः । विश्वमी ।

প্রবিংক্য করিজয়, স্থ্রীকেতে মৃপবর;
চলিলেন তীর্থ পর্যাটনে।
বারানশী রন্দাবন, আদি ভীর্থ দর্শন,
করে রাজা আনন্দিত নতন।
নাথেতে প্রাণ্ডো স্থান, করিয়া বিপুল্দান,
কতদিনে অযোধ্যা যাইল।
গঙ্গালাগর সক্ষমে, প্রভাস পুরুষোভ্তমে,
নরপতি সুথেতে ভ্রমিয়া মৃপতি কত্ত,
আবশেষে গেলা তপোবন।
সাধিতে তপন্থাবিত্ত, হরি পাদ প্রেপ্তুচিত্ত,
ঐকান্ততা করিয়া রাজন।
ভ্রতঃপরে জায়া পতি, যোগধর্মে দিয়ামতিন
ব্যাগাসনে বদিলা ছ্লন।

ভজিরুসে হোরে মান্ত, চেন্টাকরে সারত্ত্ব,
করে দোঁহে বিশুর স্তবন।।

ক্রীউমাচণ কর, কুপাকর কুপামল,
মম বাক্য ভোমার অ্যোগা।

কৃহিছে ভক্তি জোরে, এই ভিজা দেহ মোব

---

ত্রিসমারিংশং বর্ণে বিশ্বুর স্তব। পদ্মার।

মানুত অনস্ত অন্তর্গ নি অন্ত কেতা।

অপীনে অন্তর্গ দেহ অর্বিন্দ নেতা।

অপীনে অন্তর্গ দেহ অর্বিন্দ নেতা।

অপান্ত আকার হীন আকাল আগ্রা।

ইন্তাকরি ইচ্ছাময় দেহ পদছারা।

ইন্তাপুল্য ইন্তন্য ইন্দীবর কারা।।

উপোন্ত ইন্তন্য ইন্দীবর কারা।।

উপোন্ত ইন্তন্য ইন্দীবর কারা।।

উপোন্ত ইন্তাশ আল্র ইন্তামি।

উপোন্ত উল্বাশ দাভা উৎপাতক অলি।

উপোন্ত উল্বলা দাভা উপোন্ত আলি।

উকার স্বল্প উনপ্রাশের স্থামি।।

অহারত অনুক্রেপ খালিগণাচিত।

খালিকাণা ভূমি খালিপ্তির বন্দিত।।

# সভীত্ব চিত্ৰ ভাত কৰিছ

ৠবৰপ কিন্তু ক্রীড়া সদা (ৠর ভলে। ৠপভির রিপুকে না ৠ অর্পিলে ছলে!৷ এক একাধিক ভূমি একাছা অনস্ত। একে একে সৃষ্টি এককালে কর অস্ত ৷! वेहिक वेश्वर्या वेस्त कालिएकत्र व्यागः। ঐরি তুলা ভাবে মন ঐ রাঙ্গাপায়।। ওঠাধর রক্ত প্রভা ওদন প্রদাভা। ও বর্ণে ও শক্ষাগে বিভূবন আভা।। उष्ध ऋबाल जून उम्राद्धः अध्यक्। **উর্ঘে উদ্ভৃতি তব ইন্দ্র ধাতা অর্ক**।1 কঞ্জিপাসিকু ভূমি কৃতান্ত ক্রীন্দ্র : কিন্তবে কণিকাদানে কেন হে রূপণ। शेरशस्त्र योङ्न २ की थला थर्ककाती। িন্ন আছি ভব খেদ খণ্ডাও মুরারি।। গেপশিশু গাবি বৎস গোকুলে পালন। জীয়তে গোপৰে লীলা সহ গোপীগণ।। वनकाम चनात्म हन्त्र चन मातू। বৃণ্যে ঘূণা ভাজি শংঘ্রি দেহ এইবার 11 ঢকী চক্রপানী চতুর্জ ফিরে চাও। চিন্তামণি চিন্তি চিন্তে নিশ্চিষ্ঠ করাও।। হল ছাত্র ভূমি ভূমি গুরু চারি বেদ। र्ल इन्हें किल्ल बलि पर्श करित इन्। নর কোতি**র্মার জগরাথ জগ**রায় ৷ त्या कत्या कठेत याखना नाहि नगा।

युन् रून् रून् युन् मञ्जेत यक्षिक। क्षत्र कात्र कारत मिका मिकात कांग्रिका। हैनाहेन सामि भारभ थान हेन हेन। **छेलिटल** छे। निका छिकि लटव यम दल !! किलना ठाकुत ठ खाँ (मह ताजाशाम। ठिक नहें ठिक हहें छिकिया अभिएए।। ভরকুপে ভুবিয়া ভাকিলে যায় শকাং ডগমগ হর তনু বাজে তার ডকা । ঢক আমি ডলেছি ভারিতে নাহি কেউ! वनावन व्यक्त नार्श विक पूक्षी व्यक्ति। ভনু ভব ভরজিণী তত্ত্বে ভত্তভান : ভনয়ে ভুরিভে ত্রিগুণেশ কর ত্রাণ 🗅 ধর ধর কাঁপি স্থির নহি ভব সায়। ডিভিনাথ ডিঙে জুল দেহ রংজাপার 🖰 म एम, मह मनू अ कुमन मह मह । इ.१ मृत कत मीटन मिता भाषां हा। ধর্মাধ্যক্ষা গর'ধর ধারি ধরাজাভা। थाएन थाण्यां अदा ध्वा श्रीम धाणा। নক্ষ্মত নর্সিংহ নিতাস্ত নিঞ্গা নরক নাশন দীনে নছ নিদারুণ !! পরম পুরুষ পূর্কাপর পরাৎপর। ध्येपरम ध्यममापादक श्रेष्ठ तका कर ॥ ক্ৰি ব্ৰাজ্ঞামী ক্ৰি ফ্ৰাপিছ পদ। क्ल (मर्क्ती कृषि देकवला कलम।।

ভগবান ভবভাব্য নাশি ভ্বিভার। ভিন্ন ভাব ভাগিভক্ত এনছে বিচার। মহোদ্ধি মন্ত্ৰে মন্দার পৃষ্ঠদেশে। নারাতে মোহিনী হোরে মোহিলে মহেশ।। २ ज्ञांथ राज्यमंत्र गर्मामा **बन्सव १** রন'নাথ রমারমা বুক্তা পদ ছবি ! कम्भे इक्षक बाग ब्र**क्ट लूक ब्रदि।।** লক্ষ্টি ভ্ৰেক্ষী লুক্ক ললিত লাবগ্যে! लिल (में के लाखदीन लीला विकाद्रणा ।) विक् वहकाक। विशालानि विदन्तन। বিপাক নাশক বিধি রুষভ বাহন।৷ শাসং শস্তাভক শিশ্য শাশ্য শন্ত ওর । শরীরে শর্কারিখর শ্রাশন ভুক্ত গ বভদুজ বড়শান্ত বড়রিপু বধ। व डेक्स एक्स अध्यास्त्र बहुसमा। मर्खवाणी मर्खामीन मर्द्य मात्राध्मात्र । मण्डम मण्या कि कब्र मक्क मरमात्रा। क्लाप्तुर्वे (क्: दश क्ल क्टब्र अदिकास ! হরি হরি হয় औব হবে কি সদুর।। ক্ষেত্র কিরোদ শামী ক্ষেত্ত কর কর। किर्वत क्रिकः कीट्यं (पर अपाध्य ।।

## मण्याच्या देवत्या श्रीखा

## তিপদী। '

এই রূপে যোগাশনে, তার করি নারায়ণে, খ্যানযোগে, ভাজিল জীবন।

चाहेल कुसूम त्रथ, क्षिट्ट हारत विक्रुवह, रेवकूर्ण्ड क्रिल गमन।।

(कह्व। भूकुकुहरतः, भूक्शभाना मिल गतन, (कह (मन्न भीडल कोरन।

এই क्षिण सदा मदम, विक् पूर्वेश तदम, উত্তরিল বৈশ্ব ছবন।।

বিযু দুভ করিংল্লং, চামর চুলায় কেছ, কেছ দিল সুগন্ধি চন্দন।

आर्वित्मत छन्।। अञ्च देश्ल नम्।।

এ। গুরু চরুণে মন, করি এই নিবেদন;

পূর্বকর মন অভিলাশ।

প্রবংগ মধুর প্রাব্য রচিল ললীত কাব্য, প্রাটমাচরণ কালীদাস।

नमारक्षात्रर अस्।।

# সভীত্চিত্ৰভানুকাব্য।

-

निकाली निवासि

গুণুক্ত ভিযুক্ত টমচেরণ চট্টোপাপ**্রায়** 

কৰি নহাশ্য কন্ত ক

শ্বীয়ধ প্রবড়ে **শ্বানাবিধ ছল্ফে বিরচিত** ১

हे मानी

শীখৃত বিশস্তর লাহার

चारमभानुभारत । ...

## কলিকাতা।

চিতপুর রোড্ ৯৭া২ নম্বর কবিতারত্বাকর

यालु मूखिक ध्वकामा रं**रेंग।** मकः २५৮२ मार्-२० कृतिका व्यापि विस्तृ পत्रिस्म ७ यप्न भूतिक धरे चिन्न वर्गीवा প্রস্তুত করিলাম। ইহার অধিকাংশই মতাচিত এবং विद्रम्थम जेन्त्रथे ७ व्यामा माना अप्टाक्ष । এই পুस्रक बुविरदेहक भाठकवर्ग मत्नारयांग भूकिक भाठे कतिल 📆 रेतरम मत्याहिक इहेट्ड शातित्वन, वित्मवंडश वन्नीत খ্লীলোক ইহার বিবরণ বিশেষ ক্রপে জানিলে সভী ত্বের্ উपाइत्र खक्तरा धर्माकान गिकाकत्रिया छमनूनवरा नमधी । हेट्या अक्तरण मञ्चमन शार्ठकर्गण मन्निपादन **स्वक्ति मरमाभरन** मागात निरत्मन धरे, य उँ हाता अनुकल्ला श्रकाम शूतक শর এই গ্রন্থের আদ্যোপাস্ত এক এক বার পাঠ করেম, । ११ १ हे एल है जामात्र शत्रिक्षम मार्थक विद्वाहना हम्र । १ এই পুস্তক খানির রচনা সমাপ্ত হইবা মাত্রেই গ্র জনারস্ত হইয়া**ছে, সুতরাং সময়াভাবে কোন পত্তি**-ভর ছারা সংশোধন করানো হর নাই, অভএব ইহাতে াচনার কিয়া ভাবের দেখি থাকিবার সম্ভাবনার ভাবনা দবভাই করিতে হয় কেন না আমার অংশ বৃদ্ধি অর্থাৎ মজ্জের পুত্তক রচনা বিষরে দোষ বিরহ এমত কোন মতে हिटल পारत ना, किख जरणारवाकात्र विषया नाहम अहे, য সরল স্বভাব সাধুলোক শূর্পের ন্যায় স্বভাব গুণে গুণ হণ পূর্বক দোষ পরিভাগে করিছে তাটি ক্রিবেন না! एक आगका ७ रहेर्डिक शाहर अमाधुता हालर्जत नात ভাব বশভঃ সারভাগ ভ্যাগ পুর্বক অসারাংশ এত্ণ एउन, छ।, कि कड़ा यात्र।।

## अञ्चिष्टर्गः भद्रगः ।

#### の変の対象

### মঙ্গলাচরণ ও চিতাহাবা:

জী কানীর পদায়ুকে, মজরে স্থমন। B कात हरेत्व . अत्वः (कैं। दिवस अमन । १ ब्या बाटड कि ब्रक्ष (इ। द्वा, त्रत्व छित्रपिन। চ রলে কি হবে, নাছি ভাব কোনে। দিন।। রক্ত নিশ্চিত কেনে, এরে মৃত মন। ণ বৰণ কলি ৰূপ, চিত্ত অনুক্ৰা। ह एल স্ভাব তব। বুঝালে বুঝা। हिलाउँल शारत जुमि, करन कि जानना।। हि लिल है। निया हि कि, लाव यम वल। श्राप्त यात्रीतन, बन्न मू पिता। य रमत गमत शम, त्य शम श्रृक्तता।। क दत्र य खर्गानाम मित भक्ष भूरथे। বিধাতা জপেন যেই, নাম চতুৰুখো " বি-শ্রম্যী ভারা যিনি, সংসারের সার ৷ त्र कि निक द्वार्थ मन, क्रिक्तरन छात्र।। ্চি-ভিড হোয়ো না মন্, এ ভবে ভরিভে ৷ .ज़ि ड़िटर खराय, क्रांसी जस । शक किरक ।।

নিৰ্ঘণ্ট	পত্রংগ	r 1
<b>उ</b> क्तरर्गन	•••	્
সরুস্তী বন্দ্রা	• • •	Ţ
कालीकात छर		3
গ্রন্থ পরিচয়	•	œ
গ্ৰন্থ সূচনা	•	9
ঞ্জু শিয়ে করে পক্তন		5
		25
ম্যোত্নীর ভার দশ্ন	••	17
কুমার প্রতি স্থীগণের প্রবেধ দান		> <b>?</b>
মংমাহিনীর ভিটায় স্বপ্ন দশন	• • •	\$ 9
নিজাভকে মলেগ্রনীর বিলংপ		<b>&gt;</b>
হ <i>েলুং</i> হিনীর আংকোপ উজি	•	30
সম্রণ র জো'র ইভিহাস ••	• • •	<b>:</b> >
সংস্টেষীঃ শিবার(ধন) 🕟		8 2
मम्द्रिक दिन्दर्	••	<b>\$</b> >
मन्। थिय कामन (अक्षा	•	. •
<b>मू</b> क ममःक	• • •	8.
্মনাথের বিরহ বিষ'দ	* ***	8:
মন্যোহনীর বিরহ্ও বসক বর্না	•••	85
রাজ্মহিধীর প্রতি স্থীগণের উক্তি		¢ 8
<b>अ</b> त्रवता উर्फाश		CS
মনুথের সরোজ নগরে যাতা	***	61
छम्मान वर्गन	•••	63
নায়ক নারিকার প্রস্পার দর্শন	***	ဗ္
भटना हिनोत हे छ। वही	•••	, her

760

#### বিথা বালক বেশে বিষ্ণুর দেবগণের সহিত মন্যোহিনীর পতির প্রাণদান নিমিত্ত কথে।পকথন ন্সন্যোহিনীর পভির জীবন প্রাপ্তি ও দেবগণের স্বস্থানে গমন ও মনোগাঁহনী পতি সহিত গৃহে আগমন ও পৌলব মুনির বাকাফু ৰ্ছি F15 মন্যুবের মৃগয়া ও গৌরীর মৃগীদেহ ভাগে 200 भोजी विमाप्यद्रीत পরিচয় 222 বিদাধেরীর প্রতি রাজার প্রত্যুত্তর 220 মালাবভীর বিলাপ ও ইন্দুউ ক্ত > & মন্যথের গৌরী বিহার 12% থভিতাভাব 250 ণ্ডিপ্রভি সভীর ভংসনা >>> मध्यमी वर्ग >> 5 कलहास्त्रका दर्ब >> 8 রাজার প্রতি স্থিগাণের উব্জি ১২ ৬ মন্যোহিনী প্রতি স্থিগণের উক্তি >> b স্বাধীন ভর্ত্তাভাব 252 নায়কোকি 3.30 দল্পতির পুনঃ প্রণয় क মন্যথের রাজ্যভোগ > 52 দত্যাশন মল্লির রাজার প্রতি হরিভক্তি উপদেশ 🦠 > ७8 মনাথের ভীর্ যাতা 30C

जिठकाङ्गिरणः वर्ष विकृत खव

मन्निहित्र किंतुना ब्राप्ट ७. अन् नगाथ

**. 66**.

विश्व वालक (वर्ष विकूत	भवश्रापत्र	<b>স</b> হিত	मत्राहि	<b>(बीन्न</b>
পতির প্রাণদান নিমির	ड क्रंरशंश	কথন	6	> 8
মন্মোহিনীর পভির জীবন	প্রাপ্তি ও	<b>न</b> दश ८ १ ३	। उद्गा	গ গমন
ও মন্মোহিনী পতি সহিত গু	(इ चान	मन उ	পৌলৰ ম	(নির
বাক্যফূর্ব্বি	6	6	6	5.3
मन्तरथत मृगवा उ गोतीतं	<b>मृगी</b> टम ह	ভ্যাগ	6	202
গৌরী বিদ্যাধরীর পরিচয়	•		6	>>>
বিদ্যাধরীর প্রতি রাজার	প্রভার	4	6	22.9
মালাবতীর বিলাপ ও ইত্র	ই ক্ত	6	•	> 5
মনাথের গৌরী বিহার			6	::5
খড়িত।ভাষ • •	•	•	. •	:50
শ্ভিপ্রতি সভীর ভংগন।	•	6		252
मानिनी वर्गन 6	6	6	6	३२७
কলহাত্রিতা বর্ণন	4	6	6	>> 8
রাষ্কার প্রতি দ্বিগণের উ	<b>ब्रुष्ट</b>		6	३२ ५
मत्नाहिनी खें छ मसिशरी	র উক্ত	•	6	>> b
স্বাধীন ভর্ত্তাভাব	6	•	5	222
नाग्रदका कि			6	300
দম্পতির পুনঃ প্রণয়	•		4	Ā
মনুথের রাজাভোগ	4		۲.	<b>&gt;</b>
সভ্যাশন মন্ত্রির রাজার প্রবি	চ হরিভবি	<b>डे</b> शत	मंत्र) (	> 38
ममुर्थत छीर्थ याजा	6		<u>s</u>	200
विष्ठपातिरमय वर्ण विकृत	<b>स</b> व	4	6	200
मन्भ कत देकदला ब्याख ज		মাপ্ত	6	>80
চত্ৰকাৰা			_	

## প্রীক্তর্গ। 1 শর্ণং।

#### THE PRINCE

## मक्लाह्य ७ हिक्हावा।

জী কালীর পদাযুক্তে, মজরে স্বমন। छ कात इहेटव छटव, ह्याँटवना भगन।। मा साटक कि बुक्ष (इ। दस्त, त्रद्व हित्रिमन। D त्रत्म कि इत्त, नाहि छात कात्ना मिन।। র-য়েছ নিশ্চিন্ত কেনে', ওরে মূঢ় মন। ণ বৰণ। কালী ৰূপ, চিন্ত অনুক্ষণ।। D क्षत चर्वा चर्व व्यास्त वृक्षता। हिलाउल शारम जुमि, क्तान कि कामना। है नित्न है। निहा हिकि, नद्व युम् दल। शा त (हाटक का अ यमि काली काली वल।। अऽा.म याद्र त्याजीलन, नमन मूमिया। स्र स्मत यमञ्ज शम, त्य शम श्रृ भित्र।।। क दिन (म श्रामिशान मित शक्ष सूरथः। বি-ধাত। জপেন यहे, नाम हजूमू दिया। वि-अभन्नी कात्रा विनि, नश्नाद्वत नात ! त कि निक्ति ताथ मन, कि हत्र के जिला हि-खिक रशरता ना मन, अ करन कतिराकी

विश्वके विश्वक	পূত্ৰ কে !		
विकार्यम		٠	
जेन्नेच्छी दनस्त्रा		·A	
कालीकात खव ' '	6	8	
গ্রন্থক (রের পরিচয়	•	¢	
अंख् स्टूहरा	•••	9	
धक्र भिर्या करशे अक्थन	• • •	2	
গ্ৰন্থ	•••	2.9	
মৰোহিনীর সংগ্র দশ্ব	4	> <b>&gt;</b>	
কুমারী প্রতি সখীগণের প্রবোধ দান		<b>२ २</b>	
মলোহিনীর ভিতীয় স্বপ্ন দৰ্শন	•	२८	
নিজাভজে মজোহিনীর বিলাপ	***	> 3	
মন্যোহনীর আক্ষেপ উক্ত	• •	150	
সম্বৰ রাজার ইতিহাস	•••	ঙহ	
মন্মোহিনীর শিবারাধন।	••	80	
মনুপের বিবরণ	• • •	82	
মনুবের কানন ভোজন	***	8.5	
मूर्क मञ्चाप	•.	18	
मन्द्रार्थत्र वित्रह वियाम	4	<b>f</b> 8	
मदम्त्राहिनीत वित्रह ७ दमस वर्गना	•••	84	
রাজমহিনীর প্রতি নধীগণের উক্তি		¢8	
।त्रवता উप्पान	• • •	69.	
নুথের সরোজ নগরে যাতা	•••	43	
मान वर्गन	•••	63	
ারক নারিকার পর্স্পর দর্শন	***	75 m	
rarefra and meral.			

#### धकावली इन्छ।

(रुद्रश्च खन्नु अख् छे (शब्द । क्षेत्र भूबील मनु मरहत्तु।। खडमा भारतमा भवा (य करन। নিয়ত ভাবেন একই মনে ৷৷ (मेरे मर्सियंत्र अपूर्ण अस्त ! (महे ब्रह्मायन ममाहे जन।) ভপ পরায়ণ একান্ত মন। ব্দমর অসুর মনুক গণ।। যোগারুড় যোগী সাধু যে यভ। ক্ৰপিয়া জনম কাটালে কভ।। ্তথাপি খাঁরে না *হেঁ*রে স্থানে। অরণারে মন সে সার ধনে 11 निर्श्व निर्देश नाहि विकात। ভক্তের কারণে হন সাকার 🛚 श्रकृष्टी श्रकाम गांत्र हेम्हात्र । মজ ওরে মন ভাঁহার পার।৷ সরস্থতী বন্দনা ৷৷

नव्रच्छा वन्सना (ङाहेक **इन्स**ा

প্রের ভারতী খেত সরোজ পরে। বিসি খেত বীণা ধরা বামকরে।। চরণাযুজ লোহিত পত্ম জিনি। মণি মঞ্জির সিঞ্জিত ভ্রস্থনি।। রামরন্তা উরু গুরু নিত্রিনী।
শেত স্থার বাস পরিধারিনী।
মণি মেখলা কিন্ধিনী তাহে সাজে।
কটি হেরি মৃগেন্দ্র পলার লাজে।।
কুচভার বিনন্তিত শেত তন্তঃ
শত চন্দ্রমুখী ভূরু কাম ধন্তঃ।
মৃত্ কর্জেল উজ্জলিতো নয়নে।
দেখি ভঙ্গি কুরসী পলার বনে।।
চারিবেদ চতুর্দিশ শাস্ত্র মন্ত্রী।
শেব মানস নিতাস থাকে স্বিয়া;

## ক্লৌকার শ্ব !!

<del>--:</del> :=

#### (जाठेक इन्स।

মা শুভক্ষী শক্ষট শাক্তি করা।

ত্বরী দীন দরামরী তৃঃধ হরা।।
পরমেশ্ররী শক্ষরী সিদ্ধি দাকী।
সমনত ভরে ত্বরী ত্রাণ কতী।।

ত্বরী মুক্তি বিধারিনী ভক্তি প্রদা।
নরাধম জনে শুভদে শুভদা।।

ংবর হৈমবভি, বারেক নরনে।

তব বন্ধনে বন্দি জ্ঞানাক্ষ জনে।।

ত্বরী ব্রক্ষমনী ত্রিলোক ভারিনী।

ত্রী ব্রক্ষমনী ত্রিলোক ভারিনী।

সুরধুনী পূর্ব পারে অতি ভদ্র গ্রাম। মুলাযোড় সল্লিকটে নওপাড়া নাম !! ভথার বস্তি নাম শ্রীরাধামোহন ৷ চাটুভি উপাধি যাঁর বিখ্যাত ভ্রন।। (वम् छ उ छ छ इ से निर्भ ष छि गत्र। ছিলেন সুশীল সুপণ্ডিত সদাশয়।। জীতেন্দ্রি ধীর দাতা সভ্যপরায়ণ। व्याम्बर्धा वाग्यात यात लीला नत्रत्र ।। निमध कतिया रमह काङ्करीत मीटत । যোগাবলয়নে প্রান তাজেন সচিরে !! ভাষার ভনয় তার বড় পুণ্যধর।। कामा बीबीनाथ यिनि शुट्धत मानेत il দ্বিতীয় শ্রীনিলকমল কোমল হৃদয়। তৃতীয় শ্রীরামরত্ন রত্ন সম হর।। छमञ्जू कहि जटव कत्र व्यवधान । জাত্রবীর পূর্ব তটে নৈহাটী ভাব্যান।। অতি অনুপম গ্রাম তিদীব সমান। भिव-करभ यथ। वितारक्षव क्रशेवान।! -टेनम्भीक स्थितन विमा यथादन। সভত হৰিত হন শাজের বাধানে।।

बीमान यटक नद्र धर्म भद्राप्तन। . যাগ যজ্ঞ দান ধ্যানে রত অনুক্ষণা শ্ৰীকাশীৰাথ ৰাম এন্থাৰে বস্তি। वत्ना छेभाधि यिनि भाख भील अहि ।। পরগণা হাবিলিসহর মধ্যন্তিত। ক্ষিণারি আছে তার লোকে বিস্তারিত।। পৃথিবীতে সন্তানেতে হই রা নৈরাশ। मिह्छ नकरल चानि कद्रात्नन वाता। শ্রীনাথ শ্রীরাম রত্ন শ্রীনিল কমলে। **उम्बंधि वाम क्रिलम এই** ऋता। ঞ্জীনাথের ভিন স্থত নগেন্দ্র মধ্যম। কনিষ্ঠ গ্রীভগবতী চরণ উত্তম !! **উভা**রেই শান্ত দান্ত স্থঠান স্করে। नर्वछर्ग खगाचिक च्रथस्यं ७०भद्र ।। ध मिश्त कार्छ चामि अडेमाहद्रव।

অহ রহ তদে অরি জীউমাচর্ণ।৷

# গ্ৰন্থ সূচনা

হেম শ্রু পর্বতের নিনুস্থ সভা সেতু দেশেতে জ্ঞান সিকু নামা এক অতি বিনীত পরব্রহ্ম পরায়ণ সভ্যাচারি ব্রাহ্মণ বদতি করিভেন, তাঁহার ভাষ্যার যৌবনাতিক্রম হই ভথাচ সম্ভানাদি হয় নাই, ভজ্জন্য বিপ্ৰ এতিদিন বিরুদ্ স্থলে যোগাবলয়নে কহিছেন, "ছে পরমেশ্র; ধরাভা ভবতুলা মহা শিশ্পী অচিস্তনীয় বিচিত্র নির্মাণকারী শা কেহই নাই, অভএব সৃষ্টির মধ্যে দৃষ্টান্ত ভার। ভোমার বর্ণন করা পশ্রিভ বর্গের ক্ষমভাতীত, **আ**র তুমি ভগ্ন চৈত্র স্বৰূপ হইলেও যথার্থ ৰূপে ভোষার স্বৰূপ কে জানেনা, ভূত তবিষ্যম্বর্তিমান স্থাবর জলম চরাচর জীব জীব ক্রিরা শক্তি, সকলই ভোষার, শক্তির অধীন, ব্রহ্মা বহিভ্ত যে ভোমার অনস্ত শক্তি ভাছাতে সম্ভবাসম্ভব সৰ্ লই স্টতে পারে, অনভিতঃ স্ব দর্শিরা ভোমার শতি মাহাত্মো নীমাবদ্ধ করিয়া নাস্তিকতা প্রকাশ পূর্বক পৌর ্রণক বর্গকে উপহাস করে, কিন্তু পৌরাণিকের। নিকর ্জানেন পর্বান্তর্ব্যাপ্ত পরমেশ্বর বাজীকরের বাজীর না জগন্মগুলে নানা বিচিত্র সৃষ্টি করিয়াছেন, খভএ ভোষার শক্তি <del>মাহাত্রেট যদি</del> আমার সন্তান জর্তে ভবে আমি জানিব সর্বাশক্তিমান প্রমেশর সামা

প্রতি অধিক অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়াছেন " ব্রাহ্মণ প্রতিক্ষণ প্রমেশর সমীপে এই রূপ নিজাভিলাষ প্রকাশ করিবাতে বছকালের পর তাঁহার এক পুত্র ইইল ভাহাতে পূর্বেন্ছ সদৃশ নক্ষন মুধ নিরীক্ষণ করিয়৷ সানক্ষিত বিজ বর বহবারত্তে জাত কিলা সমাপন পূর্কক নবকুমারের নাম সমস্ত রাখিলেন; সমস্তর ক্রমিক বৃদ্ধিত বিপ্রান্দন পঞ্চম ব্যারি হইলে পর ভাঁহাকে নীতি বিশারদ এপিতি নামক আচার্য্যের নিক্ট বিদ্যা শিক্ষার নিযুক্ত করিলেন ভাহাতে विश्वकृषात्र वाला कालावधि नौकि भाज, नगात विश्वकिष् ৰানা দৰ্শন পাঠ করিয়া বরঃপ্রাপ্ত ক্ইলে পর গুণিগণ নধ্যে গণ্য হইলেন এবং কিয়ৎকাল গতে তাঁহার পিতা সীয় প্রেরনীর অভিলাষ মতে ঐ মনোহর পর্বত শিখর বানি रवारशस्य नामा महर्षित त्रष्ट्रवाला नामी कनात नहिल थिव ুকুমারের বিবাহের সম্বন্ধ হির করেন, কিন্তু পুত্র এই ৰূপ विवाद्दित कथा खारण कतिहा। जरमात्र ज्यमात्र त्यांथ कत्र्ड ভপস্তার্থ অরণ্যে গমন করিতে উদাত হইলেন, তাহাতে ্রাহ্মণ ছঃধিতান্তকরণে শিক্ষাচার্য এপতি মহাশরের সলিধানে গমন পূর্মক পুরের বিবাহের অসকতি বিবরণ ্ৰিক্তাপন করাতে এপিতি মহাশ্র অনস্তকে ডাকিরা দার পরিগ্রহার্থে ছিড বাক্য কহিছে লাগিলেন; শিব্যও স্থাভিমত वाक क्रिए लागित्व।।

#### श्रीवात ।

र्खन निया सामात सहस्र। निवात बाटनन वानु कत्र शालन ॥ नरनाद्वत्र मात्र शिष्ठा अग्रमाष्ट्रा इन्। शिकु चाका क्कू तान् (कारमाना (कान ।) र्वाब नमान वस् नावि काम अन शुरकात कातुर्ग रह काका सरक्षांकन मु পिভার नकत पन जान अपन । बाहात कात्रत्व हत्र जस्त्राह्य यख्ना ॥ পিতার তুমিহে দেখি কেবল সন্ধান ১ श्र णाम वरन बादव क्यम विश्वास्था करास राजाल यकि सहस् अभवता নিভান্ত ভোষার প্রিভারিবে দীর্থী णारे दलि कर बाल त्रमती असम्बा सूर्यरक हुरेरव अब कीत्व यानव।। कुमात अनिता मन् अस्त आर्गमा . न रिटक काविता जारत कतिता विद्नाय ॥ द्विष्ठ मालाति कुत करिस्त (क्यस । चार्थात विश्वादम कृति (बरमन कम्मा नगानान शिका किति नकारत (व कर्गा र्थां भरि । कि कि कि कि कि कि में त्मरे निया तारे अक नया रत तारे। रति श्रेष केविवादत मेकि श्रेष द्वारे ॥

य रोशि वालक करते कूथरथ शबूबे। कक्रणा जानेन शिका क्रांट्स नि क्रिंगा। शिकाः द्वारकः रुद्धिः श्रृक्षां कदिशः निरवध् । विषदत्रत्र क्षत्र्रीक त्मन् और वड़ थिन।। এ সংসার মহা ঘোর অহাকুপ ময় । প্ৰড়িলে নিশ্বার গুরু কন্তু নাহি হয় ৷৷ নিস্তারে বীজ সেই পুরুষ প্রধান। निद्राकात निर्मिकात नर्स भक्तिमान।। ভক্তপ্রির ভগবান সকলের সার। ভক্তি বিনা ভব হোতে নাহিক নিস্তার !! এমন আগোরে ভাজি মূদুলন গণ। विषदम् क्रियुक्त एत नाटभन कात्रन ॥ ধর্মের অমৃত ভাব কেন বা তাজিয়া। विवय शंद्रल भाग बाटभंत्र लाशिशाः। की एमन बील निया क्याद्र प्रत्नान। শীপ্র শিয়া তাহে পাঁড় হারার জীবন।। শাহলাদে প্রফুল মীন আহার দেবিয়া। ভক্ষণ করিতে যার কিছু না ভাবিয়া। शिलिएन टेम्डमा शाम विकित्न भनाम। পরিশেবে অসভ্যোবে করে হার হার।। वियतित्र (महे क्षेत्र व्ह ज मरमात्र। , वियाक विषय १८० माहिक निष्ठात्र।। **जरु** अव दिस्मा दिस्मा दिस्ता। কানিয়া এ বিব পান উচিত তো এর।।

বম্গী কুছক ভার ভর্তনর সন্দিরে। প্রবেশ করিতে জাম পারে কোন বীরে 🔢 व्यवादारम युख्य देव्हा कदिएस विवामा। কাম উপভোগ হেডু বাড়ায় প্রয়াস।। महा (मार्ट्स मन मुख्य करत व्यवित्रक) তপতা কেমনে হবে জ্ঞান হলে হত।৷ এ সংসার কারামার একে ঘোরভর। যাহাতে রমণীগণ পাপের আক্রা। ञ्जूकि कतिर्देशं त्र्यम कृत्वि चाणात्र। অনিত্য বিষয় ভোগে সদা মতি যায়।। গৃহির গৃহিনী হয় ভূভীয় প্রকার। সাধী ভোগ্যা কুলটা বিখ্যাতা নাম যার ৷৷ পরকালে সুখ আর ইহকালে যশ। मना माधी बाङ्घा करत्र शिक्ष कर्त्रि वर्गा। 🖖 ভোগ্না ভোগাৰিনী কাম স্নেহেতে কেবল। পতির করমে সেবা বাছে ভোগ ফল।৷ বস্ত্র অলফার ভোগ পার যকক।। ছুত কুণ নিজ স্থামি করুরে দেবন।! জানতে। বিশেষ গুরু কুল্টার ভাব। क्ला श्रामित्र (मदक महनटक कूकार।। পর পুরুবের মন সদাই যোগার। 🥕 মূতন মূতন কাৰে নিত্য মন যায় ৷৷ উপপতি লাগি নিজাপুড়েরে-বিনাশে। कि कि श्रिम करम एक माल विश्वास ।

भानूय जान्दिकं नारत् मेलनात भना क्वित कार्यम विष्टू विका जनावन ॥ क्ष प्रदान थात्र अध्य कर्म ञ्चामत्र वाका जार्थ निक्षित्र कात्रत्या। নর হৈতে নারী দেহে কাম আট এণ ৷ काशत विश्व चात्र वृक्ति ह्जूक्षि।। ইত্যাদি অনেক আছে নারীর লক্ষণ। करिया व्यवस्य कत्रिष्टम् निर्देषम् ।। विके। मूज भूत सार्व किवा सूचे इत। **क्या हानि निवालात्य इत यथ क**त्र।। পতি প্রীতে অভ্যাশকে ধন দেহ নাশ। दियान कतिरल भीख इह नर्सनाथ।। यह कर करह एक लक्ष्मी थाटक चरत । **च्टक्ष शुक्रायत मात्री (ज्या करत्र ।)** च ७ व व इ । ब हे शृहिनी खहरन। मन्तरक वामन आदाधिव निकाधिक।। ভূমি গুরু কণ্পে হরু স্থান আমার। कामात निकटि हाहि कक्षण स्थात । अक बलि कहिटक्न धतिया छत्र। व्यक्ता त्मरं क्षित्रताहक क्षित्र गमन।। পুত্র দারা শিষা ভূডা বান্ধবের প্রতি ৷ रनशाहरत नायुन्ध इत्र नायु शकि।। भूत्रत केहिक एव कविता विस्तिय। मिट्यादत त्यथान अय विता उभरत्य।

मजुवा बद्रक शारम करत्रम शमन। यहकान हे हम द्रश थकारण किंद्रण।। ইত্যাদি সকল গুরু বিদিত তোষ্ণায়। পিভারে কহিয়া মোরে করহ বিদায়।। জগতের সার যেই পরম ঈশার। **पत्राभय विल जादत स्टार्श्व व्याकत्र**।। क्यान **अमन क्यान क्यान** प्रतिश हरित। সংসার স্থার মদে প্রমক্ত হইব।। ভাই বন্ধু আদি করি কে্ট্নহে কার ৷ मतिरलं थानत कार्या कार्या तथा हाता। कारनाटका विरमय शक्र कि क्ष मः मात्र । ভবে কেন বনে ধেতে মানা কর আরু।। শিষা বাকা ভানিয়া জীপতি মহাশম। कहिएक लाशिमा जाँद्र इहेंग्रा विभाग।। ভুমিতো পণ্ডিত বাপু ধার্মিক সুজন! विटव्हमा (काद्य एक्ट नरमात (कर्ममा)। স্কাশ্রম মধ্যে শ্রেষ্ঠ গৃহির আশ্রম। भूगावान क्वा इस ब्रह्द्य नम।। चथमां भानदन श्री इस की वया उका। कीर्जिमान भूगावान सूधी यरभायूक 11 कीर्डिमान गर्मामात्र मंत्रेर्ग कीवन । यम को जि विशेष्ट्रिय जीवर ने महा।। मात्रात्र अर्रा कृति हुः च त्य केरिल ! मका बढि द्रामयुक कुकार्या हैरेला।

অঞ্লেষ্য উউত্তেক্ত থেপকথন ৷

মহৎকুলেতে বেই নারীর জনম। चामित्र मिवात तम कि क्छू करत्र कम ॥ পতিব্ৰা পুতি ছঃধ না সহে অন্তরে ৷ প্তিদ্ধা প্রিজিডি নির্ভর্হেরে । -পতি যদি হয় ভার পতিত কি দীন। পতিব্ৰতা সতী নাহি হয় প্ৰছাহীন।। व्यनेश्कृतंनर्क यक्ति नाती व्यक्तित । थातं तम चमर इव कानिङ् निम्हत्।। কুলটার, পতি যদি হর গুণবান্। সর্বজন সমীপে সর্বদা পার মানা। তথাপি ভাষার ভারে। নিদে অনুকা। ভাষ্ঠিতেও সেবা নাহি করে কদাচন।। সংকুলে इस मञीना इस व्यन्तार्था। পদরাগ আকরে কাচের জন্ম কোথা। সতের স্বভাব কভু আসৎ কি হয়।। विवाह कब्रिट वाश्व कारता नारका छत्र। त्रमत वहन वाशू कत्र खावन।। সংসারিও হোতে পারে ধার্মিক স্থলন। পুত্তের কারণ বাপু যত সাধুজন ॥ সতের কুমারী দেখি করেন বরণ। व्यवस्थाय इक्रकार्टी मरमात्र काकिशा। ভপভা করমে সাধু কাননে ব্সিয়া ৷ े देवकदवंद्र इदि श्रृका छथका दकदल। श्र का कि वर्त, शिर्ल कि इड्रेंद्र फ्ल ॥

सन्दर्भ भूगावकी, शक्यक नम् मुक् পাতিত্রতা ব্রুছেতেই রত।। তার পর্ত্ত সমৃত্তা, সর্বাঞ্চা, রাজ সুতা নাম মন্মোহিনী। তাহার ৰূপের তুল্য, অমৃত অধিক মূল্য, সমতুলা কামের কামিনী।। ৰাঞ্চন লাঞ্চিয়া ভনু, হেরি মোহে ফুলধন্, क्लारक क्ला वार्यन। কুশতর কটিবেশ, ভাহাতে মদনাবেশ, ं नीलायत्र सित्र एक । किला। কামের কলস ছুচ্ছ, কুচযুগ পীনউচ্চ, লোহিত কাঁচলী ভাতে শোভা। थक्त कमलमल, म्रांपिशन एन एन, मधुरलार्छ खरम मधुरलाङा ॥ তিল পুষ্প করকর, লজ্জিত বিহল্পবর. (सर्वित्रा नामात्र वलन। कुन्त् कुष्ट्रमत शांकि, त्रमत्न मञ्जन छांकि, **७ छोधत अङ्गर्ग** मनन ॥ \* সুন্দর কুরঙ্গ অকি, অথবা খঞ্চন পকি, নুভাকরে কমল্ উপরে। जूक मत्नारकत थ्यू, कृत्रधन् निक एन्, ज्ञादक क्रूकारत कर्न करता। मुंग हिङ्क जिल्ल हेन्छ, जातन मुन्ने मनविन्छ, ब्रंटचंड मधुत मृष्ट्रान ।

বনোপ্রিয় জাফা জিনি, ভাষাতিব বিনোদনী,
কাদ্যিনী জিনি কৈশ পাশ।

এই কপ জার কপ, ভরণ রদের কুপ,
রক্ষে জালে মাধুর্য গমন।

নির্ধি মাভজবরে, জপমানে বনে সরে,
মরালের গমন দমন।

ভাদশ বর্ধি বালা, নাজানে মুমুধ্ জালা,
সুথে কাল কর্মে যাপন।

কবি করে জানুরোধ; যাতে ভার রসবোধ,
সেই কথা করি বিজ্ঞাপন।

# भरमाहिनीत चक्ष मर्भन।

#### পরার ।

শুন শুন প্রিয় শিষ্য জপূর্ব কথন।
কন্যার আছিল প্রিরস্থী চারিজন।
শুনীর্থী সৌ্দামিনী ক্মলিনী রমা।
এই চারি স্থী-ভার ছিল অনুপ্রমা।।
থাকিত এ চারি স্থী সদাভার সঙ্গে।
করিত সকলেগীত বাদ্য নৃত্য রক্ষে।
মহী মধ্যে প্রশংসিত কন্যা গুণ কপা
প্রাশ ভূল্য ভারে ভালো বাসিতেন ভূপা।
ব্রক্রম ছোরেছিল বংসর ঘাদ্যা।
জানে নাই ভদবধি রতির্ক্ষরসা।

यक्षात्क व्यक्तत्व कात्र क्षारमत केन्या সেই কথা বিস্তারিয়া শুন সমুদর ৷৷ এক দিন ইতে।মধ্যে শুন সমাচার। भर्त्योहिनी मृशवाला नुसात जासात।। দিবস হইল গত নিশী সমাগত। शेमारख উদয় প্রভাকর অন্তপত।। कमलिनी मानस्थी जाटम क्श्यनीदत्। কুমুদ উলাস পান হেরিয়া শশীরে।। ज्ञालमात ज्ञासिकात कतिरह तजनी । भारत भागादा शिल कमल वननी।। কোমল শ্যারোপরে কোমল বালিস ৷ ভাতে কোমলাজি ধনী রাথিল আলিশা! व्यक्त व्यक्तरिय शक्ष सूर्णिल नव्रम। त्राञ्चकन्या अहे कारल क्रिल भग्नन ॥ : गर्टक शक्रकावन (मर्रे जाव शाहा উদর হইয়া নিজা চৈতন্য হারণর 🔢 বাহে দেখ ভাষিত্য হইল মুদিত। षा छर्ग छ । त्वा । स्था भागा कि ।। चलेन (यारभटक धनी करत निवीकन। ख्ठाक श्रुक्ष अक नृत्रन तक्षन।। উক্ঠাম দেখিয়া কদলী কম্পান্তিত ৷ ভন্ম দেখি অতমু হইল কল্পাৱিত !! श्रीम पाक कीन कक विधित घटन। क्रिवत क्र क्रिनि वाष्ट्र गरेन ॥

नाचिक्श महत्रावृत्र काटक हात्रावनी। नव चित्र श्रिकाटक छत्रक जियली।। শুক পক্ষি লইরাছে নাসার ভলিম।। चक्र (मर्बर्ट्स चर्क चर्त्र व्रक्रिमा।। ভুরু মর শরাসন নেত্র ফুলবাণ। ষাতর হালে ভার আর নাহি পরিতাণ।। কপের ছটায় হয় ছকিতা দামিনী। कियात প्रक्रिक हिलल कामिनी।। " ननां हे हक्षमा भून कुछन कुकि है। वारका अभूरखंद रहारला शीव्रव मुक्षिका। নবিৰ পুরুষ সেই ৰূপে গর গর। ভৃতিমাত্তে বালা কামে হোলে। জরহ।। त्रहेक्टल कामिनीत अखत हिता। পতি ভাবে বংলা ভারে বরণ করিল।৷ রতি হেভুরসবভী দিয়া রতি মতি। পতি সহ রভি সুখ বঞ্চে কলাবতী।। मत्त्राहिमी वाला এই क्रश त्रव्रमीत्का यक्ष (मधि निर्मित्रदत्र नाशिन ভाবিতে।। काश्रत्र क्टला कात्र चश्रन विरक्षम । অনুভাব করি বুবে প্রেম পরিছে।। चारक्षत्र विद्यालय हत्ता विष्कृत मानंत्र। महरम महम कान लाशिल त्थरमह ॥ কোথা বর্গ উপতের কোধাম রৌরব। क्लांब क्रिका क्लाबा भएमत स्मेत्रण।।

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাৰ্যা

'रकारी श्रियात ममी कार्या, सक्षकात्। महाबटम हटला विद्राबन शादावात ।। যেমন দরিতা ব্যক্তি হারারে রতন ৷ एक्त क्रादी क्श्य ट्राट्ड लंडन।। সেই যুবরাজে চিড কোরেছে বিশাস। না হেরিয়া প্রাণকাত্তে ছাড়িছে নিশাস ৷৷ ष्यक्रभारत षक रेश्टक निक श्राता भया। मृदत शिल भातीदतत य**ङ श**तिहर्स ।।। বিষাদে বিশীৰ্ণা বালা ভাবিছে স্থপন ৷ একালে রজনী গত উদিত তপন।! উঠিল বালিকা হৈছে শয়ন সদন। রে। परन मलीन छाव हस्त्रमा वपना । ছেরিরা অরণ আঁথি লজ্জিত অরুণ। অধর হয়েছে শুফ য। ছিল তরুণ।। चालू थालू कृष। वात्र कवती श्राहर व्यथ्त वित्रह मत्र ज्यप्टत शरम्ह ।। রোদনে অলকাবলী কিব ছিন্ন ভিন ৷ ভাপেতে উত্তপ্ত চিত্ত ভাব ধরা কিল।। शखरेत महिट्ड जाना वाहिटत शाभन। षिण कृति त्थाम वीज क्तिल त्रापन ॥

# সভীয় চিক্তাহ কাব্যা

₹.

কুমারী প্রক্রিকারের প্রবোধ দান।

প্রভাতে উঠিল সভী, ছিল ভিল বেশ অভি, রস্বভী মানস বিদীর্গ। মৌন আসি হলো বঁধু, ভক্ষিল বচন মধু, নাগরের বিরহে বিশীর্থা।

मत्त्राहिनी ताकवाला, भारेषा वित्रह जाला, मत्त्र देवल कतिव शाधना।

প্রেম কি গোপন হর, কন্ত্রী কি ছাপা রয়, শানিকে কি ভিমীরাছ্যনা।

विमल धनी विभदन, काटह आंति निर्वारण,

কুমারীকে করিল সম্ভাষ। কাছে হেরি স্থিচয়, বালিকা না কথা কর,

না করিল হাত্ত পরিহাস।। ভাদেখি সভিনী প্র, চইল বিভার মন,

ভা দেখি সঙ্গিনী গণ, ছইল বিষয়ে মন, কারণ বুরিভে নাহি পারে।

नटव दल क्रिके हीड, क्या अंडि अदग्रिड,

रमि ठाकूत कीत यावहाटत ।।

শেষে কোরে অনুভাব, কন্যার বুঝিরা ভাব, যোড়করে সবিন্তর কছে।

একি দেখি রাজসুতা, কেন হেন ছঃখযুতা, স্বভাব শভাব হয়ে রহে।।

कावि कुरत्रदेश मानन, खुक उपन ननीन,

क्रिकारा अध्यक्ति विवस् ।

कि कार्रांग चाह कृश्यि, वनेना द्वंपार अपूरी, तथी थाछ इरेशा धनका।। ঐশর্ষ্যের নাহি ওর, রক্ষরনে থাকো জোর, ভবে কিলে গাত ক্লেশোদয়। वामता नेकिनी खर, हिस्सि खर सूर्शनिय, श्ल (मधि श्रत्य विभाग।) क्रव क्रुश्रेटथं क्ष्मिं क्रें; मक्राल मक्राल बरे; (তামা वहे आज काक मेरे। त्मदा कांत्र हिन्नकाल, दल क्ल व्हन हाल-তব জুঃখ পরাণে না সই।। বুরে গো ভোমার মর্ম, করিছে ছুর্ঘট কম্, সাধ্য আছে আমা স্বাকার ! मिथिए (कवल बाती, आंछा रूल कि बां शांति वाला भानि कल्योत गात्र।। . এই মতে সখিগণ, জিজাসিছে বিবরণ, कड करके किहल त्रिमी। खुनिया चक्ष कारिनी, वल उला मत्याहिनी, . जबूबरत नकल निज्नी ।। শ্বপ্ন কন্থ নতা নয়, চিত্তের চাঞ্চলা হয়, वाह्य थटक ज्ञान (म्थाम । ্কলতঃ এনহে সভা, শুন বলি ভার তথ্য, नश्च हाम्रावानी अभिधाम।। বৃপৰে ৰবিয়া কায়, ভাবিতেছ হার হায়, ं (कर्ल (थंगाल मार्ब नाता।

প্রিহ্রি এ সোচন, মানলৈ কর মোচন, । মিছা মিছি কৈন শঞ্চধারা।। এই মতে স্থিগণ, করিল অনুরঞ্জন, (मदा (रुडू (मदिका मिकल । শীতল দলিল দিয়া, তার মুখ ধোষাইয়া নিভাইতে চাহে চিন্তানল।। थ्यामार्क याश्रंत मन, क्रिंटिट क्रोलाएन, ভার শাস্তি হয় কি সেবনে। क्रांटल मावानटलामम, का नाकि निर्माण इह विना इंख्य वाति वित्रिष्टि।। এই রূপে দিন গতে, বিভাবরি সমাগতে, নুপয়জা করিল শরন। खिष्टिमाहत्रग कर, विज्ञा एवं सूर्वा नम्, भूनः चन्न करत मन्भन ।।

· মনোহিনীর ছিতীয় হপ্ল কথন। প্রার।

অপূর্ক শ্রার ধনী শরনে আছিল।
বিরহ সন্তাপে শীঘ্র নিজা না হইল।।
কতক্ষণে কত কথ্টে নিজ উপজিল।
পুনঃ সেই গুণাকরে স্থানে দেখিল।।
ভূহ, ভাব দেখি ছঃখ দুরে পলাইল।
নিজগণ লয়ে স্থা ভূরিতে আইল।।

## সভীত্ব চিত্রভানু কাব্য।

পরিচয় হেতু, সতী জিজাসিল।।
পতি পরিচয় হেতু, সতী জিজাসিল।।
প্রিয়া বাকো মনে তার আনন্দ জানিল।।
নায়ক নায়েকা প্রতি কহিতে লাসিল।।
কুপাঙ্গ নামে ভূপতি অতি পুণাশীল।
কালীপুরে যেই নিজ পুণা প্রকাশিল।।
তার পুত্র আমি নাজ বিতীয় না ছিল।
নামথ আমার নাম সকলে কছিল।।
আমার রূপের ষশ জগতে ঘুদীল।
শুনির: উমাচরণ পুলকে পুরিল।।

निजा ज्ला मत्याद्विनीत विलाश।

#### विभनी।।

নারকের সঙ্গে সঙ্গ, কত কথা কত রঙ্গ,
হেনকালে নিজা অসঙ্গতি।
নিজঃ যদি গেল ছুটে, নাগরী জাগিয়া উঠে,
বলে কোথা গেল প্রাণপতি।।
কে এমন বস্ধু আছে; যাইব কাহার কাছে,
কে মিলাবে যোগে রনার্গব।
কে করিবে এ সুসার, সে বিনে সব অসার,
কেবা হেন কার কাছে কব।।

।। ও ।।

# সভীত্ব চিত্ৰভানু কাব্য।

क वृक्षित्व त्यात्र कृश्य, तक कानित्व नव तूर्य, क्त क्रिट्स (अध्य डेशकात्र। বে করিবে এই হিড, কছি আমি স্থুনিনিচভ, দাসীত্ব করিব আমি ভার।। মিশা হোলো শেষ ভাগ, নাগরের অনুরাগ, क्रिटिष्ट क्ष्यंक स्मूबी। ব্নে কালে ভাকে পীক, তথ পেয়ে কিমনিক, প্রভাত হইল বিভাবরী।। মনেছেঃখ ভরজেতে, আর নেত্র কুরজেতে, নুপবালা ভাবে কুল হীনে। উঠে বলে বিৰোদিনী, যেন অভি অনাথিনী, कृष्ण डी एव हेन्द्र दिवा। क्री खन मनि हीन, •वनू विना शक मीन, यिन मीन मिलल विक्रा । बिटन क्रक त्यन बता, ठाकरी कीव्रदेख मत्र', दिनः इन वादि वदिष्टाः। मुथावंत्लाकन कति, कहिर्डिए प्रकृती, मदि मदि मलीन हत्साखा। কহিতে বিদরে হিরা, যা বাপে না দিল বির', (अरे जार्थ नहां श श्रकां ।। त्यटम करह ममीब्रशी, ममीब्रशी इंड द्रशी, কানিরাছি তোমার মরম। बन प्रतिथ विद्याविद्या, मीकल कतिव दिशा, यात्र यादव नद्रम चद्रम ॥

### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাবা।

রাজা রাজ কায়ে মন্ত, রাণী নাহি করে ভত্ত। তুঃখ দেখি হিলা ফাটে হার। থাকিতে আমরা স্থী, যাতনাপাবে আরু কি,

ভেমাক বিরহে গোলে যার।। এরপ যৌবন নব, না মিলিল প্তিত্তব,

लिक दिना भव नितर्शक।

রুপারে প্রাপ থালে, হলি ঘ**রাইতে** ভারে,

প্রার ভাবে সক্তি সাহছি।

এচে; শুনি বলের'মা, ভোমর। সে জানে, আমি। ভাই ক্রি শুন সহচ্টী।

গত লাজে শ্যাভলে, নিজা ঘাই কুভুললে, পুন ভাহে সপ্লে দুক্তি করি!!

কেট স্বালে আলি, একাশিয়া শেষ্ণাণী, নাম ধাম কহিল আমায়।

भन्धिन कमविधः नयन श्राद्यक नमी.

দে বিৰে এ গেছ শব প্ৰায়।।

অভ এব ভার ভরে, পরাণ কেমন করে,

• কিলে পাৰ বলনা সজনী।

कारलाक मकल करत्र, यादत मरी कारल धरत्र,

नार्क् माटन भिवत ब्रजनी।।

त्रभम इहेल काल, भागात्ला कलेक काल,

ৰিতা মোর হোলো যমদুত।

কর সধী অবধান, কিসেতে বঁ:চিবে প্রাণঃ সালিয়া আইল কৃষ্পসূত।। 24

वाश्रमादम विकाशत्म, बत्ना धरित वर्गाम, भक्त यान भारतत ना इता। मारतत अम्मा क मर्क, वारभन्न विष्ठात भर्थः क्स कि ना क्स कित खरा। একারণ পায় পায়, য়ালা আছে হায় হায়, कि मात्र घछे. त्न भारत विधि! কৰে পাৰ যুৱরাজ, যুড়াবে অস্তর মাজ, হৃদ্যেতে পোব রস্বিধী।। जदी औरतिया कन्न, क्यांश्वरन लाश छत्न, धारम कथा व्यवस्थित मृता। গোপনে আনিতে সাধ, শেষে হবে পরম. ে, दःकः। रेग्टक अमृत्त निर्माता। ভোলা বাল মেরে কভ, সহা দেখি এইমজ क्तरं ना कारबट्ट वाश मात्र। प्रमाश्वी चार्या बाल, बिहालक कुड़बाल, भारत विक्तः देवल अदन काम्र ॥ छूबि धनी मिहेक्टल, कह शिबी ब्राड्डी जुएल, ভবে निधि इर्व मनद्रथ । शाशास्त्रकं मात्र माना, श्रेकारणं क करत्र माना, এই खन यूरीएकं भवा। ্বাগামোহন ব্রাক্ষণ, ধাশ্মিক অভি মুকন, आमा भूक डीव कि किमाथ। उाहात (कार्छ मन्मन, खिल अरे मण्डून क्टिक्ट मातिमा श्रीनाथ ॥

### সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

নৌদামিনী স্থীর সজে কুমারীর ক্থা। প্রার।

टमकारल (मोमामिनी, नशी छेलमीछ ! कहिएक लाशिल कार्त्र, कुमातो किश्विद्या नदहस्त निम्नी दल, त्रीमानिनी खन। কৈ কৰ মৰম কথা, প্ৰম দাৱল।। विक् नाहि लाश्त छाल, প्राल युष्ट नाहै। ्म,वर्गरण ना मिलाल, ठाकुत यामाह ॥ গোপনে স্থপনে যারে করিলাম দৃষ্টি। চিত্তে রোয়ে সেই নেত্রে করে প্রেম ইন্টি।। হাদ্ধ নিরুদ মোর বিরুদ বদন। किंद्राम भाव कह भाव कह भाव कथन।। আনি দেহমাত প্রায়, প্রাণ সেই জনঃ দে বিনা হোরেছি শব পব অকারণ।। मधी वल श्वित हुए कि इत्य के मिला। यल कि कतिय आमि छेडला इहेल ॥ উপায় করিয়া আনি ঘটাব নিশ্চয়। के भारत क्षत्रकी स्थान कांत्र वर्का स्त्रा! वाकाद्व वाशीद्व आद्य कहि चविटमंग। शाभारत कानितम भारत छेभजीरव (क्रमा। **पश्चकारण एपि कत्र अक्षा विकाल।** थकामित्न शकारम जशकारम थकाम।। श्याय नाती यकार क्लाटब्रटक अमन। कि कव पूर्वि मास चर्डिक (क्रमन।।

### সতীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

করিলে এমন কংশ যশ হবে ভক।
ঘটাবে কি শেষে উঘাহরণের রক।।
কবি কহে ধৈষ্য হও জ্বন রস্বভী।
ম্মাথেরে মিলাইব তব নিজ প্তি।!

-010

মুখোহিনীর আংকেপ উক্তি। লয়ু চতুম্পনী।

এসব বচন, শুনিয়া তথন, कदिश क्रम्ब, कामिनी कश। किह्रव आभाव, दल मधी छात. ক:ভবিনা আর, প্রাণ নার্য়!! की वन विशीन, थाटक यम भीन. ভেন নিশীদিন, বোদনে থাকি! পাইল ভালায়, তুথ দুরে যায়, यक्टनटक कप्त, क्षमदस द्रार्थि।। বিরহ পাধার, বাড়িছে আমার, ধৌবনের ভার, সহিতে নারি ৷ সেহ ভরীতুল, নাহি পায় কুল, ভাসিছে বিশুল, বিশা কাণ্ডারি ।। वल गर्ठत्री, खेशाम कि कति, रेधतुक नाधित, त्रक्रम विदन्ध (गरे अन्यम, रहेल निम्म, ত।তে ছবোদর, রজনী पिटन।।

### সভান্ত চিত্ৰভান্ত কাৰা।

सपरिन भाकूल, (योवम म्रकूल,) कृषिया (म कूल, श्रृदिल मधू। विक कवि कय़, असन मसत्र, (काथा दमस्र, जमद्र) वर्षे ।।

---

#### · পরার 1

শ্বনিয়া সঙ্গিনী গণ কহিছে বচৰ। मान १८ शा मरना। हिनी कति निरवनन !! লৈববিনা কোন কর্ম নাহি হয় সিলি। ৈব উপাসনে পাবে মনোমত ঋদি।। के का जिल्ला यह कि कू अना अ किश्रम। টির ভালি করারেন কাঁচেতে যতন।। मिन्स्भी मशी वटन खन खनवडी। ভ'বলে কি হবে শুন স্থামার ভারতি। বিশাতৃলা বন্ধু আর নাহি কোনোজনে। রে পের সমান বৈরি নাহি তিছুবনে !! প্রত সম হোত বল কার প্রতি হর। रेज्यश्रव माक्ति बाई जाबिह विम्ह्य ॥ देनववटल खुक्त (मन मनादक कीवन। कालिवाम निहल मूर्टिक्टव देवशात्रग।। অভ এব দৈবশক্তি হয় গরীয়নী। रेभवशत वल मारे अनत्ना कशनी !! कमलिनी वत्त खन खन मरचाहिनी। ভারতে বিস্তার আছে, অভ্ত কাহিনী।।

### ৩২ সভীত্ব চিত্রভাক্ত কাবা।

नयत्रण महाद्रादक- हत्ना देलव महा।

मूर्थ णानि खंह रेकल स्ट्र्याद्र एनसा।।

वर्षे दर्षे वर्षे विल किल नाम तमा।

खनिष्ठ किल प्लृहा कथा मस्मातमा।।

वर्गा वर्ष करह जारत जूणाल वर्गलकः।

वर्गा इर्ता नम्रत्रणत नामिका।।

एनकना मस्र्राद्र हत्ना निम्हिनो।

वर्ष कर्मलनी ज्राद कहिर्द लाणिल।

भूताण क्षमाण विक करि विद्रित्न।।

### শমরণ রাজার ইতিহাস। তিপদী।

ভারত বংশ কাহিনী, ভান ওগো মনোহিনী,
বিশেষিয়া কহি লৈ তদন্ত।
চক্রবংশে যশকুপ, উদ্ভব পৌরব ভূপ,
সেই বংশে জানাল ছ্যান্ত।
সকুতলা নামে কনা, ছ্যান্ত প্রেরলী ধনা,
ভরত জানাল যার গার্তে।
ভরতের জানা মর্মা, তান যত ধর্মা কর্মা,
বিস্তার ভারতে আদিপর্ফো।
এ কপে ভারতবংশা, সেই বংশা ভারতংশা,
মহারাজা নাম সহরহা।

কীতেন্দ্রির ধীর দাস্ত, তপনের তপেস্বাস্ত, প্রতিদিন সুর্বোর অর্চাণ।।

এক দিন কিভিপাল, সঙ্গে পারিষদ জাল, মৃগ হেতু বনে উপনীত।

কানন ভ্রমণ ক্রমে, ক্লান্তিযুক্ত পথ্যামে, নরপতি নীর পিপাসিত।।

নিকটে হেরিয়া শৈল, নৃপতি সন্তোধ হৈল, উঠে, দিক নিরুপন হেতু।

সোপানে উঠিতে রায়, দীপ্তি এক দেখি ভাল, অন্ত্য মানিল ধর্মকৈতু !!

কল্যা এক নিক্লপমা, তিতুবন মনোরমা; রোহিণী নিন্দিয়া রূপ ছবি।

শালিবর গুঞ্ গুঞ্জ, ভীক্ষুত্র ভেল্পেঞ্জ, ভ উদয় ভূধরে যেন রবি।।

किनानी इसानी द्रमा, जुननात इस नमा, किना स्टब मनन सूवकी।

ভক্রপ দেহের রক্ষ, হর কোপে কাম ভক্ষ,

্ অন্বেৰণ করে বুরি পতি।। বদন শ্রদ শশী, মস্তকে কলক্ষ মদি,

ধরিয়াছে শিক্ষোক্র ছল।

**. इ.ट.** क्षेत्रक क्ष्म, चित्रवामि क्षाकनमः

সে গণ্ড মণ্ডল চল চল।।

কামেরে কি দিয়া কাঁকি, নিয়া ভার সুখগাখি। কোরেছে কি নাগায় বলন। े किया धरे अनुमानि, वृक्षि जिलकूल आनि, নির্মাণেতে বিধির ্যতন ৷৷ দেখিয়া ভুরুর দাপ, কণি কণা পার ভাপ: কামচাপ বুঝি গেল রাখি। ब्दि खद्रा इलाहल, पृश्वे प्रव हेलाहेल, विनाटण शुक्य खाग शाथि॥ ৰবঘৰ কে**শ জাল, পূ**ৰ্বচ**ন্দ্ৰ জি**ৰি ভাল, ककारल विक्रिय वात्र शत्। পীনতর পরোধর, রাজীব মকুল বর: कींग माया छाटछ इत्यामद्री।! নিতয় জঘন স্ল, সহিধর সমতুল, मरनाम विलाय तारे कान। করি কর পরিপাতি, চারি খণ্ড করি কাটি, जिल्ल कुष्ठ पाकात विद्याल ॥ **क्रिल क्लात बल, क्रि अवत्र ज्ञ** মেকে গেল ফুলবাৰ বাংগে। राष्ट्राहेल यन ज्हान, मलिन चनुत् शान. বিজ কবি সরস্ বাধানে।।

লঘু চতুপানী হল।
হৈরিয়ালে কপা, সময়ণ স্থুপা,
নিজকাম কুপা, উথলী ধার।
কে ভূমি কামিনী, কাহার নদ্দিনী,
শাহ একাফিনী, কান্নে ভার।
ি

### সতাৰ চিত্ৰভাত্ত কাব্য।

चकरभ दलन।, ভाकिस इलन', काश्त ललना, र्द्रिल छान। ভোষার শরীর, বুঝি কাম ভীর, করিল অন্থির, আমার প্রাণ।। **হেরি তোর অঙ্গ, মন নিল সঙ্গ,** रश्यम कूत्रक, शिक्त कारम। भीक्षरतत भारि, आग इला ना कि, श्नल इंडि चाँचि, दमन ठाँदि। ७ क्ठ मछल, मट्ट मार्वानल, लावगा शवल, मलील बस्र। (य) दब जम्मारम, किम श्रिम श्रम, शुक्रदवब्र वर्ष, ना कब्र छत्।। অংহা মরিহ; যৌবনের ভরি, जाविष्ट् मुनादी, अन्य कता। ভাচে মোর মন, প্রমন্ত বারণ, করি আরেবছণ, ভাবিয়া জলে !! चित्र नट्ड कल, कत्रि करते दल, . उति छेलेर, नाविक विद्या कहि खन जात, इहेटव जुनात, कत्र कर्नशात, अहे अशीरन ।! ज्ञि (ला कामिनी; जूवन महिनी, श्चक्त बलबी, तरम्ब जना। कमत्त्र गटक, चित मक्बूटम, मानून चान्तनः, भारे (कः चता ।।

ঘটিল স্থ্যোপ, সুচায়ে এ রোগ্, কর উপভোগ, জামার সনে। বদন ফিরাও, বাড়েক বাচাও, জীবন বাঁচাও, জধীন জনে।। নানা রসে ভূপ, কহে কভ ক্প, মদনে কুভূপ, মগন রসে। ছিল কবি কহে, নূপ বিশ্ব নহে, নোল হোমে রহে, জনক বসে।।

#### ---

#### পরার ।।

কামোলেবে ভূপভির বচন শুনিয়া।
অহর্থান হে'লো কন্যা কিছু নাবলিয়া।
কন্যার বিচ্ছেদে ভার শুন্য হোলোজীব।
অচভন হোয়ে ভবে পড়িল পার্থিব।।
নূপরে মুন্জিত দেখি থাকি শূন্য ভরে।
গুহে যাহ রাজা কন্যা কহে উচিচ্ছরে।।
কেমনে জালরে যাবো কহে নর রায়।
মন প্রাণ মোর জব পীছু পীছু ধায়।।
জধীনের প্রভি লয়া নাহি ভব লেশ।
কি জন্যে নিলয় প্রভ না জানি বিশেষ।।
শুনিয়া রাজার বাক্য রবিক্ল্যা কয়।
গুনিয়া রাজার বাক্য রবিক্ল্যা কয়।
গুনিয়া বাজার বালায়া বাজার বাজার বাজার বাক্য রবিক্ল্যার বাজার বাক্য রবিক্ল্যার বাজার বাক্য রবিক্ল্যার বাজার বাক্য রবিক্ল্যার বাক্যার বাক্য রবিক্ল্যার বাক্যার বাক্যার

ताका बदल क्षेत्रक त्य इंख तम इंखा এ অধীনে আপনার কান্তঞ্জারি লও 🔢 ভপ্ত বলয়ে শুন অনমীঢ়াপভা। (य कथा कहिरल जुमि हेडा नरह कथा।। ভূমি ছোলে মানব দেবভা কন্যা আমি। অতি অসম্ভব ভূমি হবে মোর স্বামী।। সমরণ বলে শুন ভাকর ছুহিতা। তোমারে হইতে হবে আমার বনিতা।। একান্ত ভাবেতে মোর তব প্রতি মন। ভোমার বিচেছদে আমি ভাজিব জীবন!! তবে ভুপ প্রতি কহে অরুণ অকলা। তুরা ভজি ভুলিব কি কলকের বঙ্গা। त्राक्षः वटल व्यवगिष्ठ क्वला युन्स्त्री। নারির কলক কিবা হোলে ইচ্ছাবরী।। কন্যা বলে পিভা যুদি হয়েন সম্ভি। क्टद या विलित्न काका क्य बबुशिक।। कनक रकामाद्र यपि करतम श्रीमान। হইব ভোষার জারা শুন মভিষান।। हेश विल अख्यांन रहेल छश्छ। चिक कवि कैंट्ड कर्प (शेल नव्रथि।।

लयू जिल्ली। जन्मी जूड, श्रादत इःश्रेयुड, ज्यामा वा त्यल जात्र।

देननागर्यः त्राञ्च, कद्भिल विमाशः, ভারা গোলাজ্বাজাগার ৷৷ দেশে গেল পাত্ত, এক মন্ত্রি মাত, রাখিল জাপন সংখ। হোরে এক মন, সংরোধে তপ্র, ৰৱপতি নিহাত হে।। मिन चवनात्न, कल मृल चात्न, প্রথমে আংহার ভাই। ডিভীয়ে আহার, হোলো নীর ধার, স্মন চিন্তা মনে নাই।! দেবলোক পালে, পুজে ভিনকালে, रुत कृत कत निशा। এক মনে তপ, শংখ্যা, লক্ষ জপ, গ্যানে জ্ঞান যার নিয়া। এমতে ভাকর, ধ্যার নূপবর, किंकू मिन शंक रेहता। দেব বিষাক্র, ভাতে ভৃত্তর, ख्यांनि खंडाक देनता। ভবেভো রাজন, করিমা অরণ, वभीकंटक ख्या आह्मा কুল পুরোহিত, সানিয়া ভুরিত, विरुपंच द्वां के कारन ।। लहेबा बात्रका, विवाकत यथा,

, काल भाग करणायन।

ভার্ব্যা সহ শেষ, স্থানেশে নরেশ,
প্রতিশিল মন রক্ষে।
গর্তে তপতির, এক পুত্র ধীর,
কুরা নামে জনমিল।
ভূমে অনুপাম, কুরুক্ষেত্র নাম,
নিজ পুণ্যে প্রকাশিল।
কুরু হৈতে যত, বংশ হোলো কভ,
বিস্তার আছে ভারতে।
ভাবি পদ ইউ, কবি কহে মিউ,
পাঁচালি প্রবন্দ মতে।

मटका हिनीत भिवाताधना ।

भवात ।

गवत ज्लेखित खिल देखिदान ।

गथि अणि करद तामा मृष्ट्र मृष्ट्र जाव ।

खन गद्दावर्गन वस युक्ति जात ।

एत गर्था खेलाजना किंद्र चामि कात ।।

तमा वर्ता खन अर्था मामात कुमारि ।

ताथा हळावली चानि यक अमनाती ।।

काकामनी श्रमाकति कृष्ण भाव खेलावली ।।

काकामनी श्रमाकति कृष्ण भाव खेलावली ।।

काकामनी चात्राधिमा चेत्र भाव खेलावली ।।

काकामनी चात्राधिमा चेत्र भाव खेलावली ।।

काकामनी क्रमानी पिना ।

# সভীত্ব চিত্ৰভান্ন কাব্য।

मार्ड अनिकटि, कहिरह अकटी, य। विनिन् नवत्रा।। त्राकात नाथरमः पृथे हिल मरमः মনোবর্ডি ছিল যাহা। ভাছে রূপাবিষ্ঠ, হইরা বশীষ্ট, 🛷 चानियां कहिल छाडा।। হোয়ে ওফ চিন্ত, রাজার নিমিন্ত, निक कन्। मिल द्रवि। रनन कृष्ण, जाद्य दूरमाखन, **क्रबन्धाश्य इवि ।**: द्रविक्या। लटह, सूबि छन्ड श्रांदह, मुभवदत मिल मान। পাইয়া তপ্তি, বাজা হর্ষ মতি, भारवर्ष मक्षरत थांग।। र्विमन कटकार, जानटन दिएछात्र, **হেরি পূর্ণিমার শশী।** . . मूरथरङ मिलम, श्रेल छूलन, বিক্রে হারিয়া অসি া जुःथ शिल पूत्र, जानम श्रोठूत्र, कविल छेल्य वास १ करे चात्र वात्र, अमन विलाभ, े जुर्थ करत्र छूटे ज्ञान ॥ षामण दर्गत्र, जीए। नितश्रत्र, ্করিয়া ভপতি বিঙ্গে 📆 🗟

### সভীৰ চিত্ৰভান্ত কাৰা।

শিব কৃষ্ণ এক আত্মা শক্তি ছাড়া নর। **डिटन धक धारक किन कानिर निम्म 11** শতএব দৃঢ় করি পুঞ্চ শন্তু পদ। मत्मत्र वाक्ष्म् भारव वाष्ट्रित मन्भम।। শুনিয়া স্থির বোল অজ্ঞানত। টুটে। अक काटल नव नथि नाम जिसा উरठे।। (इन यूक्ति मिल यमि त्रम। त्रक्ती। প्रम आख्यामि हिख हहेल मुक्त्री। স্বয়ভু সাধনা হেডু নানা জব্য লয়ে। স্থি সঙ্গে শিবালয়ে চলে অভ হ্রে।। रेनरवमा लहेल (कह नाना छेशहात। বদন ভূষণ থেন স্থার্যের আকার।। খুপ দীপ মধুপক স্শীতল জল। **ठन्म क्रूम माना बद दिल्ला।** ইত্যাদি বিবিধ জবা লয়ে গুণবতী ৷ व्यादकामभारत श्रुका कदत्र भाषाभिक्त ॥ देनद्वमामि नामा खवा क्दन मिद्वमन। कतिल बानम भूका रुद्य अक मन।। . कदब कदब कब्रहाली भाल वाटमगरन । भूका अवनात करत यन घन्छ। त्रव ।। खुकि পाठे।खदत कदत बदतत व्यार्थना। वल थेषु भीख (यन भूद्रत्य वामना॥ . अक्रम् क्षकार क्या भूटक जिलाहर। स्त कार्ड अमा करत स्रतन थार्थन ॥

# 82 गडांच जिल्ला स्वारा

नाज्ञदकत्र कथा कि हू अने चारुश्तर । क रिट्ट छेमा इस भक्त किक्ता।

#### मयारथंत्र विवृत्ते ।

#### পরার ৷

কালীপুরে রূপাক নামেতে নৃপমণি ৷ পরম পৌরুষান্তিত নানাধনে ধনি।। একছতো বসুমতি করিল শাসন। वक्षभूना कित्रीं क् अन स्थानम ॥ অবনিতে মহারাজা যেন পুরক্রা পরন ধার্দ্দিক বিষ্ণুভক্তিতে তৎপর 🔃 এক পুত্র ভূপভির সংসারে বিজয়। मन्त्रि पदवन नाम क्षण श्रेण महा। ক:নিরা নরে<u>কে র্কাবছ। আপনার।</u> - বিচারিরা মন্বাথেরে দেন রাজ্যভার !! কিছু কালান্তরে রাজা গেলা প্রলোক। काकृतकात भारक श्रूतकात करत (भेतक।। जित्रमत्म भिङ्खाक देवन सूर्वताल। यटमण्ड भूर्विक रहारला अवनित्र माव।। मचार्थ इरेझा छेशविक निर्हानत्न ! नमालाश करत नमा वकूकम नरवा। প্রজার পালন আরু রক্ষাকরে রাজা ৷ বিচার পুর্বক রাজা করে রাজকারীয়ে

## সতীয় চিত্ৰভান্থ কাৰ্ব্য।

দানেতে পূরিল দেশ প্রজা সুখে রয়। তুফ জনে যমসম ভিজ কবি কয়।

---

म्याथित कानन (कानन)

#### প্রার ।

একদিন মহারাকা আনন্দিত মনে। वक्तुवर्ग मह हला कानन (काक्रान।। অৰ্ম আবোহণে ব্যক্ষা চলিল কৌভুকে ৷ আ শু উত্তরিল গিয়া উদ্যানেতে সুখে। वरनाज्या नर्सक्षानं करत्र छेशरवना। তন্মধ্যে সুধাং 🕲 ভূল্য ঝলিল নরেশ।। स्र निकारल शक्षीरेकल भार्थ मरवरमिल । (क्र (क्र नद्रावद्धः क्द्र क्लरकि !! অপ্প জলে থাকি স্থান করিতেছে কেহ। मारमटक भार्क्षन करत नृপण्डित रम्ह।। ञ्चाबभद्र इंखेरमवार्क्षव कद्र नद्र। (क्र खादव क्लक्ष क्लाचिटक इदव।। 'कडकर्ग शुका नाज ताजात इहेल। কলপানি তাব্য হেড় অনুজ্ঞা করিল।। লুচি পুরি ও কৌচুরি সানি দিল পাতে। . - দিলেক মোহমভোগ কাচাপোলা ভাতে ৷৷ वत्रकि वामामक्रीकः (भटिष मिल कीत । महासूर्य बीक्ष कटक रहेना सुन्दित ।।

# সভীষ চিত্ৰভাষ্ট কাব্য ৷

े बधान नगरत जन जारन छलकात। भीक छन अवन नावन नुन भाव।। **टिकाम क्रिका एत्र ब्रह्म गर्व श्रूर्थ।** च्या ठवन कदिया जाव ल मिल यूट्ये।। क्रिया भन्न किल क्रूप्त भगाना কেহ্বা পরম খৌদে সেভার বাজার !! ঢোলক বাজায় কেহ কেহ হাড়ে ভান ৷ কোনজনে উপবনে খুসিতে বেড়ান !! रेक्काल नमर्स जुल करवन जन। স্থানে স্থানে নেহ্।রিছে তরুর শৌভন।! (क्नकाटन शिन ब्रांका कमरबंद्र करन। रकमन स्मात शूलो देवजगरन वटल ।। (महे इत्क वित इडि शक्ति मूक नाही। পাখি দেখি বিমোহ্ত রাজ্য অধিকারি।। नुक वल प्रथ नाजी किया क्रम धाम। म्पर्याच्या (महे चात्र कहे (मधिलाम।) তাঁতে এঁতে মিলন করার যুদি বিধি ৷ মিলৰে শোভিবে ভাল ছুই ৰূপ নিধি !! वाकावल वन् वन मूक कि वनिला! कि त्मरबंध त्मेरे चात्र अरे कि त्मबिता। ञ्चरता बराताम करती अवधान। रश्याक कर्रमरक जून मरदारकरक कान ।। मरकारिकी नारक जात कना। धरमानिकी। कि करित क्य (यन काट्यूप्र कार्नित)।

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

ভোমার এ ৰূপ রাজা সেই ৰূপে সীমা।
এৰপে জানিবে সেই ৰূপের মহিমা।।
রাজাবলে কেমন সে ৰূপ স্ক বল।
ভিজকবি কহে মনো হইল চঞ্চল;

#### मुक मशामा

#### बिभनी।

च्क वल महाभन्न, छात्र क्ष क्षानक्र, ति के ति ति बार्ण नीया। इतादन मार्च्छिक यन, सूवर्ग मूवर्ग दुर्ग, षुनुशानि त्रणीत शिष्मा।। चक्तक मूर्य हैं क, किंदा इंगि खब हैं। के किवा नव घन किम शामा। विक्षिष्ठ मिलकांकृत्ल, नमाकामि करन पूरल, ममत्मत्र क्मरत्र डेलाम।। क्वा मिळ एम एम, भीद्र चार्य भीदमार्थमम, कूक्टक छर्मन चात्रधन्। খের ৰজ্ব ঘটা, সুধাশীক হাক ঘটা, भवाकिमि मूरक्षमल कर् ॥ ামিরে করিতে নাশ, ধরেছে কামের ফার, जुनमाब धरे जिल्लाहा। कर भीत्रत करा, क्य कृषि मत्नाक्त, (रहेल स्मारल (युटल मेन बाम ॥

জ্ঞন শুন ওহে ভূপ, হেরিলে তাহার রূপ, । যোগী জনে লেগেশ্যার ধন্দ-।

বসন ভূষণ অংশ- চলে কভ রজে ভঙ্গে, গজনিন্দি গভি অভি মন্দা। ংমন ৰূপনী সেই, ভেমনি ৰূপক এই,

ভার যোগা ভুনি মহ'শার।

নেই কন্যা তোম মিলে, ভোমাকে ভাষারে দিলে, মানিকে সুবর্ণ জড়া হয়।।

নতুবা পথের মেলা, ধেন ভেক সঙ্গে খেলা, তাবত নিম্ফল হয় ভূকে।

জার দেখ হিরারত্ব, লৈ'কে ভারে করে যাই, ভাঙ্গে খার পড়ি মেয শৃঞ্চে।

শুনিশ স্থাকর বোল, রাজাকোলো উভরোল, মন ভাতে হইল চঞ্জঃ

কি মেংহন বাপ রাশি, পদিল অন্তরে আদি, ভূলিবে কি ভূলিলু সকল।।

মর্মে মর্ম লাগে, সেই রূপ ফ্দে জাগে, রাজা ভাবে সকলি অসার।

কি ৰূপে পাইব ভারে, এমর্ম স্থাব কারে, ভিন্ন কবি ভাবিত অপার।

#### मन्द्राध्येत वित्रह वियाम ॥ व्यक्षत्रक शक्काते ।

অস্থির হইরা গুছে চলেন মন্মধ। ध्यम्बाटक नमत्र नाटक हटलम मचर्य । গাঠাইল তলবার বেড়ি রাজালয় ৷ मदना फ्रांट्स विक्रिमीस विक् त्राकालय । লজা পেরে যুদ্ধ নাহি করে ভূপদহ. काम वर्ल वित्र रखना खुलनह ॥ বিচ্ছেদ ভরকে রাজা দিবানিশী ভাবে! পাৰে মিত্ৰ বান্ধবেচে ভোষে মিইভাবে: ताका वत्न श्रूरथक्त गाहेनू व्याताम। আরাম করিতে হত হইল আরাম।। चना चना चनल निकान इम्र करल। वित्रह दोष्ठ्यानल काल व्याद्वा खुटल ॥ क्वितल भी छल मन्स वटक् ममाश्वि। মোর হৃদে বজ্ঞহানি করে সদাগতি !! একে रामकून अधिकश्च शोकत्रव ।। ভাতে ভূক রবে প্রাণ কি ক্রণেতে রবে।। ক্ষাকর কর পুটে বলি হীম কর। অগ্নিভুলা কর তব নহে হীল কর।। नाना द्राप्त नाना थट्न इहे आमि थनि। ভথাপি নিৰ্ধন অভি বিনা সেই ধনী।। সুধ ভালি ছিল মোর কুদি পাল দলে। विष्ण्य मुख्यम् अर्व तन् कति करन !!

प्रशासी कारण वह उज्ज्ञक तल।

प्रशास कामाद्रांशस्त्र काम करत दल।।

पावशम कुछ आत्र कुलमान कारत।।

रा विश्व कुछ बाक कुलमान महा।।

रा विश्व कि कुछ बाक कुलमान महा।।

रा विश्व कि कुछ बाक कुलमान महा।।

रा विश्व कि कुछ बाक कुलमान नहां।।

रा विश्व कि कामा कामा कार्य विमा।

रा क्या कमल क्षा कामा कार्य विमा।

रा मधु विश्व मिन मन नाला विन।।

कार्यक स्थान किया (हित्र कार्य क्षा)।

कर्व भाव क्षिक कृष्टि कार्य कुष्टेकभा।

## মংকাহিনীর বিরহ ও বসস্ত বর্ণনা ! প্রার ।

प्याप्त विष्ण्या अर्थ क्या जाना मरह।

प्रवास जाना श्राप्त जाना कर जरह।।

प्रवेस विवर्ग शिष्ठ गीर गण हम।

नमम भारेमा अपू वज्य जेनम।।

वजर जा प्रवास के किया मन भवन।।

प्रवास के निम्न जरब कि विवर्ण।

के प्रवास के निम्न जरब कि विवर्ण।

के प्रवास के निम्न जरब कि विवर्ण।

के प्रवास के निम्न जरब कि विवरिष्ठ किना।

के प्रवास के प्रवास के प्रवास किना।

বসন্ত ভূপতি বুঝি হোলো বনোভূমে। भीति धत्त (स्मर्ख क्मात कुच्रम।। कतिएए भित्रीय भूष्य छामत राजन। হেরিতে ব্যাকুল হোলো কামিনীর মন।। युझ रुप्त निभीशका छेड़ात পठ का। विकठ मलिका कर्प मलक्कि ब्रांका॥ विव्रहिनी विनाटभटक मलिकात कलि। শুভাচার হেতু শখ বাদয়ভ পলি।। इ। खभूषी कमल विमल (भारत) कदत्र। अमात्रत् भटक तरक व्यानटन विरदेत ।। রসভরে কুলভর গোলাবের দল: . ८२वि जमदात मन क्टन हेल मल ॥ जारमारम लंदक लंडा कृटिट्र कक्रम ! कामिनी कतिएक मार्भ कम्मंटर्गत जून ।। মালভী চত্পক চারু পলাশ কাঞ্চন। काकि यूथि यदा शक्केत्राक इरलाखनाः क्ष्यपूष्। क्ष्यते किर्श्वक ब्रख्यदक। थक् हिंड क्करिक खाना कृत्रकार ॥ দোলন কন্তুর কিবা পি<mark>ৰ্ভি পূ</mark>ৰ্ণাগ**্** वित्रहिनी समदत्रदक मश्दन दयन माना मामज्ञी विकेषि जुलाई मीमिस्थ। जत्माक जनता जिला वामक वक्षक ॥ व्यक्तिक भेकात्राम । अनाम भागमा त्रत नामब्द्रम बूटि क्षत्र बंकुल ॥

तामा राम क्मश्री काम भातियम। नकटल कि किटल वड कविट की वधा। नकित कू कारक चन-देकाकिल खमत। ' दा दह का**ल करने** शक्ति निवस्त !! नाती द्रक सूर्य प्रथ भनन लालन। হাবে হাবে পকিগণ ভুঞে কত রদ।। वंत्रदेश भाषा कृतक लादन समा। षिक कवि कटह द्वामा इहेल आंकूत।

-लतीक श्रायम इसा कृतिन माना कून, क्षीन चलिक्न, ष्ट्रित स्कूष्म भूरका মতান মধুপারেন, সম্বনে মাতি গানে; मतार्थ छन् छन् छछ।। ए दान खना एक, सीब्राड माझ (कंड, ्रोत्व एतिन अक्टि। तमनी के करण, अमनि क्लार्ट बरल, क्रमांब एउं:त मन्त्रीकि। मधुल खम खर, अनुशृक्ष छर, লোলুপ কৃতি হে বিভাগ। ब्रामाण यह त्यरंत, मत्नाण सन तार्थ,

संदर्भ काशियक क्षात्र ।। Buts shight once etalias. 

## সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাৰ্য।

ভন্নারে ভোর আর, বাকারে ভ্রমরার,
টকারে কোদণ্ড অবজে।
আলিরে শুন বলি, তালিছে বিষ অলি,
জালিছে কোকিল ক্ষাণু।
কিনির মনোসীল, ভদর সরোসীল,
দহর ভাবিষা সে স্থাপু।
কিসেতে বাচে বালা, বিষেতে দেহ জাল রিষেতে বসন্ত অরীউ।
দহিছে কামবল, বহিছে অভ্রন্তন,
কহিছে বিশ্ব কবি মিউ।

#### পর্যর 1

का विभी का बता चाक (शरत का मचाना।

कृत शरक व्यक्तिक मरह मृश्वाना।।

खन रह जमान कर खन रह चरनाक।

रुवा गवाकात प्रत्न त्रिक हम रनाक।।

चन को गवाकात प्रत्न त्रिक हम रनाक।।

चन को त्रिक शर्व होत्व विभाव।।

त्रान प्रवृत्न कृति विभाव।।

त्रान प्रवृत्न कृति विभाव।।

रमत जा हार्य क्षा का का सिनीत कान।

रहारतक सम्मानन चत्रिन कान।।

रवारतक सम्मानन चत्रिन कान।।

বুকিনু চম্পক কলি তর অভিপায়। भनक भक्ति হোরে বিনাশ আমার।! বর্তর অর বর ভূমি হে কিংশুক। বিলারিছ বিরহিনী কামিনীর বুক ৷৷ समन दमनाकृष्टि कूटखब्र विकाश । কেডকী হইমা দস্ত মোরে কর প্রাস্থ , अन निष्द्रिण यदा अन एक दक्कि । কানের অধর ছোমে প্রসারিছ ছুই।। खान (र कक्षण जुलि वड़ निमाक्रण। হানিতেছ ফুলবাণ হোরে কামভূণ।। হোয়েছ ব্ৰুনীগন্ধ। কাদের নিশান। এই হেডু নিশী দিবা দহ মোর প্রাৰ্ स'रलंद जियद जुमि बारशंभवक्षे । নেই ওবে অঙ্গে মোর লাগে কলেকুট।। नकत्त विशक्त कि दि दहेता आधार। · विक कवि कहर करव डाक्टिव काश्रास ।।

जिल्मी।

কন্দর্শ কটক যত, করিছে কামিনী হত, অধিকন্ত সলয়া সমীর ।
গালাযুক্ত স্লিক্ষ গতি, 'দেহে লাগি কপব্তী, কামশরে হইল অভির।।
রামা বলে পক্ষবহ, কি হেতু আমারে দুহ,

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

নাহি মোর প্রাণনাথ, সদা হান বজাঘাত, इहेल कि क्रुडांस आमात्र।। नलकः भीश्रदत त्रदक, शाकर पूजक नदक, जुमि विक्र विक्रिमशे वास्। एँड धर्म ठाइ दार्थः, हात्त्र विमानल मार्था, विमाण केंद्रिह भाद णाशु ॥ क्रम (इ मक्द्रश्रक, क्रम चाजिक चक्रक, ধরি আমি ভুজনার পার। कामिनी कतिल वध, वल शाद कि मण्यान, हिश्मा देकला हिन्न नाहि जारा।। ন্ত্রন ওছে বৃতিরাজ, তাজহ সমর সাজ, আমি বালা প্রভি বিনা শব। मिश्र कव देवती मही, आभारत क्लेटल अही, वल (मथि भारत कि विভव।। खन उरह होमकत, टामात कीत्र पत्र, शैमकत्र (क वत्न (कांमाम। छ। (इाटल এमन (कन, लाटन कार्यानल (इन, बित्रवधि षड् स्थाव भात ॥ अ्थाकत छव नाम, निकास आमादत वाम. (पथ (शाक् घटन कामामन । এইতাৈ ভোমার কার, ভাতে ভুম বিশ্রায়, वृष्ठ नित्रा कतिह थदन।। अनत्भा नखान मधी, (व निक यथेन निथ,

. (नई निद्देशकात नामसः।

किवि करह हुल चत्रे, ख्व यस्त मिर्ट व त्रहे निव क्षिण हर्द क्षस्त ।।

# শাৰ্দ্ধ বিক্ৰীভিক্ত হল ।

ति श्वारित, विशेष ध्वी। इपाय परिना विष्ण परिना निशेष प्रता, भा ना नंदा। विष्ण प्रकार महीत प्रता। मिला प्रता प्रता, भा ना नंदा। विष्ण प्रवा प्रता, भा ना नंदा। विष्ण प्रवा प्रता, भा निशेष प्रता प्रता का ना स्वा प्रता का नि के के भा नि। प्रता का नि भा निशेष प्रता भा नि। प्रता भा नि। भा नि प्रता भा नि। भा नि प्रता प्रता भा नि। भा नि प्रता प्रता भा नि। भा नि प्रता प्रता भा नि। भा नि। भा नि प्रता प्रता प्रता भा नि। भ

রাজ মহিন্ব প্রতি সধী গণের উক্তি। দীর্ষচতুষ্পদী।

धनोत महम कानि, नंशीनम क्यूमानि, यथा हिल ताकताणी, क्यानत्व याहेता । नित्तमस्य शृष्टिभाषी, खन मार्गा खन वाणी, क्रिल्लि कि क्रिक्सणी, क्रिक्स हिंदु भारेता ॥

मरचाहिनी छव कना, काल श्रद्धा माना धना, कारात स्थापत समा, माचावित्स किंदू हा। ভিনি যেই ধীরা মেয়ে, তবু এত ছঃখ পেয়ে, আছেন ভোমারে চেয়ে, না ব্রবেভো পীছু গো:।। इरेसा बलुख्योन, विद्रश्यी চित्रमिन, (जरत (जरत जनुकीन, अन अन करह ना। মরমে মরম ভেদ, কালে করে কামে ছেদ, कारुविमा कत्नुत्कन, शांटकामात्कः यूटन मा। त्योवत्न याजना यक, न्याद्य कृत्त श्रान इक, ভোমারে কি কব কভ, ভুমি কি ভা জান না ৷ জান আপনার বেলা, কেম্ম কামের খেলা; मधाद्य केत्र क्ल', अद्य दुवि मान मा। শুনিয়া স্থীর বাণী, মৌন যুক্ত মুখ খানি, लब्जाप्यदम द्राक्षद्रानी, करह भिन्ना ताकाद्र ६ শুন দেখি মহারাজ, কেমন ভোমার কায; কৰিবারে পার লাক, কি কহিব ভোমারে ।। क्टबड़ बार्स इत्र, दल कांद्र ब्रह्म द्रम, নং হইল পার্মর, বালা ভালে ছুখেতে। मत्ना हिनी चर्नलका, रहेल योवन शका, **चत्र वाद्य विश्वाक्या, वाहि चारवा प्रत्य**का। कर्गाकान बहिक्क, रहेन अधर्महाक, शिक्टलाटक ट्यापयूच, जांत्र (जेमामान रहा यनि रहे देन (बार्ग, कूटन कूट्य भागद्वार्ग, शिक्टलाहरू अशटकांक, करेंब्र बंक शान रह ।।

## সভীত চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

प्रतिका श्विती शृष्टि, तूबह कर्त्यात शृष्टि भाषि कि विलित भाष्टि, भाश्यत्कि माती हि। कतपुषि स्विष्ठात, गोष्टि इस श्राष्टिकात, विक कृषि करहे भारत, महिर्डिमा शृति हि।

#### नवस्त्रा छत्माथ ।

लयु विभनी।

ভানি রাণী মুখে, রাজা মহা ছংখে, वाहित्र एक मिलावाद्र। পাত্তে ভাকাইয়া, ভাট আনাইয়া; वानारेन नमाठात !! कतिल लिथन, बिक विवर्त मंत्रवता मित्रभारय १ नहेंबा निश्रंत, यह छाउना, **हिल शिल बाबा (म्हारा)** मन दक दाई, कलिक भोदाई, मलकुमी मिलिलात्र। खविष् मत्रम, मोख्या मश्रम, महाब्रद्यां पूछ यात्र ॥ टेक्टक्झ (क्रब्रम, हिल्म निर्ह्स, कुरु क्वा का मकरेश।" क्टिंग क्रीहे, तिहा पर छाहे, नेपालांत्र निल छटन ।।

## সতীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

वित्रा वे श्रक्षांन, हतन मूरु काल,
कानात करवारक जाति ।

श्रेश जरवार्यात्र, वातिकारक यात्र,
मथूरा श्रेष्ठाश काणी।।
कालीभूरत भ्यात, कतिन श्रार्वित,
नरतस्य मनार्थ यथा ।
नृश्यत लीयन कतिया ज्यर्थन,
कानात्र यव वात्रका।।

श्रीत नत्रश्रक, हत्रविक मण्डि,
श्रीत नत्रश्रक, हल द्रवस्त,
मरनाष्ठ्रश्र हत्य जन्न।।

बन्द्रास्य मरद्रास्य मगद्र याजा।

#### পরার ।।

त्राकावत्त कि कतित्त वल ७८त पृष्ठ ।
स्वित्व भीवत मम रहान सरुक्छ ।।
भागात वाकिन भन क्ष्मात्ता कीवन ।
कतिव नरताक भूरत कृतिक गमन ।।
मर्न मर्म मृशक्ति भन्नम केलान ।
मर्म स्वाद साहर्क हर्द रहमाक नकान ।।
स्वि स्वाद राहर् कृता माना मान करत ।
भारता भगी विक सून भूतिक किक्टन ।।

এত ভারি যুবরাজ আন খাচরিয়া। मृत प्रदेश कि का अकरण किता।। शतन्य कृष्यान शुष् पूरे शा । क्रान्ड जारवर्ष क्षिकि करत महनाथ ।। (क् करनः वि्ष्क् भूकुम्स (क् अधूनृपनः ) किकदत्र कङ्गशा किङ्क करता विख्द्रगा। व'क्षा कप्लाकक्ष न'म मीन नवामत। এ অধ্যে যেন किছু क्रुপापृधि दत्र।। কমলা সেবিভ তব চরণ কমলা ভক্ত রুফা হেডুলীলা জগতে নিম্মল !! **अक्लारम क्रिया द्रामा देनका क्रि क्रा** उटक द्रकाक्षमात्र शृंतादमः मदमात्रथ ॥ জুমি নিতা মির"ফার কার্যণা নিরঞ্জন। कूल कर्त्र कर्त्र यम मरभाग्न छक्षम ।। र्ट्न मटक छाँक यपि रैकन नद्रनाथ। इहेल चाकाम रानी खुद्ध घकामा ।। नदुत्रं भगन कर्त्रा व'क्षा निष्कि हरव । खिनिया मध्य छाटम भूनक वर्गरन ॥ रुति भवाभूदम कृति वक् व्यानम क श्रम् मामन प्रा करत कि जिमान ॥ चार्था महिता मर्था क्रिका खर्चम । वाहिका क्षेत्र बाजी हारेल नरतम्।। नावा शक्तिकृतम कृत्यू माश्रमात नका।। त्नाचा दशक्त संबद्ध मित्राधिन नात नका ।।।

# সভাগ চিব ভাষ্ঠ কবি।।

আৰা আরোহণ রাজা করে ত্রা করি।

আহির উহিরি আরি করিল আইরিন।

আশের হেরিয়া বেগ ভারার ত্রাস:

কমে গিয়া উভরিল সরোজ নিবাস:

আবিআম গলনে মূগতি পরিপ্রাস্ত।

নিকটে উদ্যান এক দেখে নবকার।।

বির্যে কারণে করে ভারাদে প্রতেশ।

রচিল উমাচরণ ভাবি জ্বিকেশা।

### छमान वर्गन।

### द्रमावलि-इन्हा

ফিতি তলে উজ্জল বিনোদ বিপীনং।
মন্মেরে মুনিজন মতি উদাশীনং।।
জাতি যুথি মজিকা মালতি কদবং।
তমাল তফু শ্রেণী তাল পরিলয়ং।।
সরোবর সুন্দর শোভে চারি ভিতে।
সরোবর সুন্দর শোভে চারি ভিতে।
বর্জ বিকশিত ভুবন মোদিতে।।
বছতি সমীরণ নানা ফুল গল্পং।
বর সুথ অজ্জনে গতি অভি মন্দং।।
শত শত পাস্তারী কত দেবলাক।
বিকশিত চল্পাক গোলাব সুচালা।
নিশ্ল সলীলো কমল দল শোভা।
মধুকর আবলী ভাতে মুনো লোভা।

# ২০ সভীপ চিত্ৰভান্থ কাৰ্য 🕽

क्रम कल क्यापण उर् क्रम मूरणांचिक क्रम लगा श्रृक्षर ॥ मद्रावरम क्याप्टिक स्थानी स्थम। कम कल का किन खत् खत् खत्र ्र **छ। छक कार्यद**्यात्रद्यत्र वश्या। নুষ্ঠতি খঞ্জৰ শিখি শিখি বনিষা। স্ত্ৰক সহ সারিকা মতি হরবিতা ৷৷ **डेल्लारम वंशकि द्रकि डेनरयागी। मटक कामानत्त मर्ख विद्याशी।।** ফুটতি কুসুম চল জ্বনত সেলং। মলয় সমীরণে বিগলিত চেলং 🔢 নরপতি মনুখ করুতল বসতে। ফুলভাবে ফুল উপহাসে হসভে।। व्यक्षर्भक तिथु निह निह मूत्रः। खन्छि मनश नीत्न मानन भूद्रः ॥ व्रकृष्टि क्रिवेमाव्य व्यवन्तर । व्यक्तिक मरमास्त्र द्वारायली समार ॥

बात्रक बाजिकात शतकात मर्मव ।

### পরার ৷৷

केणारित केलान रक देवल वान कूटल ! वित्रदश् करिया कूश देवदन कल मूटल !! क्यारित क्यारिती लक्ष नथीशन ! चित्रालक स्वारम्क कहिल गमन भ

ia. इक्लब्र कल्लाक रहति मानीव छेमता **চमकिछ (शारत धनी निक्रनीरत** क्या। धिक धिक क्ष नथी कर निर्देशिका। (मश्र धारका हेहा (मश्रिक् युश्रन।) (य क्ष अखदा-सोब कार्श निव्वधि। व्हित्रिष्ठ ७ क्रि निक् यात्र त्व मसी। मचर त्राकरनाद्र रुद्रि म्ह्रभन्। षन् रहात्ना भूनकिष शंन षकि मन।। कम्भ क्यूमाकात भीर्तिष्ट छन्। पिथिएं पिथिए अस्य बाट्य मत्माझन्।। कारक रहति कामिनीत मन हेल हेल्। ুডগমগ তনু রুসভরে তল চল ।৷ विकर्छन एवंत्र (यम श्रुपि कम्निमी। শশী হেরি যেন অফুলিভ কুম্দিনী ৷৷ **छे जराह करण मध्य छे जरहा सब ।** পরস্পর প্রেমকাষে লইল বন্ধন।। **उच्**रतत मरक्रक विवाह कहे ज्ञारन। **छ हे जब जादन माज जादन नाहि जादन 11** भारतभार मरमामाना देनल इंहेल । मिथा तिथि इरेट अकिट अकि निली। भद्रम वन्त्र शृद्रगुगंद्र शिद्रिधात । कामरणव भागतिक करत्र कवा। मध्य ॥ वह नत्न करेनल रहेत वारिक। लिनश्रमा महत्र ज्ञामा द्यारत यक् विष् ॥

शृक्षा नाक काँद्र खरवं यात थीरत थीरत।
यात यात कांच लाटन छात्र किरत किरत।।
भारत वक कृतिकी एएटथ रपदे कछ।
छात्र तांचात्र छक्त निरमय निरुष्ध।
छात्र कां छरल भग नांच कांत्र।।
दल करव रुखारला छरात्र व्याप्त कांग्र।।
व्याग तांचा भूना एक लरत थनी यात्र।
तिहल छमाछत्रण मिक्क तहनांत्र।।

#### ----

### मटचारिनीत रेकारती।

### পরার।

তথানে হেমাক নৃপ করে আরোজন।
করমে অপুর্ক সভা বিবাহ কারণ।
অস বস কলিসাদি যত রাজাগণ।
ক্রমে ক্রমে সকলেতে দিল দরশন।।
হেনকালে আইলা মন্মর মৈডিমান।
হেরিয়া আপনি রাজা কর্মে সম্মান।।
সিংহাসলে বসিল যুবক কিতিপাল।
বক্রে মন্তার যেন শোভিল মরাল।।
হেমাক সভার ভূপ হেন শোভা করে।
মানে ভাবে রাজাগণ প্রভাম সভা।
এই পারে ব্রক্তির ব্রক্তিশ প্রভাম সভা।
বি

# সভীব চিত্ৰভান্ত কাব্য।

**धर्यादन (इमाञ्च भूको क**दिस्। ब्रमुद्रम । ने भारत क्षेत्रको क्रिल क्षर्यम्।। मिनिज्यी नयी निल कुञ्चरमत माला। मण मत्था त्रोमामिनी मह जूनवाना है। क्ना। द्वि नर्स बद्ध इत्ला हमकिछ। (रुद्रिटक (रुद्रिटक इत्ना अप्तन स्किछ। त्राकाशन **अधिपूर्ण** कना उपनीत्र। সধী পরিচয় দেয় কন্যার বিদিত।। প্রিনীর মন কি ভ্রমর বিনা চার। चन विना हाछकिनी चारना नाकि शाया। সকল ভূপভিগণ অভি ছঃথে ভাসে। नेथी लक्ष क्षंत्र कादब्र मग्रस्थंत शांरम ॥ नातात्र निवधारन लक्नी भान भाजा। রভিপতি হৈরিয়া রতির মন লোভা।। দ্রিত হেরিয়া যেন বছ প্রাপা ধন। वाति रहति शात स्वन शिशामिक सन।। त्न रे क्ष निक नार्थ (रवित्रा कामिनी। পুলকে কম্পিত কারা বেমন দামিনী।। करत मिन्ना कुलबाला यहा कुछ्रालः। क्षणान कतिल चत्रमाला चत्रभटन ।। व्यवहर्व द्वांबावव लिद्यः वन्यान । विक कृति करह नरव कहिले खेवान्।। भारक राज्यारि श्रमान।

महा सूर्य विकार्धाः वृत्रभाना । গমন করিল ভবে নুপতির বালা।। भवार शांटलटक स्विक्या। व्यवस्त्री। विवाह छेश्नाटह करन द्वाका मिल प्रता ।। ভভদিন জানি ভূপ কন্যা বরপাতো। कहिला इदिया क्लिक छेक्टब्र भाजा! रुद्रिष्ठा ७ रेक्स लट्टा कुलाक्रमार्थर। व्राक्त भारत माथाहेटल क्विल् ग्रेसन्।। वरत्त्र द्वित्रा क्षा नात्रीत्रं यक्। मधादेश द्राह नद्द वृद्धि द्रशास रुष्ट ।। রলে ভগদগ তনু নবিনা নারিকা। मुखाईमा द्रदर (यस हिन्न भूक्तिका 🕸 रा कारक गरेन गांतू পड़िल, लक्ष्म । कि भाषा ता चाक देशक सरेदर (माइन ।। चनद्वात्र त्रदन त्रव द्रम्ती चरता। रष रेक्टक शास शास्त्र रतिया करेता। कारता क्रम्ल्ट्रेस्ट्र लाएक लाम देवनवार्गिक अपानदेन बदेन कारता शहरक्षत्र गाणि।। कारम अस्त्राह रहारमा कात्र माश्रीस्त्र कि अस्त्र । विविधिको अद्युक्त कारम् अद्युक्त मा न्द्रमाञ्चल मह्नद्रण क्रिया,नव्यक्षे बनाटक रहिला करक मिलः बामारेशन ।। 🚛

## শতীৰ চিত্ৰভান্ত কাৰা।

প্রদিন প্রভাতেতৈ উঠে মরপতি। करियातम कार्याक्यम करत्र मीख्रशिष्ट ।। ব্রাজার মহিবী ভবে ক্যারে সাজার। (हरिय़ा माहन तिभ काम साह याग्राः বিচিত বসৰ জার নানা জলকার! বালমল করে যেন ভড়িত আকার।। अकाष्ट्रांत (शास त्राका राम नानिवृत्य। পূজিলা গণেশ গৌরী কেশবে কৌতুকে।। (वाष्ट्रम भाष्ट्रका यक्षी मार्कछ व्यक्तिना। কন্যভালে ছোঁরাইল। মহিগন্ধ শীলা।। थाना इसी कल शुक्रा शात्रहना निधा निखिक निन्दुत भन्दा आंत्र नर्स्कीयिधाः निकार्थ कळाल चात्र तकर काथन। ত্ত ছীপ পূৰ্ণ পাৰ ভামর দৰ্পণ।। इक्तिओक करत्र ताका श्लारत भागनिक । পুলে পিতৃলোক গণ বিধিয় বিহিত।। করেতে বান্ধিল স্তা যেমত বিধান 🛊 🗀 चारताथि कमलीच्य कर्ताहेला जान।। धनारम कमात्र देवला शक्ताक वानमा क्**रकाधिक तरबद्ध लिख्य गमा**शन ॥ रमायुनि क्रेस नाम नर्से त्यां होता माभाव देवना वज युवक मतित। त्तार्था पुनक्ताकाम अध्यापका कानि । वाकिरक अर्बाक्टकोकी कालान वाली।।

# अर्थ । गुर्भाव स्वाम् स्वामा स्वामा ।

नद्बद्धः ननात्र प्राचा मेहलत्माशतः। त्रवित् समावत्र नात्रमा किक्त्र ॥

े शामि खर्ग वर्गमा।

नम्-जिभमी।

कुल श्रुद्धाहरू, विधित्र विश्वित, भीटिशभदत बनाइला । वरद्रात्र वत्रम, कृतिया अभागः, वञ्ज अक्ष्रण निला ॥ वत्त श्रुद्धार्क, क्रब्र खुनिक, खी जाहादत्र याह नटर । राम महामंत्र, विलय नाह्य, स्थार्षः यात्र वरम् ॥ कर्त महात्राक, विक श्रुव शांक, नहें बा कितन ब्राह्म । (मिक् महीशाल, शाक्या आफारन, ्रि 😘 बाडीहा त्नाकृत कटन्न ॥ दिम्कादि हाटक, वर्ग कात बार्थ, त्रानी नद्भ क्या बाला। प्रशान केन, चानित्र। विश्वन, दक्रिया उद्भग जामा ॥ कार्यक्री बदकः मात्रीवन बदनः TER TER . WITHER!

## পতীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

ক্ষণারে আনিয়া, উলু উলু দিয়া, করে যথা বিধি নীত।। ছাউনি নাড়িয়া, উভরে ক্রিয়া, উভরের নন্টলে।

জী আচার পরে, বাহিরেতে বরে, বন্ধুণণে লবে চলে !!

কন্যারত্ব থানি, সভাষাকে আনি, রাজা করে সম্পূদান।

कत्रकत द्रव, महा मरहायन्तर, चिरक करत्र विम शाना।

প্রদক্ষিণ পরে, দৃষ্টি পরস্পরে, বদল করিল মালা।

छक वामानारम, बिस्म अञ्चित्र,

वत्रमङ् वत्र वालां।

করে ধরি পঁথি, করে লাজাছতি, বিধান প্রমাণে সব।

भेड भेड (हाल, बिन्द्रा मार्गाल, भिकारवर् भरभद्रवा।

डेलू डेलू निशं, वह कमा निशं, वामदह बमान हानी 1

अध्याष्ट्रम, ভावि नातामन, वान मधुत्रम वानी ॥

# সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাৰ্য।

### দল্পতীর স্থদেশে গমন। প্রার।

পরম আনেদে হোলো বিবাহ সম্পন। कुक्षिल मक्तीत जुल शत्रमःस कस ।। বাসরে ভূপতি সহ ভূপাল বালিকা। পরিহাস করে রামাগণ সুর্শিকা। विवाह वान्त्र वच्छ ऋच्ध नत्रवाद्ध । বিদার মাগে মন্মধ উঠিয়া প্রভাতে।। ব্ৰাকার রমণী ভবে কন। কোলে করি। গদ গদ ভাদে কহে তার থুঁ জি ধরি ৷৷ मात्राटक स्मार्टिका द्वारी स्माकाकूल (मर्। শ্বভাৰ**ত জানে স**ৰে জগতোর সে**ছ**।। यद्र मिला (योजुक कदिशा भूतकात। नाना द्रष्ट्र दर्थ इन्डि वद्ध व्यतकाद।। শশুর শাশুড়ী পদে করি প্রণিপাছ। मदयाशियों जह हिल्दलन नवनाथ।। वारक कर्गवाको (ए)ल (थाल चंत्रकाल । काँशला मिलिता वीन (वन् मूत्रमाल।। चार्श चार्श बह्दछ वाक्तिष्ट विकाता । ্মধুরি বুলুকি শক্ষ দোখরি দোতরে।।। मधुत नरशीक त्कृष्ट गाम कारक कारका मनान्द्रन ब्रह्म क्रांक वाताकनी माहि ।। कृतिक शमन देशन दिन व महेशा

পুরজন সকলেতে আনুদ্দিত হয়।
বরণ করিয়া বর কনা ঘরে লয়।
নিয়মিত কুলাচার কর্ম যত ছিল।
এয়োগণ ভাহা সব সম্পূর্ণ করিল।।
ভাতি বজা স্থলনেতে পায় মহাহলাদ।
বানা দুর্মা শিরে দিয়ে করে আশীর্মিদা।
বরকনা হেরি করে নরন সফল।
বলে কি শোভিল এ ইন্দ্রাণী আখণ্ডল।।
পুরজন সকলেতে পাইল উৎসাহ।
বিজ করি কহে হোলো বিবাহ নির্মাহ।।

---

मृत्याहिनीत कूलमर्काः ७ वानत वर्ग ।

### जिलमी।

বল নিশী যায় কতকণে।
বলে নিশী যায় কতকণে।
ভাবে পথিনীর বঁধু, কতফণে পাবে মধু,
নিজানাই ভাবে ডাই মনে।।
ছণও পাকিছে রাজ, নুপতি ডুলিয়া গাত্ত,
ভূত্যগণে করেণ সজাগ।
পুনীর সার্জনা করে, কেই যায় কার্যান্তরে,
কেই পাকে নুপতির ভাগ।।
শারীগণ কুত্তলে, কন্যারে সাজাতে চলে,
ভূবণীয় জানা করা লয়ে।

# गडीय हिन्दु के स्वीता।

किया त्र करलब है। में स्वय खालकला है। म (नरादत नत्रम क्ति रूप्त ।। स्गितिक देखल मिना, मिल विभा भौति क्रिया, वाश्विदत कवती मदनाहत । मतिका मालात (माण, अध्य सम मधु लाज। मिल ভाल निम् त स्मत ।। विकित इक्ल चत्क, शहारेहा मत्माहत्कः भन्नाहेल बाबा व्यवद्वत । ज्याज्या क्रम यात्र, ज्यात कि क्रत कात्र, नाथमङ मिल बाद्रीशन।। क् नरहरू मनिशात, जनकल लाजा कात्र, त्वन (वस् भूदन कालिगी। ्वलम्ल कर्नकृत, जात्ना करत् कर्ममूल, वि इवि धति विन विनि ।। बाजारें बालक कारल, त्यम छात्रा मधीरकारल সিভি পাতি ভারার প্রকাশ। একে রক্তাধর ভাগ, জাতে আয়ুলের খার পুরাইতে পভির এরান।। त्रकम कद्दम करत, पामिनीत श्राचापरत, . भाष्टिक् बन्द्रा रेनेट्क कात्र। कूटक कुल वस त्रद्भु वाक्तक कि यद्भ नहरक्ष कारन त्नानानाम ॥ निष्यादक क्रमारात्र, दिया कर ता बाहाह, क्षेत्रिक इतन मन रहत्।

## সভাৰ চিত্ৰভাগ্ন কাব্য

নানা অভরণ পায়, বাম বাম করে তার, উদর করিতে পঞ্চলরে।। একেতো ৰূপের শেষ, ভাছাতে করিল বেশ, হেম বছা যেন করি রদু। হৈরি রাজ। হদোলাশে, আনন্দ সাগরে ভাসে, কহে ভিজ কবি গদ গদ।।

### পরার।

नान! तटक मधीशंग करते चारवाकन। क्क, म क्छ ब्रि ह्वा अध्वः हमस्य ॥ ফুলমর শ্যা থানি পর্যান্ধ উপর ৷ ভার চারি ভিতে দিল ফুলের বালর ৷৷ कुलात मनाति छथि कुला छेनावान । कुल्बद्ध , बद्ध किया ब्रह्म विमामांने ।। ' नाना युला चलकात तिहा विश्वा কামিনীর করাইয়া দিল কুল বেশ।। थाना ভরি রাথে কুসুমের মালা গাঁথি। অশ্নীর সামগ্রী রাখিল মানা জাতি।। रेक् मना बड़ा जाव बादिएक कल। भाकामा त्रमाल (क्स्युत्र भाषिकला। ক্ষির পেয়ারা পেঁপে আতা হ্মধুর। , भागक्ति नहेंनादत्र स्टात अकृत्।। , माधन मिरिति (मध्य मिरिकीय क्षिपा)। चनक्रम काहानज चौज नज लामा ।।

্ছান কুঠি ছাৰ্ম <u>সামা আর তার পিঠা।</u> अगुरु निन्द्राः अधिकायन यात्रं मिठा।। नत्नम राषामक्ति आह को इन्नी। वत्रकि कीरतत शोला त्रार्थ कर छिलि।। मधा स्थी होना नका हिन दम जरा। बाद्ध मदन्तिका त्न क्रंब मदनीक्ती ॥ त्रार्थं कार्यि भंजा मजानाति शामिरणात्रा । शत्रम नीलेफ काका जूकि मानद्रशामा किन्मिन् वामामानि (मंखने वाणि न्दि। म शम (मार्न एकाश थाना इ क्लें हुदि ॥ हर्ना हाया लाइ (शत चानि यामा यह। वर्गभाव भूदि नरी बाद्य बंदनामक।। मटनास्त्रं थिलि वानास्त्रः। जर्हती। ताट्य मानाहेबा क्नेटकत्र वाहा खति।। डाथिल (कामानि धनेश छवाक श्रेष्ट्र । जाविकन जना नम अहें विश्वा ाण्डिया हून त्क्या चित्रति क्रि। नर्स अया ध्यक कहिल नर्डेडी।। धरेवाम जयीनने देवल आह्यानन । . विन कवि करहे (राटना विभा भागमन ॥

निक्षा क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र

## সভীত চিত্ৰভাৱ কাৰা।

হুদি নভে শশী, পাইব প্রের্গী, उथलिय (अमनीतं।। ध्यमन जयश, निभीत छेपत्र, রবি গেলা অস্ত গিরি। कुपूष धकारण, कामिमीत श'रण, वाका हल थिति थिति।। মভ স্থিগণ, আসিয়া তথ্ৰ, मुत्भदत्र (मवन कदत्र। ह मत वासन, करत कारना सन, ' (कर् छाट्य नमान्दर ॥ जित्कामक व्यानि, छत्रन छ्थानि, ক্ষালন করার কেছা मृत अन्द्रकार, आवि मन्द्रका, মার্থার করিয়া স্লেহ।। णानिया निवन, त्थाम छद्रक्रिमी, वनाकेल कांत्र वाटम । (सब कामतिबी, माधा त्रीमाबिबी, (माखाईल द्रापा चाटमा। সহ্চরী ভাষ, চামর দুলার, त्रत करह त्रमञाय। त्कर करत ठाउँ, बाशतीत बाउ, . (कर करत्र भतिराम।। कीत्थ मुथ्हके थुलिया चामजी; वाम मंत्रं (मध प्रथा.

11 9 11 .

ভিজ কবি কয়, সব স্থিচয়, এ কপে করে কৌতুক।।

-

विशास्त्राम् (यात्रा । सामश्री इन्ता

কামের সমীপে কি রতিকে গেল রাখিনা। আ:ভিপাতে স্থিপণ বাছিরেছে থাকিয়।।। কাছে কান্ত। হেরি ভূপ কামাশক্ত হইল। वज्य हुश्य कति क्लाल जुल नहेल।। প্তিক্র স্পর্মে ধনী থর থর কাঁপিছে। लाटक वर इस्तावव यव दात्र व्याभिष्ट ।। চির বির্হিত ভূপ বলে একি প্রেরনী। অলিকে কি মধুদানে লাজ করে সারসী।। कर दो महिव भाव मरम कुलदार्गण्ड। मदर्मा प्रदेश दाशक प्रदर्भादला व्यारिश्टक !! বিগলিত করে রাজা ক্দরের ছুকুলে। करत थरत यूर्गल डेबड कूड सूक्रल।। পুলকে পূৰ্ণিত ছোৱে ছবে নৰ নামিক।। প্ৰতিপ্ৰতি কৰে কথা প্ৰতিশ্ৰীতি দায়িকা :। कि कर कि कर माथ अप राख कारमहरू। আমরি কি করে। ঠাট ছাড় ছাড় বেনেংছ্যা নিষয় জ্বয় তব মোর অকে লাগিছে! ষতি ভাগে কৰি মাবে ছ্থাসুর জাগিছে।।

## সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাবা।

কান্তা প্রবেথিয়া ভবে কহে কান্তা বল্লা।
ভক্ত হেতু কুচকুন্তে দিল কর পলবা।
ক্রশাথা তোমার অভি সুমঙ্গল কারণ।
হোরেছে যৌবন তব কলপের বারণ।
মদনের আগমন হবে আল তরলো।
উন্নদ্ধ রম্ভা তল্ল আরোগণ করলো।।
শতিবাকা শুনি ধনী মৃত্ মৃত্ হাসিয়া।
পুলক অর্ব তনু তরি যায় ভাসিয়া।।
জীবদ কটাক্ষ করি কহে শুন বঁধুছে।
ভূরিতে করিলে পান ফুরাইবে মধুহে।।
ভূরিতে করিলে পান ফুরাইবে মধুহে।।
মধুকর ছাড়ে নাকি ফুলতর নলিন।
কথায় কথায় রভিরসে দেঁহে মজিল।
শীউমাচরণ চাই এই কপ রচিল।।

প্রছম বিহার।

একাবলী ছন্দ।

রমণ কথন সে কথা নয়।

রসিকান্তরোধে কহিছে হয়।!

রুঝ রুঝ রুঝ ভাবক ভূপে।

দোঁহার বিহার শ্রুছম কপে!।

বিধু কমলিনী একই ঠাই।

বিপরীত রীত বিরাগ নাই।!

96

गटदाक छेलात श्रेक्षम नाटि । हरकात পिंडल हैरिक्ट्र में रहा। চুম্বক পাধাণে নিশান রাখি। চুম্বিত লালেতে প্রবাল নাকি॥ कल्भक्रमधन्न चार्टरम होना। উভয় বিরুতে উভরে বাঁধা।। श्रद्धार काहारक हकूत्र नल । सूरथत कुमूम द्रष्टित्रं कल ॥ मक्त भरत दृष्ट्व नहा नम्ड कम्लिड विष्ठेशीस्त्र।। मध्य (इन्ट्स (चन्ट्स त्रांस। क्षू वा शहद मुक्त धात्र।। व्याम्बर्धा कि तिथं ति कर्त्रवरत्। 'জ্ঞাধের জাধার শক্তি ধরে।। क्क डल छूटि महान यह । উर्काड डाकिट्ट काविनवहा। जातिव वकात्र मच्टन करा। खादरंग क्रिल खंदग रूष।। श्रम् भवन याहेल मूत्र। कटलंत भीत्रव स्ट्रेन हुत्र।। अनिमाहत्व बहिन देश। कथानि स्माहात ना भूदत न्याहा।।

# সভীত্ব চিত্ৰ ভানু কাব্য।

### প্রথম বর্ণনা। পরার।

রভিত্রান্তে নরপতি বারি দিলা মুধে। कलभावि छेभटकान थाहेत्व द्वर्थ।। প্রেরসীর সহকারে ভায়ুল ভক্ষ। क्षात मुक्ता (मला चिक मुलका।। বলন হেরিয়া ভূপ রতি অনুরাগে। कामिनीदक वनाइल निम काल ভार्गाः मधिता अनक त्रा मरन महा मूर्थ ! হাত্র পরিহাদ কভ কহিব কৌতুক।। ক।মর্বে মাভিয়া কামিনী রসাধান। প্তিথতি করে চুষ আলিক্সন দান।। वित्रह मखारम मारह जामावन हिना। श्यिम मद्रावदत्र कदव चान्नदम्म पूर्विन ॥ রভিকাপ পক্ষ হইল ফুলভর। মধুপাৰে মাছিল মদন মধুকর।। मूथ इश्मावली छाटछ सूर्थ की छ। करता। ं यूवक यूवजी भार स्थानरम विवृद्धाः। काटमत कोजूक कामिनीटत कति काटल। রভিরতে নিশি সাক রাজা অক ভোলে !! धाष्ट्रक्षण नाक कंत्रि निक कार्य याय ! পাত মিত্র আদি সবে আইল সভায় !! ब्राक्कारय (अल मिवा नगागड मिनी। उषा भेष नित्रचित्रा आहरत महियो।!

কভক্ষণে নাথের হইবে আগমন।
রাখিল এইরি করি যুগল নয়ন।।

ংলকালে পভি আসি ভুরিতে মিলিল।

শীনে ধন মীন যেন সাগরে পশিল।।

একপে বঞ্চরে নিশী মদন আবেলে।

বিভেদাদি কুলক্ষণ গেল মুরদেশে।।
আশাক্রপ ভক্ষরে ধরিল সুফল।

আহাদন করিয়া নানস টলমল।।
গ্রেমানকে এই ক্রেণ দল্পতি ভাগিল।।

শ্রিটাচরণ নয় কার্য প্রকাশিল।।

রংশার ও রাণীর কানন বিহার এবং রাজার এ ব্রহ্মশাল ও ব্রাহ্মণের প্রতি রাণীর শাল ৷

পরার !!

शक वरत खन कानिकात नमन।

भागार घिन यादा कात विवत्न।

करे कर्भ कि कूकान नागती नागरत।

मस्तरमध भूरत कारत स्रथंत नागरत।

कर्क मिन मस्ना हिनी मेंनार्थरत वरता।

देखा दत कान्य मशकार।

दमक स्राह्मक क्षेत्र कान्य मशकार।

तमायस विद्यादिक वात्रा निकार्थ।

तमायस विद्यादिक वात्रा निकार्थ।

# সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

**व्यम्भीत मदमामाध शूत्राटक बरद्रण।** वटन थिटम कटव चाकि कत्र मूटवम !! প্रভित्र कारमरमा नडी अक्स इहेस ! प्रताकति मत्नात्लां मूत्रका कहिल।। करकड नवीन। डाट्स महा मोमामिनी।-পতি পঙ্গে চলে ব্লে থেন আত্রিণী।। ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে নুপ প্ৰেরদীর সংন! छेशनीच इहेरलन खक छरश्वरम ॥ কুমুম ক'নন লেই অতি মনোহর। ন'না জাতি ফল ফুলে শোভিত সুন্দর।। গোলাব চ'মিলী জাতি চম্পক টগর। সেউভি রজনীগক। বকুল স্থানর।। মৃত্ মৃত্ বহিতেছে মলয়া প্ৰনঃ भोतरे पाहिङ करत मन्द्र मन !! ভ'লে বসি প.ক গণ ভাকে কুছরবে। ঝকারি ভ্রমর ভ্রমে কুস্থম সৌরতে।। ভাহার মাঝেতে গিয়া নবিন রাজন! नाती नटक तनद्रदक करत्र द्रम् ।। म्रथ म्रथ ब्रक ब्रक क्षाद्य म्भारम । বিহার করেন দোঁতে মাভিয়া সদলে!! '(भी मत नवमा यथि, यात्र (न हे खान। व्यारक केटरे भिन्नाहिला कतिवादत ज्ञान ।। श्रृका क्रथ मुक्त कदि मिता अवमादन।

मृद्र ध्रीक (मधि श्रीच मंठ क्रेम्प्रम । क्षाचाल इहेरलन क्यांध च्यांमरन।। नियं त पहल कन मन्तरथत अवि। त्त जुड़े आधात कात्व अत्तरत्र कृषा छ।। ক্ষা কল মতে। ভোর ভাপ্নার পাপে। মৃত কলেবর কর্ব মম অভিশাপে ।। শুনিয়া অবনি পতি প্রমাদ গণিল। মুনির চরবে আসি দম্পতি ধরিল।৷ दिन्दस नुशकि खद कदत्न उंशिद्दर । বিজ্ঞের মহিমা প্রভু কহিছে কে পারে।। श्राक्तियूटन विश्व विकार विकार विकार দেবগণ হোভে দ্বিদ্ধাণ শ্রেষ্ঠ হয়।। গঙ্গরে সমান ভীর্থ নাছি ত্রিছ্বনে। কুম্বের সমান দেব নাছি দেব গণে।। रेवकटवटक शिवनम क प्याह्य छेखम। স্কুড়তে কেহ নাহি হয় ধরা সম।। সত্যের সমান ধর্ম নাহিক কেংখার। নাছি কেছ প্ৰিত্ৰত। জানকীর প্ৰায় । रेक्द अम दल बाहि शुक्र अम क्षिता। গুরুর সমান পূজা কে আছে ভিটীয়।। নাহি কেহ বজু জেওঁ ভাতার নদীন। ঞাজ পিছা সম নাহি মিল কুপাবার।। क्राप्रभी मूत्र खर करण अनमन ।

## সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

(मरे क्ष मूत्र नंत्र व्यापि यह करा বিশ্ৰের সমান কেছ না হয় গণন। रवरमञ्ज दिधाका केवा कत्रिला क्षकामा। श्विदीटक मर्कक्षम खाकारनत मात्र ॥ ে জন প্রাহ্মণ গুরু নয়নে দেখিয়া। अप्रकात का कटत्रम मख्य कहिता ।। क ल ए त नद्र नद्रक्र का का द्र वान । एक निम हत्त्व सूर्या श्राटन क्षकाम !! क रा ' , दिस्थात वारम आमि कति वाम। যেমন ভুজ্জ গৃহে মণ্ডুকের বাস।। कानरम व्यानिका कडू मा कति विशात। কি কানি কুবুদ্ধি শাক ছোলো দোহাকার।। শাস্তোক্ত বচন কিছু না ভাবিয়া মৰে ! কামিনীর সহ কেন পাইলাম বনে।। বিশেষ ভোষার বন কেমনে জানিব। জ্যানিলে সর্পের মুখে কর কেন দিব।। কামে মন্ত হোমে ভত্তক্রীন হারাইর।। क्रमा कार्यह चाल शिष्ट्र ना जारिया।। তুমি জ্ঞানি কমাবান তপস্থি মহাস্ত। হুপাকরি রূপাকর, কোধে হও শান্ত। নৃপতির স্তবে তুই হইয়া ব্রাহ্মণ। मटन ভাবে मामाना ना रूटव वहेनन।। थानकति शद्य कानित्सम श्रुमिवतः। च्यामा (कह बटक मटवाटकाट मन्द्रभन १६

্তখন হইয়া স্থাবি খেদাবিত অভি। नविनया करितन महातक छाछ।। আপনি রাজাধিরাজ কেমনে জানিব। জানিলে আপনা প্রতি শাপ কেন দিব॥ রণী বলে করি প্রভু দরা বিভরণঃ महाजाटक भाश टेहटड कत्रह (माडम।। ভূমি জগতের গুরু ওছে দর:ময়। নযুপাণে ওঞ় দও উচিত তো নয়!৷ स्बि वाल मम वाका ना इत्व लक्ष्यो। कर्ग काल मर्था ब्राका इरवन शंखना। এত শুনি নমোহিনী কঁ/দিতে কাঁদিতে। ডখনি যুনির প্রতি লাগিলা কহিছে।। প্रতিরে ঘেমন দিলে বিমা দোবে শাপা ভোষায় শালিব ভামি ইবে নাহি পাপ।। व्धिष्ठ উদাভ कार्य क्रिक्ट विमाण। পণ্ডিভেরে। নাছি পাপ শাত্রে স্থকাশ।। মদ শাপে বাকা লোপ হউক ভোমার। कांद्र नाथा यम वाका थे खिवादत आते। পুন কভু দিভেপারি পতির জীবন। करव वाकाकृष्टि ७व इहरव ७थन।। नहीं नाम खत्व सूर्वि खवाक हरें शा। চিন্তিত অন্তরে পেলা কুটিরে চলিয়া ।। শাপে মুক্ত হোতে তপ জপ আরম্ভিনা।

### সভ্ৰমাচৰভাষ্ঠ কাৰা!

মহারাজের যোগাবলম্বনে জীবন ভাগে। পরার 1

उक्तान्त्र माल खनि ममर्थ द्राधन। ৰ**টচক্ৰ খোল নাড়ি ভেদি সেইফণ।**। মুনাধান স্বাধিষ্ঠান স্বিপুর পরে। অনাহত বিশ্বভা আর আজা নাম ধরে। এই বটচক্র যোল নাড়ি অবিধান। একে **একে কহি শিষ্য কর অবধান** ।। क्रिष्टा समुद्राः स्वराग शिक्ताथा। छनि । म्क्सळ न धना व्यात मनः मर्यम्भी।। दिख्या विकक्षः भाद्र दाशु मकातिगी। বুজি সংগতিণী জ্ঞাৰ জুম্ভৰ কারিণী।! তেজঃ শুস্ত বল পুঞ্চিকরি, প্রাণ-ধারিণী। পর্বৰ প্রাণ হর। পুনজীবন কারিণী।। এই ছাবিংশতি ভেদ করি শীঘ্রগতি। মনঃ সহ হংস ব্রহার আবু করি স্থিতি।। এই রূপ যেগে করি সৃহর্ত থাকিয়া। আলাতে অপেন আলা দিল সমর্পিয়া।। ल्लाब कृषिक माला लहेशा करब्राक । জপিতে লাগিল বিষ্ণু নাম ছাক্ষরেতে !! পশ্চিমে চরণ রাখি পূর্ব্বদিকে শির। অস্তবে করিয়া হরি ভাজিল শরীর !! णात्रिगीत जी हत्र श्रमंत्र कमटल । পুলিরা পুলক জীউমাচরণ বলে !!

## সভীত্ব চিত্ৰভাৱ কাবা।

### রাণীর কানলে বিলাপ। গদ্য

মমোহিনী পিতির মৃত্যুক্ত বজাঘাতে অচেতন হইংং ভংক্ষাৎ ভূমিছলে পতিত হট্লেন এবং পুনর্মার চৈছনা ঞাগু ইইয়া মথাথের মৃত দেহ কোড়ে নিবেশিত করিছা फेरिक श्रांत क्रान्त्रम क्रिक लागितामा है। माथ, कि हरेल, ভূমি কৈ অনুমাকে পরিভাগে করিলে, গুলয় এত দিনে কি জানিতে পার নাই যে পুরুষের মন পাষাণ হইতেও किंदिन, शुक्रासत चालालव विरावहन। नाहे, महा नाहे प्रमाहा নাট, প্রাণনাথ উঠ উঠ, আর নিরপরাবিনী কুল কামিনীতে ক্লেশিভ কোরোনা, একবার বিশাল নয়নে বীক্ষণ কর, হচভাগিনী মলোহিনী পিতা মাতা প্রভৃতি পরিত্যাগ করিয়া ভোষার চরণে শারণ লইয়াছিল, এক্ষণে শরণা গ্রুকে ছাত্তিভাগে করিয়া তোমার পলায়ন পর ২৩॥ टे हिंड महा श्रीमबद्ध श्रामय बहेरक अमृत्त छेर शांधिब इंड्रेन তশাং হতাশ সূর্যা, বৈধবা যন্ত্রণা রশ্বিদ্দার: চিরকাল ্ৰেশত কর্ণার্থ সন্দিত হুইল, একণে জীবন বিকল প্রাণনাথ, ক্ষরিনীকে কি দোবে পরিত্যাগ করিলে, বুহি পুর্ফেকার অপমান মরে পড়িয়াছে তজ্ঞা এতকাণ ত্রিয়মান द्विष्टिश्राष्ट्र, श्रिमारियरम कड मान, कड इल, कड वल, कड रमाय করিয়াছি ভাছার প্রভিক্ত প্রদানার্থ বুরি এ অধীনীকে একগাঁকনী কানন মধ্যে রাখিয়া প্রস্থান করিলে? আগণেশ আমি ভোষার অধিনী, অতত্ত্ব দাসীপ্রতি দয়া কোনে कत्त्र भारकाष्यान कत्र, का, व्याग वल्लासः कृषि व मानीः

# পতীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাৰ্য।

প্রধার বাক্ষেত্তে স্বল্ধ কৃতিতে যে ক্ষেত্র সহিত ক্ষ্মত विकार हहेरवना, अक्टरण एम कथा क्षेत्राया स्वित्रा ्काशाश शमन् कतिटल, आशकाम, ७ ग्रामम् अपि निविधि বলিতে কে, প্রেম্নি, শতেলাকে জ্বংমন্দিরেস্থান দিরাহি এ কথা যদাণি মথার্থ হইত ভবে **আ**মার দেহ কি কা**রণে** াতন হইল মা, এফালে অধিনী সুবিতে পারিল যে নারীয় शव . अविश कद्रिया जूना है एक शाम, शाम, विश्वनार्थ रकामान া ৮৪০ আর এ অবিনী দেখিতে পাইবেনা, রমণীর कठिन क्षांत्रतक विक, अथनत कामात विरूत्न वीछित्र। णाक. अत् लालकादिन् आन वश्यक आर्गचंत चामात्व च्यामात्र (फ्टन्ट्रक त्रिक्षिक, व्यामात जुला निर्माकीटका आजू ্রহুই নাই, এইফাণে প্রাণপতির পশ্চাৎ গান্ল করে, ওয়ে ্কু, প্রাণনাথকে হারাইরা আর কাহাকে দর্শন করিতেছ अक्षेत्रकार स्विष्ट रुअ! अत्र अम अथात किम्राला म्खाप्र-মান আছ, যে পথে প্রাণনাথ গমন করিয়াছেন, সেইপথে व्यामाहक मीख लहेश हल, माथ है है एक वात्र व्यक्ती-নীব দিকে দুটিপাত কর, নাথ ছবিনীকে ন্যা কোরে একবার গা**রোম্বান কর, ছে বন**বাসী বিনিত্রিত প্রক্রিগণ ্ডানর) একবার অনুগ্রহ করিয়া নাথকে গাজোপান बंदरण चानूमणि कन्न, रह व्यार्थित, क्रारम तक्रमी निक াঢ় ভিমীর ছারা বনস্থালী ব্যাপিত করিছেছ, অদুরে াচক কুলের অমঞ্ল ও ছুণিত চিৎকার ছারা এমন ্নণীয় বনস্থালীও আশান্ত্ৰৰ ব্যেষ্ট্ৰেছে, বৃক্পভিভ

শুক্ষ পর রাণী মর্মর শব্দে অদুরস্থিত গিরিওহার প্রকি ৰনিত হইতেছে এব্যিধ সমলে কুলকামিনীকে বন্মগো ভাসহার রাখা কর্ত্তব্য নয় অভএব উঠ উঠ একবার অধি नंदक मन्यन क्र हा अकरा कि छेगात व्यवनायन करि মনা সাধ হও বিপদ সময়ে অভিরক্তা প্রকাশ করি ও না श्वाकारवर्ग मञ्चतर कत्रक भूगू कि गूक छेलाइम् अप १४. जकरण निरंदर मंद्रण लक्ष । हेका किक्षः महमाकिनी कि उन्द्र स्य क्रिक्त लाशिटलम।।

-468

মনোহিনী কতৃক শিব স্তৃতি।

(काउँक इल 1 লম শস্ত হুরেশ আরাম্ভ কংরী ! मामी चर्च भीनांक बिम्म थात्री।। ভূমি বিশ্বনাথ প্রভূ বিশ্বপতি। আমি কিম্করি হে তব গৌরিপতি।। ত্ব চিক্লিড হে নাৰ্ অন্য জন। প:ল পৰে তব মন ভীতুমন ৷৷ **कटत इस्टे क्व. (श्राह्म क्वांटे क**र्ना वात भक्र ए भक्त बाग करें।। विপ्रास्क चरकः भक्ता रहा। স্ব কিলর বলিত অংখ্রির ।। छर वजन महक स्माक माछा। क्षिमाधिन बर्द खुत मक श्राहा।

## সভীষ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

কুপা কপশতক্ষ নাম অপশ নহে।
নিজ ভড়েল কেন এত নির্দ্দির হো।
এ প্রপান প্রসন্মে রাথ চরণে।
তোমাভিল নাহি জানি অনাজনে।।
কুরু দানীরে কিঞ্চিত কুপাদান।
নহে শকর শকটে যার প্রাণা।
খোর আপদে বিপদে রক্ষ ভর।
উমাচরণ কক্ষণাগ্রমী ভর।।

রাণীর সহিত মন্তির সাক্ষাৎ এবং উ:হ:কে রাজ্য ভার দেওমা ৷

#### भवात ।

এই কলে সভী করে শিবের শুবৰ।
হেনকালে পূর্ব দিকে উদর তপন।
কুরুই কাকেতে করে কলরব হনি।
নাথের বিরছে হার হায়! করে ধনী।
এখানেতে রাজমান্তি নামে সভ্যাশন।
ভাবিতে লাগিল রাজ্ঞী ভূপের কারণ।।
গত কলা মহারাজ মহিনীর সনে।
বিহারার্থ গিরাছেন নিজ্জন কাননে।।
এখনে। হলোলা কেন পুনরাগমন।
বুবিবা হুইলু কোনো বিপদ ঘটন।।

# সঠীয় চিত্ৰভামু কাব্য।

এতেক ভাবিয়া ভবে মাজি বিচক্ষণ। दरन शिक्षा करत्रन (फें)कात्र कारस्था !! ञ्बरभारम উপनीक इहेरलन एथा। রাজপুণী হায় হায় করিছেন যথা 🔃 (पश्चा खनिमा मद त्रकाशन योत्र। রালার শেকেতে অভি হট্ল: অছির। সংখ্যাহিনী সজ্ঞাবরে করি দরশন। विक्षत (भारकरक चारद्रा कारद्रम कन्द्रम ।) अनलुत मिल्लित्र रिधर्या धति महन । গ্ৰণী প্ৰতি কহিছেন প্ৰৰেখ বচৰে॥ अन्यन कतिरल मार्गा भारवना बाकारब । ं नदाधील इत याहा बिक्टिक दक शास्त्र।। अख्या भारत महाना कहताम कालार । রাজবেহ লয়ে কর গৃহহ আগমন।। व्यम्बद्ध कविषद्ध या इस विक्रि। ताथका एक य हैं सा कड़ी यादव अबिन्छि ।। म खाद कदरन मही स्थमाखिक मत्न। यायमा यायमा मिक्कि भाव मिक्किटन !! ছाর वाका ध्राम मम नाहि श्राहाकर। यनि विधि इतिनित श्रीक त्रक्त धन।। আমার প্রতিক্রা শুন্মান্ত বিচক্ষণ। यिक क्ष्र निष्ठ পाति भक्ति जीवन ।। তবে পজি লয়ে গৃহে করিব গমন। -नजूरः ध एम् मम कतिर পण्न।। " ..

# সভীৰ চিত্ৰভাকু কাব্য।

জ্ম গিয়া কর এবে প্রজার পালন।।

হানীর জাদেশে মন্ত্রি অভির ছইয়া।

মালাছ্যথে আইলেন গুহেতে চলিয়া।।

গালাল না কহি রাজমূত্য সমাচার।

শিলীত আছেন রাজা করিলা প্রচার।।

শালার গালন করে ছইয়া সুভির।।

সিভামণি পাদপন্ধ করিয়। অরণ।

ভীটমাচরণ কার্য করিলা রচন।।

#### D-8-6-

মপোছিলীর প্রতি এক যুবকের কটুউজি এবং ভাষার প্রতি মনোছিনীর উক্তি। প্রয়ার।

खेक वरल खेन खेन खेन खोकां ममाम । जनस्त्र याहा याहा हहेल घडेन हैं। जनकारी मिल्रव्यत कतिया विमाय। खेकांकिनी भेव लट्स प्रहिल छथंस। कि कतिया काशा यादय मा भारत छेशाय। कि कतिया काशा यादय मा भारत छेशाय। किवल नाटबंब लोशा क्या होत होता। यटक भार बंबबर्था (क्यां मान्या) किनी। कटश्रेष्ठ क्यांता कार्या (यम (जीमामिनी)। 3.

विधि योरज्ञ व:म छात्र शाम शाम पाना क्षि किए युवा अक ताई गर्थ यात्र।। रठा थ स्विल मिट्ट जाम्हर्या स्थापिनी। वरना क्रांभ (माध्य (यन दश्कार्य मामिनी !! मुक्तित रशेवना हास हल्लक वदना। लाइम शूर्णम् इथ शक्तक (लाहना।: বৃহ্লিত্ম ভার পীণ পরেগ্রা রুত্র অলকার অক্সে প্রতর্ভ পর।।। এই ৰূপ ভার ৰূপ দেখিয়া মুখা छ। ম্দনের বাণে হোলো পাড়াযুক্ত কভি (एकतामी ध्वकः मिर्ह मही करलवरतः। निकटि याहेटक माधा ना स्थाला अखड़ा। अभूदि योक्सि क्य माहिनीद अहि। \*ব কোলে কোরি **বনে কে ভূমি** সুবভী 🛚 शक्की किन्नशे किन्ना मानवि रहेटव। श्वक्ष वहरम धनी आंभात्र कहित्व ।।' करवाहिसी वटल वंश्यू कि श्रिमारव इ:४। . ম অথ র জার রাণী বিধাত। বিমুখ ।। युवः दत्त भग श्राक्त करेग्रा नमग्र। माद्दत (क निमा कल जाम'न जानव।। खेळाल कमक किमि किदा कव काशा। कृश्ये भूदत यादव अत्मा इत्य (मात्र काला ॥ मरणाहिनी यूनरकत्र (इन वाका छनि। करिट्टम क्रिक (कार्ष्य जनक व्यक्ति।।

# সভীম্ব চিত্ৰভাস্থ কাব্য

फार्टर्ग एडरविছिन् जुमि धार्मिको स्क्रम। এখন জানিনু আমি ভোমার মনন।। জ্ঞান হীন হোলা যেই পর পত্নী হরে : याय (मारे कुञ्जिलाक नवक इंखर ।। চহুর্দ্দশ ইক্রাবধি ভালা কোরি ভেগ্গা **हिंदा चार्त करना करना कृष्टे** हारा !। স্থান্তীর ভোগ হর ঘোর কাল্চক্র। यादर करवन ब्राङ्ग व्यक्तीमन नका। পরে আদি अन्यूल्य छ ७ लात धाम। এচ ক্ষি মন্ত্রে বিরাম ৷৷ দুবা কয় ওকথার স্থানে যুবতী। ভেমেরে বাইতে হবে আমার সংহতী। नहरक ना यां अयिन कामात काल्या। वटन अन्ति (लाट्य घाटव) काट्य कन्नि खस्।। মন্যোহিনী ভাবে একি ছঃচ্থাপরে দার। প্রাণ যায় নাহি ডরি পাছে ধর্ম যায় ।৷ कानिएकः रेम्टवत शत्र बल नाहि चात्र। অসাধ্য সাধন হয় নামে কালীকার !! এত ভাৰি কালীকার স্কৰ আরম্ভিল। দূরে থাকি দুরাশয় শুনিতে লাগিল। कलोकात शम्यून द्या कमरल। श्वित्रा भूवक अडिमाहद्रग वरल।।

# मञीय हिला और कारा । मरन्ताहिनी दर्क कालीकात खर।

্ভুল্স প্রয়াত হন। भगवातिनी जिन्द जान कबी। नमण्डिका छछ छूने छ इजी।। इसी इक कि इसकि इस्य स्ता। **अ**ज्ञान स्वान मा कात्र! !! समः मुद्रमी निद्व नृत रछ।। नमः मृकी कवी समः हिल मखा। নম শক্তিৰাপা নম শূনাকারা खाउटम खाउटम खाउटम मा छात्रा !! बब क्छन। क्छना ५७मानी। নম উত্রচণ্ড: প্রচণ্ড' করালী।। न्यानामी मनामें। विषयात नाता। शुक्त म् खुक्राम खुक्राम मा काता।। नगरक महादेवसम्बी दिख्याणा। মহদেও শুদ্র নিহার নিপাতা।। নম নিভারপা নিরাকারা কারা!! गुक्रम शुक्रम शुक्रम मी छात्री ॥

> দৰ্প, হ'তে যুবকের প্রাণ্ড্যাগ । প্রার ।

---

द्वयर कर्त क्रांत का खद कालीकाते। रेमरद्र क्षांचाद संघ किया हमर्काद्र॥

# সভীৰ চিত্ৰভাম্ম কাব্য।

#### 

ু মন্মেকেনীর দেবতালিগকে শাপদানোদাম ৷

भशाद्भा

श्क्रवाल श्वित निया कर व्यवशिकाः व्यवश्व श्रेष करिल मान्यादिनी नहीं।। श्वापाल श्विता श्रेष्ठ भव त्रहेवान। श्रिष्ठा दिल पिया निनी व्याह्म ।। श्रीक्रा दिल त्रका करिलन नातास्था। श्रीक्रा श्वित त्रकी श्रीहेसा (१७न॥

**अक्रिक्क भारत कति करहन मुन्दरी।** তুমি **জগন্নাথ আমি** জগৎ ভিতরি।। জগত পালৰ ভার আহত্য ভোমায়। कि (हरू वक्षमा अञ्च कर्र भागाय।। कि कर्ष्य जामात्र कास शिल (काषाकाद्र) কোন স্থানে কার হাতে অপিলে আমারে कशरक यटक मूह आह् निलाझना। विद्यार्थ मक्ते जात्व मरत्याल भारक ! विवय जैयमा ভোগ नम्ब यथार्थ। काशन देखात चाटक क्वल दूर द ।। ভার সাক্ষী যত লাধু জগত ভিতরে। का किया अवर्धा कर शम भाग करता। किछ धकु यनि (कर चना काना) के भरबीद्व (स्वार्श स्वरमा कत्रर व वस्त्र हो एरद म दक्षित कर भात वड़ हार। বইন্থায় ভাগে বিনা নাহি হয় সুস্থা অভএব এমুড়া বঞ্জি দাসী প্রতি। আমার বাঞ্ছি অদা দেহ আবঃপতি !! ইন্তৰ পেৰত্ব মোক্ষ নাহি চাই আমি ৷ চতুবৰ্গ হৈতে ভোষ্ঠ দেহ মন স্থানী।। জুমি জগতের নাথ ওছে নারাহণ। এইকণে দেহ মম পতির ধীবন : অনাধা এপনি শাপ দিব ছোমা প্রতি। मान मित्रा (कामारद अर्थन अकानकि।।

## সভীৰ চিত্ৰভান্থ কাবা।

বিনাশিব ভোমার এ সৃষ্টি অবিকার।
ওচে শান্ত ভ্রান লোপ করিব ভোমার ।
ওচে ধম ভোমার করিব ধর্ম লোপ।
থামর যমন্ত জনা করিব বিলোপ।।
এই কণে মুয়োহনী মহা সালী মন্তী।
কণিলেন কোপ করি সর্বাদেব প্রভি।।
এই কহি শাল লিভে উদাহ। ইইলা।
১৯৯০ নদী তীরে গেলেন চলিরা।।
গাই শাব বক্ষে করি হৈলে। উপনীত।
দেখিয়া দেবহাগণ হইল কল্পির।।
ভালান দেবগণ জাত্রে করি বিধি।।
উপনীত। হৈলা তীর ক্ষীর প্রোনিধি।
নুরেন বিন্ধুর শুর যত দেবগণ।
গুটপানি হোমে কহে প্রীউমাহরণ।।

(मन्डा करु क निकृत **छडि**।

#### मीर्घ डिशनी।

জুনি নিরংকার শূনা, জুনিংহ আকার গণ:,
দীনবন্ধ দরামগ হরি।
আকাশ পাতাল ভূমি, যত কিছু সব জুনি,
ভার জ্বংখ ভরিবার ভরী।।
মাধ্য মধুস্থান, সদ্ন মনোমোহন,

स्त्रात्री स्कूल स्त्र हत्।

নমঃ গোবর্জন ধারি, নমং গকুল বিহারি, গোবিন্দ গোপাল গণাধর।। নমঃ গলাশ লোচন, নমঃ পর্নণ আসন, প্রালাভ প্রন পারন। নমঃ কালীয় দমন, জগলাধ জনার্ডন, প্রশহ সুবিংহ বামন।।

#### and Comme

ক্ৰেগাণের বিশুল থাকি উজিক, ও কৈবন শী আৰু এবং মন্মোহিনীয় নিকটে আগমন: প্রার ৷

पर्काल शिविपुत्र करिया छात्।

किर्विण सव रुथा क्रमण प्राप्तमा।

पृमि नित्न उद्यारिखंद प्रिकादि शन।

एता महमाहिनी महिल यात्र तम मण्यमः।

किर्माण उत्याहिनी महिल यात्र तम मण्यमः।

किर्माण उत्याहिनी महिल यात्र तम मण्यमः।

किर्माण प्राप्त करितान निर्विपनः।

प्राप्त करिल प्रश्य किरितान निर्विपनः।

प्राप्त करिल प्रश्य किरितान मक्ति।

प्राप्त करिल प्राप्त महिला महिला।

विद्य करितान मर्त करिता महिला।

मर्क करित लाद इस मावव कर्त्याः।

प्राप्त करित लाद इस मावव कर्त्याः।

प्राप्त वित्त करिता मर्ग्य क्रमण ।

क्रमण वित्त करिता करिता क्रमण क्रमण ।

क्रमण वित्र करिता करिता क्रमण क्रमण ।

क्रमण वित्र करिता करिता करिता क्रमण वित्र हो।

क्रमण वित्र करिता करिता करिता क्रमण वित्र हो।

क्रमण वित्र करिता करिता क्रमण क्रमण ।

क्रमण वित्र करिता वित्र क्रमण वित्र ।

क्रमण वित्र करिता क्रमण क्रमण ।

क्रमण वित्र करिता क्रमण क्रमण ।

क्रमण वित्र करिता क्रमण वित्र करिता ।

क्रमण वित्र करिता क्रमण वित्र करिता ।

क्रमण वित्र करिता करिता ।

क्रमण वित्र करिता करिता वित्र करिता ।

क्रमण वित्र करिता वित्र करिता ।

## সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

हेहा खिन दमवर्गन द्रादम व्यामित्रका মংমাহিনী স্থানে সবে চলিলা ভুরিত।! চিরকাল পতি সেবা ধ্যম কেই সভী। প্রকর্ণনাত্র তেল আয়শিখাসম জেণ্ডি গ ্ম্বাল্নে বুসি প্রিশ্ব বক্ষে ধরি ' र भव कारिक भारत मता करत करि। ে, ব মুখ্রা কবি সন্থী পাত্র সেহেতে। হর জুলতা মলে পরিয়া গলেছে গ ুপর আলকারে ভূবণে উজ্ললা ৷ ১০ হুৰ সিঙ্গু বিভিন্ন **ইন্দ্ৰোল কল**। 🛭 ় ুণ ব্যাচ সদ সুস্থির যৌবন। ्य लहराबर ७ तः हल्ला बद्धाः । ट्रांश (मर्काग रहेका विष्यस्य) ्रा<sup>3</sup>न' व्यष्टत व्यष्ठत व्यष्टत व्याप १ अया शुक्रक बिडिमाइदेश वरल ॥ 🗈

বি এর বিপ্রবালক বেশে মলো(হিন্ট নিকটে দ গমন ও ভাছুরে সহিত ক্রোপক্থন।
শ্রার 1

প্রিপতি বলেন শিষা করছ আবণ।
স্বসন্তু শলুকে অত্যে করি দেবগণ।।
মন্মোর্নী নিকটে এলেন ক্রমণিত।
দেখি সতী করপুটে করিল প্রশতি।।
। বিস্না

স্থানিকে ব্রাখিয়া কাছে কান্দিতে লাগিল শুক্ল বাস পরিধান ডিলক ধারণ। িরে ছত করে দণ্ড পুস্তক শোভন।। क नारक कल्पन लिख क्ष मरनाहत ।। ভারাগ্র মধ্যে যেন শেটভ লাল্ধর !! বিজ্ব মালায় সবে বিজ্ঞ ক্ট্রা েবগণে ভিক্ষত্বত কৰিছে লাগল ; ব্রেক্রা শিব আগ্রে করি ওচে দেব্রণ। कि रहेकु भारेल रहेश कह ,म वहन । পরে ছিল কহিলেন ম্যোহিনী প্রতি। তক্ষে শব একাকিনী কে ভূমি যুবতী।। বার পত্নি কৈ ছেডু এখানে আগমন। कड खब इसती मकल विवद्रगा। ख वि নমোটিনী বিপ্লে প্রণাম করিল। यथा:यात्रा मरशांधरन कहिएक लातिन।। जटहरकात दांशी जामि अहे मम श्रीका नक्त काम रत कल मत्नाहिमी नडी।। সম্পতি আমার পতি শরীর ভালিয়া। অন্যাথনী করি মোরে গেছেন চলিয়া।। বিলাপ করিয়া দেবগণে ডাকিলাম। প্তির জীবন মম দাও মাগিলাম।। (एवडाव नम माडा चात महावान। नहिल नहित्व क्षेत्रू नरह विश्वामान।।

### সতীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

এই হেড়ু দেবতা নিকটে সর্বজন।
স্থ বাঞ্জিত বর সবে কররে প্রার্থন।।
পতির জীবন প্রভু আমার বাঞ্জিত।
ন দিলে শাপিব দেবগণে স্থানিশ্চিত।।
নামা দিয়া পুনরপি শুন বিজ্ঞান।
গ্রেবলি মনোটিনী স্থাছর তালা।
প্রার প্রাক্তে বিজ্ঞান

বিপ্রবালক মন্মোহিনীর পতির মৃত্যুর কাট ক্লিন্দাস করেন এবং ভাহাকে মৃত্যুক্ন্যা ও কাল সমাদি দক্ষন কয়ন।

দিল এলে মন্ত্রেছিনী কছ সে বচন ।
কোন রোগে তব কান্ত তালিল জীবন ।
বারদানী আমি সর্ব রোগ চিকিৎসার।
আবগতি কর তুমি ফনত। আমার।।
ব্যোগগ্রুছে মৃত্যু তুলো অথব। বিনাশো।
সপ্তাহান্তে বাঁচাইতে পারি অনারাশো।
বাধে যেন বন হৈতে পশু আনে বাঁধি।
কোন বল পারিগো করিতে আন্রন।
আবগত আছি সব ব্যাধির কারণ।।
বাহা হৈতে ব্যাধি বীজ তুই অনকল।
স্থারিতে নারে আমি জানি সে সকল।।

বিনারেরাকো ফোজে শালে অথবা বিষাদে। यां म भारत बाँडा हेटक शांति अधारण ।। দ্বভিন্ন ভিজের বাক্য মহাথের র'ণী : প্রেফ **চিন্তা ক্রফারে** হৈছের করে মিউবংশীন ात्राम लिख्न शास कर्न मन्भव। भक्त का नव का विषय देश का ঞ্জিজা কবিলে মম বাঁচাইবে প্তিঃ বিপরীক নহে তব আছবে শক্তিয়া किया अञ्च मान्ह त्य किছू मम **भा**टक । ভথ্ন করিয়া পতি বঁচ'ইবে পাছে 🔢 জীবিত হছলৈ পভি সভা সন্নিধানে ৷ ্জ্জ পিতে ন।পারিষ পতি বিদান্দে। ভূমি জানী ব্ৰুলা আদি যত দেবগণঃ मम लांड रेक्टक (आफे मक् एक रमाकान ।। র্মীর হওঁ৷ ক'ড়া শাস্ত স্থামি বিলি ৷ বহাইল জানে সংকুল্ফাক নিনী ঃ অভাবে কুলটা ভুটা নারী হয় থেটা। নিজ পতি সহত অভাৰা করে সেই !! প্রতি যদি রুম্পীরে কররে শাসন। কেব শকা হয় ভাছা করিছে ব্রেণ্। ব্ৰহ্ম: ৰুদ্ৰ ইন্ত্ৰিবিধি ভুক্তনর যত। সর্বজন মধ্যে ইহা আছে স্থবিখ্যতে !! खामि त्रम्भीत कर्छ। खामि विमामान। उमगीत धक्र नाहि चामित नमाम।।

## িসতীয় চিত্ৰভামু কাব্য।

্ঞি বিজ্ঞ ভোষাতে সকল শক্তি আন্তে: বংল খন মৃত্যুক্নটা ভাকো মম কাছে ! হ'ল্'হিনী বাকো ছিল্পিশ্ৰ সেইকাণে! ल संभारपा व्याक्तांक कतिता किन करना। ং চিংছন মৃত্যুক্ন) কর দরশন ৷ ্দেবৰ গারিধানা লোহিত ব্যন্তা াসংবৃত্তী সাহিত দলাযুক্তা ম**হাসতী।** - সিন্পু চভুগেন্তি সন্তান সংক্তি !! <sup>७ '६</sup> दकः स्था पिट्टट्य नवाकारतः। 📑 📇 ব দিকিতে দেখ কালখলি ঘাঁরে।। ब द्रावि चार्या काल महाउँ काल । ংকট আকার গ্রীয় ভাষ্কর স্বরণ: इत द्व (यालक्ष्क इतिवर्ग लाहन। ध्य शम कृष्णवनं त्नाहिक वनसा। नश्च देवन शौन प्रक्रमाला कट्य । क्षित्रहम कुक्षमाम शहम क्षेत्रहा। যাম সক্ষম সভী করভার পরে। धका विक याँदित भून विकास मरमादि।। अंत्राल्य कृष्यवर्ग तदित्र सन्सन। যাগিছেৰ সম্মেৰে ব্ৰহ্মসনাতন।। ভবে মনেয়াহিনী ক্রমে দেখি তিন জানে ৷ किट्ड लाजिला चट्छा यम मदमापरम ।। অকংলে কি হেডু ডুমি হরু মমপতি! खनि यम कहिः इन मृत्नु (इने) थि ।।

मधाउ चकाल मठी (कर भारि मत्र । जियदेवत व्याकाविमा काइनामा इटव्रा জামারে কি হেডু জুমি কর জিডকাসন<u>ঃ</u> भृद्यकन्या व्याद्धाविना ना क्रि धर्पः শুনি সতী জিজাসিলা মৃত্যুক্ন্যা জাত। আন সত্তে কি হেতু মরিল মম গড়ি 🔉 কুমি নারী জান সভা স্থামির (বদন। कटन क्व सम श्रिक क्रिंग्ल क्रन्। শ্রুনি মৃত্যুক্ন্যা ভারে ক্রিল উত্তর : প্রথমেতে সৃত্তি যবে করিল ঈশর !: করিলেন এ**ই কল্মে আমারে সূজ**ন। কোনোমতে আমাটেছতে না হয় বারং 😘 मठीमाधा एक त्रिमी पूमि इंड ४मी। ভিন্মরশি কর সভী আমারে এখনি :। कृति कृति अक्रभटक सम्राम निवात । কিন্ত কোনো দোষ সভী নাহিক আমার !! ত্ব'র মম চতুষ্ঠি পুত্র ব্যাহিগণ।! ক'ল আজ্ঞাবিন ভারা নাকরে স্পানন ট उद्द नडी यथारयाचा काल्य समक्रित्र। किछानित (क्रम सम পতि तहेल हिता। কলে কহিছেন শুন আমার ভারভি। কে আমি বা মৃত্যুকনা কেবা পিতৃ পতি 11 क्ता नर्क वाधिशंग कात्र कि भक्छ। কি করিতে পারি বিনা ঈশর আর্ডিয়া

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

यात जाउदावरण स्त्रम्य कहाना । बिक्न बिक्न **क्यां गर्व** कत्रदश गाध्य । थात जरम बरह बाशू ऋरबामन इन्।। যার ভয়ে প্রজাপতি সংসার সূজয়!! संदर ভरत विशु मृक्ति करतम পालन। বিধে ভারে সংখার করেন পঞ্চানন্।। अक्र-१८७ थया किया भाषती खदत यात्र । क कि इक्क च्यापि खरम भागरन एक में विश িকপাল গণ থার আছেঃ শিরে ঘার ৷ ६ शत व्याञ्जास द्रक कल भुक्त ४८त ।। হার ভারে মেঘগণ কর্মে ব্যাণ ির ভারে ধর্পের করেন ধারণ।। बिन्त मा इत (दर्ग भाग मन्ड याँत । अकिम है श्रुतान प्रिक्टर योश्य ।। क्ष मत्र स्य किह मत्त ये हात व्यक्तिक। য় র আজা: বিনানারি করিছে কিঞ্ছিত। (महेक्स्म हिन्छ मण्डि ह्यादा धक्मन। এड कृष्टि करत जटव जड़ात्व शंमन।। मः याहिनी व्यक्ति भारत करहन जाना। काल यम मृज्यकना। कतित्व मर्भन।। ক্র সভী স্থিরকরি আমারে এখন। (कान त्वारण कव काख जानित कीवन।) खदन এইकर्ग जामि कत्रिव छेपात्र। याश्राटक मुन्ति कद পতি व्याग भाषा।

ভবে মন্মোইনী কহিলেন হাইমনে।

না মবিল পতি মম ব্লোগ সংঘটনে।।
ব্ৰহ্মশাপে জীবন তাজিল মম পতি।
প্ৰাণদান দেহ ভিজ্বর শীভাগতি ৷৷
মন্মোইনী বাকো বিপ্রকলি নারাসণা
বেবগণ প্রতি শীভা কহেন বচন ৷৷
কালীকার পদযুগ হাদর কমলো।
পুলিয়া পুজক টাইমাচেরণ বলে!৷

#### 

বিশ্ব বালকবেশে নিফার দেবগণের, সভিচ মন্যোহিনীর পতির প্রাণকান নিমিত ক্থোপ ক্ষন।

#### প্রার 1

থান বলে বিক্লবাপ শ্রীমধ্যুপন।
দেবগণ নিকটেতে করিয়া গমন।।
নবাকারে যথাবোগা সন্তাযা করিলা।
দেবগণ কেই তারে চিনিতে নারিলা।।
পূর্লাপর বিজ্ব মায়ার সংমোহিত।
পরে বিক্ল কহিতে লাগিলা যথোচিত।।
থেত তাপে শ্রিহার নিকটে সবে গিয়া।
কোরে ছিলেতব শাপশঙ্কটে পড়িয়া।।
ভাহাতে ভাকাশবাণী হোল অক্সাথ।
গেয়াই সর্বে তথা ভামি যাইব পশ্চাই।।
গাহ সর্বে তথা ভামি যাইব পশ্চাই।।

# সভীষ চিত্ৰভাম্ম কাব্য।

क हे (प्रदर्श कामि कामार्यंत्र जार्रा বিফর্ণ ধরি আসিয়াছি এই স্থানে। इहे करन महीरक कताव कामार्थन। पूनः केंद्र मानम कद्भिव मण्याद्रव ॥ ভ ভএব এ বিষয়ে যা হয় বিহিত। क्र नर्वकत्वनगृह, क्राल्य डेव्स् । এতেক শুণিয়া সৰে বিষয়ে চটল , পরে ব্রক্ষা স্তব বাকো কহিতে লাগিল। থে কোনো অবভা গত শুচাশুটি নর। ভতিতে অরিলে বিষ্ণু শ্চি বাছাছ: 🔢 আংমি সৃষ্টিকরি সৃটি সংছারেন হর। ধশ্ম কশা সাফি তব আজি: অনুসর।। পাপিগণ শংক্ত যুৱ কোনার আক্রেচে ৷ এই কপ যত কিছু সংসার মধ্যেতে !! ভোষার মহিমা প্রাভূ ব্রিভে কে পারে : ব্ৰিজে ব্ৰিজে মুম চতুরু ধ হারে ।। শনভর হাসি হাসি কছে মছেশার! কেংন বংশোদ্ভব ভূমি কহ ভিজবর ৷৷ क्त्रित्न काहात्र खाटन (दम अभागत। কি নাম কাছার শিষা কাছার নদ্দা। শিশু হোমে পরহিতে এতেক কাতর। বিছ্মিতে আদিয়াছ যতেক অ্যর !! **এই द्रका मकत्त्र मृक्षिकर्जा** इस १ नमा अविद्वास अस तकामात है कि ।

কবিয়া তপভা তব লক্ষ্যুগ মান ! তবে সৃষ্টি সৃষ্ঠিতে হোলেন জ্ঞানবান !! আ মি তব তপজা করিয়া চির্দিন। জ্ঞিন, **জন্মিল মনে শুন ভক্তা**ধীন। অদ্যাপি ভোষার নাম গুণ পঞ্জারে। স্পূহাহীন গাইয়া অমণ করি সুবে ।৷ मृजू।काटल अथवा (य अम् अर्ककाता किंशित य नाम यम ना करत न्यान । हर नाम खन आमि कोईन कतियः : म्ब्रुक्षत्र स्रेमाहि मृब्रुद्ध किनियाः ভোমার মহিমা প্রেছু কচিতে কে পারে : कहिट्छ कहिट्छ सस श्रक्षपूर्व हाटत ।! लाय विकास निर्देश कि इंडिंग विकास लिख्वानित्त मरहमञ्ज व्यामापत तस्ति 🖫 किया सम नाम कांद्र वर्दणाङ छर्लाह। ভুমিতো সে পরিচর জানো উমাপতি 🔢 अकरन चना कथात्र नाहि थात्राक्ता भौद्ध मान करू, महीপटित्र कीरनः। चिन्दत्र (मर्दश्रीं अटडक क्रिन्।। चित्र (कारत नकामरशा वनिला क्षित्राः।

# সভীত্ব চিত্ৰজানু কাৰা ট

মান্যাহিনীর প্রতির জীবম প্রাপ্তি ও দেবগণের শ্বহানে গমন ও মন্যোহিনী প্রতি সহিত গতে আমন ও পৌলব মুনির বাক্যক্রিটা

जिल्ही।

প্র কর্মার সেইফেশে ছাইমন,
 বিশুর কর্মার সেইফেশে।

রখা শিব করি ভাগে, গেলা মন্মোহিনী ভা গধা সভী বুলি যোগাসনে॥

লতে বিধি স্থানিমাল, নিজ কুমণ্ডলু জল, প্রসান করিলা শবোপর।

শেল জলে চমৎকার, মন হোলো স্থাঞ্র, ভাষন দান দিলেন শঙ্কর।।

बर्गच्यान निला धर्म, सीर मान निला भर्म, भाग मिला कठेत भनल ।

সক্ষাম কাম দিলা, পরে বালু সমর্পিলা, নিঃস্থাস প্রস্থাস প্রাণ বল।।

एकः कदि अधिकान, मृथि भक्ति मिला मान, व'ो वागी कदिला अर्था।

हिल्ला हिल्ला हिल्ला प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक स्था ।

আরা বিনা দেই বাজি, কিন্তু হোলো চীনশজি, পূর্বিষত রহিলা শর্মে।

দেখি হেমালের স্থা, হোরে অভি তুঃধয়ুভা,

ধরিলেন ভিজের চরণে।।

দ্বিল বলে শুন সভি, পরম ঈশারে স্তৃতি, কর শীঘ্র হোলে এক মন।

\* হ'র করণা বিশ্ত, হোলে শক্তি সমসিস্কু,

এই फरण इदय विद्यालय।।

শুনি মন্মোহিনী সভী হোৱে অভি ভবিসমতি, আরম্ভ করিল ভারে হবে।

ভুমি ধলা কর্মা সাফিং, ভুমি জগতের অফিং,

ভোষা বিনা সবে হয় শ্ব:।

পর্য: প্রকৃতী যিনি; সর্বাধার বর্জাপনী,

ছে:ম: হৈতে হয়েন উৎপতিঃ

সেই সাপ্ত**কৃ**তি একা, প্রদৰে ব্রিঞ্ণারিকা,

বিধি বিশু পার্শ্বহীর পতি।৷

ব্রুরে পূকি প্রজাপতি, হৈলা সৃষ্টি জাদিণাত, কাত পালিতে অধিকার।

পাইলেন নারায়ণ, সেই সৃষ্টি ক্রিলে'চন প্রাপ্ত হৈলা ক্রিতে সংহার :

. এহণে তোমার নাম, জীবে পার মোলাধাম.

थे छ 'स जानम म नि छूहरी।

প্ৰকাৰৰ প্ৰমুখে, তব গুৰ গাৰ সুখে,

• हजुर्म्यूर्थ करल हजुर्मा १।।

मत्नाहिनी स्टब कृष्टे, सेच्य अक्टी विक्, . भावत अस्टब अविभिन्नः।

পেয়ে টোহা অধিষ্ঠান, শব হোলো শব্দিমান, যোড়হাতে শীঘ্ৰ শঙ্কইলা ৷৷

### সভীম্ব চিত্ৰভাত্ম কাব্য।

ভবে মন্ত্রথ রাজন, লান করি শুদ্র নতা,
ভবিজ্ঞাবে প্রিজে প্রণনিলা।
দেখি যত দেবগণ, করি পুলা বরিষণ,
দল্পভিরে আশিষ করিলা।।
পরে সর্ব্ধ দেবগণ, বিপ্রকাপ জনাদ্দন,
নিজ স্থানে করিলা গমন।
গতি লহে সতী হরে, আসি বহু বিজ্ঞবরে,
নানামতে করাণ ভোজন।।
ক্যানে পৌলব হাব, সুকু হোয়ে ছিলা বিশি
শাপ হৈতে হইলা মোচন।
ভিটমাচরণ কর, সতীত্বের জন জন,
হরি হরি বলো সর্বজন।।
মর্মধের মুগ্যা ও গৌরীর মুগীদেহ ভাগে।

शशात ।

रेमव रश्रांश अक ऋारन रहील ब्राह्मन कुत्रिकी प्रथा अक क्यूर्य ख्रम् ।। মূলী হেরি মহিপতি হরিব অন্তর। ভার প্রতি সন্ধান করিলা ছুই শ্র ।। শরাবাতে জীবন ভাজিয়া কুর্ক্সিনী। শাপে বুক্ত হোয়ে হোলো সুকরি কানিনী " ধরিল অস্তুত ৰূপ রতি মনোবম।। न तो मध्या दक्ष कात्र नाहि वह नमा।। मुल श्रांष्ट कृतिहा करें क आफर्या। निकटि प्याणिका ठाटर कति एक ल्लामीन।। श्राणिकथा भव मस्य क्रिया पात्रा। মনুখেরে দিতে যায় প্রেম আলিক্ষন 🛚। उक्ता वरल (कर्वा कृषि कर्मला खुम्मती। कर्मात्त काइना मार्क मुनी क्रम वर्षि । त्यात भरत त्राक हरक हाई कहिएक विद्वात । इम्बी इहेबा कव किया वावहात ॥ कथाया भिलान नाहि हम् ७व गान । इन्द्रेष्ट त्रमान लच्छा छानित्य (क्रमान ॥ সহক্ষে প্রকৃতী লজ্জাবতী অভিশয়। খন্য পুরুষের কাছে কথা নাফি কর।। **क्या अपनी (इ.स. १५८४ अपना) প**िर কামিনী আপনি কোথ। যাচে আসি রচি।। (दश्राम का भारत अना कि वलिय आहा। ख्व इ**क** (मर्**च (म्रांत अञ** (क्रांत्न) छ। इ ।।

# সতীয় চিত্ৰভান্থ কাব্য।

কহলো আমারে ধনী কারণ ইহার।
কে তুমি হরিণী রাপ কি-হেতু ভোমার।
যন যে আমারে দিতে চাও আলিকন।
বিস্তারিয়া কহ দেখি এর বিবরণ।।
কন্যা বলে প্রাণনাথ তুমি মোর পভি।
আমি পত্নী তোমার শ্নহে মহামতি।।
নতুবা গে লজ্জা খেরে চারি আলিকন।
তুমি আম বিস্তুত না জানো বিবরণ।।
জাতিমারা হই আমি শুন নহেখার।
রচিল উমাচরণ সারদা কিকর।।

---

## গৌরী বিদ্যাধরীর পরিচয়। দীর্ঘ তিপদী।

করে কনা। কপবতী, ভান ওচে নরপণি বেচাকুলে আমার জনন। গৌরী বিদ্যাধরী নামে, আছিনু ইভ্রের নর্ভকীর মধ্যেতে গণন।। উদ্যানে কুমুম দীন্তি, হেরিতে জ্লোর। মান্দে মানস ছিল সার।। শুন্হে অবনীপতি, নন্দ্ন কান্দ্রে গাঁভ,

এক দিন হইল আমার।। হেনকালে নূপবর, 'প্রীমঙ্গল লাম গর, আইল এক গদ্ধবি নদন। কি কপ তাহার কপ, কথনে মা নাম ভূপ। ভার কপে হইনু মগন !!

মজিরা অনক রকে, বিহরি ভাষার কলে। অলশে অবস কলেবর।

াঞ্জান দুর হয়, রতি অভ্পা সময়,

छमात्व चाहेल भूवसत्त ॥

(६वि एक्काइ काय, क्काथ कवि स्वदंध. (माइ: द्वा कविना अविगाश)

ইন্ত্র বলে গোড়ী যেন, করিলি কুকর্ম কে। মত্ত্যে মুনীক্রপে ভূজ পাপ।।

প্রায়াল বাও ভূমী, এন্থান অবেগ্য ভূমি

कविवराभं ज्ञा ह् सन्दि।

পাপেতে মজারে মতি; হোরে এর উপপতি,

चन् टाल नर्ममा कु क्षिरद ।।

ওবে ইন্দ্রপদ ধরি, কহির বিনয় করি, করে শাপ হইবে শোচন।

বিনরে পাইবা ভোষ, মোরে পরিহরি রে!"।

कहित्तव मङ्ख्यालाह्य ॥

আফল হইতে যবে, মৃগীদেহ নম কৰে। সেইক্ষণে পাৰে পূৰ্ম ৰূপ।

যার জন্যে পেলে ছঃখ, তাহ। হইতে পাবে সু এতবলি গেল হা ছুপ।।

বচন বাসব উক্ত, শাপ হৈছে কৈলে মৃক্ত, সেই জন জুমি বসময়। •

### পতীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাবা।

পূরার সামার সাধ, লাশো মনো অবসাদ,
দেখ হে স্থামার অসময়।

ব্যক পরাণে বাঁচি, এ হেতু রমণ ঘ'চি,
কহিলাম পূর্ব বিবরণ।
সেই কৃমি সেই স্থামি, ভেবে দেখ ভূবীখান
বিজ্ঞ কবি করিল রচন।।

#### ---

বিদাধরীর **প্রতি রাজার প্রত্যুত্ত**র ৷

#### পরার 11

শুনলা সুক্ষরী ধনী ক্ষীতিপতি কর।

হোমার কথাতে মম না হয় প্রভায় ।।

বিশেষে বলিলে ভূমি যে সব বচন।

নোর জ্ঞান হইতেছে নিদীর স্থপন।।

গৌরী বলে প্রাণনাথ সকলি ভূলিলে।

অংসিয়া নক্ষনবনে আমারে ইরিলে।।

মুগীকপে ছিনু বটে নিবাস কাননে।

পূর্বক্ষম কথা রাজা পড়ে নোর মনে।।

যা বলো যা কহ নাথ ভূমি মোর পতি।

আলিক্ষন দিয়া মিয় করহে ভূপতি ।।

রতিরক্ষ মোর সক্ষে কর অবিরোধে।

পাইবে পরম প্রীত আজ্ঞ হদবোধে।

রাজা ভাবে ছিল পূর্বে মুলীকপ ধরা।

বে দেই বিগতে হোলো ভূবী মুলাইরা।।

# সভীত্ব চিত্ৰভাকু কাব্য।

হাব ভাব লাবন্যে আপাকে মোহে মন
প্রদী আপনী আদি যাচিছে রমণ।।
বিদ্যাধরী হবে জপে করিনু বিভক।
১ ইপ্রে ওঠাধর প্রভাতের অকাঃ।
মনে ননে ভাবে রাজ। একি পরমান।
বিষয়ে উহার সনে মনে হয় শাধা।
কিন্তু ইথে ধর্মাণবে মজিব কলকো।
বোলে কি ভুবিরে রব পাগ্রিপ গ্রেন।
বার্ বলে বঁলুহে কি ভাব মনে মন।
বাহ যে গেলরে অধ্যান্ত্রনে বদন।।
বানবুরো দেখে রাজা বাধ্য কি অবাধা।
ভিক কবি বলে রামা, নহে মোর শাধ্য।

#### প্রাধ্র 🔢

ताकात वहान विकाधित किन्न करा।

कि विलाल अक्नां ट्यामात नाधा नय।।

तमन दमने ट्यास घाटि भूनः भूनः।

नाधिट नाधिट नाध विवादण्ड थुन।।

नाधिट नाधिट नाध विवादण्ड थुन।।

दाकाट्यास धनाधना ना करते विहात।

किटन धनां किटन हस व्यक्तां नकात।।

थमां जित्र दमारत नाहि व्यक्तिविट हाथ।

ताक धटा नाकाट व्यक्तं के भाषा।

दमातमक तमर्गः नहित्व नयुभाभ।

दक्रमन नहित्व महाभाष्ठकत जाभ।।

# সভীম্ব চিত্ৰভামু কাব্য:

क्षर्यमण्डा रेख्यवाका पिटव विवर्कतः विधीय छेलगाहिका को विवर्कन।। র্থীয় পাতকে রাজা মহাপাপগা কোমার উপত্র বধ দিবছে জগনি ৷ ভোমার বিজ্ঞোদ মাধ ভাজিব ওরাণা সী হতপ্লাভাদ তে কৃতিতে মৰিমান এল ার পারেধরি লগবিনু রহণ । सद (८६.८॥ **कृ**मि नाथ इनेश्ल भामन ।। ारे पालक कुषि मार्न कर्न माह । অব্রেক্ত ক্রান্ত প্রায় ধ্রেগ্রের ক্রান্ত 💥 ্লাই ৰাখা চাতেৰ ভালা দেল সেইকাৰ: নাহি চাহি ধন আমি তুরক বারণ । ন চাহি বিমান মণি ম্ভাওত্থাৰ तक अनमात्र अञ्च माग्राहि द्राज्य ह ্রেম জালিজন মাতে একবার চই: हैरथ अनामर्थ हिला विलिशांति शहर !! विष्णाधनी वहत्व मञ्जिष्ट बन्नमाथ। शिमता क्षेत्रमाशास्त्र किला मृथिशः । मःन मदन विद्वहन्। क्रिव्हक्लभ। এরে তাগে অনোচিত ভাবি কচে ভূপা ष्याहेन बीया ভाষারেতো খালিকন किस् ! म्साधिक भीजल कत्रिव छव हिसा ।. मबार्थत बारका करन धरक् भरना आन्। বলে প্রাণ জুরিতে আমাবে কর তার

# ১১৬ সভীন্থ চিত্রভান্ম কাব্য।

এতবলি চুই জনে হইল মিল্ন । উত্তরে উত্তরে দেয় প্রেম আলিজ্ন ।। শ্রনহ রসিক জন রসের সভায়। বিরুদ্ধি এউমাচ্রণ কালীলাস।।

মলাবভীর বিলাপ ও ইন্দ্রউজি:

लयु-जिभनी।

श्कारक क्षत्रसु, जिल्लाम सम्ब কিছ কছ গুরুত্প। গজাৰ্ক ভনয়, মন্ত্ৰ ভো হয়, গৌরী যদি সগীবাপ!: अक् अके वानी, कात माव अली. कि बाटणटक महचा हिनी। करम् कुक्दवत्, खुम भिषावत्, অগ্ৰাপ সে কাহিণী। বাসবের শাপে, জেঁছে পরিষ্ঠাপে, জীবন ভাজিল যবে। এমিকল সভী, মলোবতী অভি, मधरहारला (भाकार्गद्व।) অত্যক্ষলে ভাসি, ইন্দ্রখানে অংসি. বিনয়ে কহিছে সভী। প্ৰিধন জন, প্ৰিসে জীবন,

প্তি যুবতীর গভি !!

### সভীম্ব চিত্ৰভাম্ম কাব্য ৷

श्रांत विरुद्धि, नडीत कीवटन, किया काग मुद्रमात्र। চেন্ত্র আত্মঘাতি, হবো পতি সংখি, পাতক গ্রহণ কর ।। একপ বিলাপ, করি পরিভাপ, मकी महिवादत याहा হৈবিয়া ভখন, সহত্র লেচন। भिवात्रण कटत् आ**स**ाः কন সুরপভি, শুন গুণবৃত্তি, পরিহ্র পরিভাপ। তেমার যে পতি, পাপে দিল মণ্ডি, এই হেড় দেই শাপা क्ष करत समास, स्टब लाई कास. क्त पृथ्य छ र मातः হত ছাড়ি ভূমি, জন্ম লেংহে ভূমি, দারা হও পিয়া ভার।! এখানে ঘেৰপ, তথা সেইৰণ, सूनाधिका नाहि इत्व। শ্ত্র বাকো ধনী, সঙ্গার তথ্নি, कौवन काकिल करवा। जारतोक नगरत, (रुमारक प्रतः मालावकी कमार्निना ৰূপ গুণবভী, মন্মে।হিনী সভী,

ष्क करि वित्रिक्त।।

# সতীত্ব চিত্ৰ ভাত্ম কাব্য।

#### श्राप्त ।

ঞ্ৰিপতি বলেন পৰে শুন হৈ ব্ৰাক্ষণঃ এক পতি তুট পত্নী বিহার যেমন !! लीबीत वानिया दाका दार्थ छेशवरम ! নিতা গভারাত করে অতি সঙ্গেপেনে ।৷ নুপতি হটলা যেন শরত ভ্রমর : बिलि मिलि मधुलात मध नित्रस्त ।: **फिट्स क्टब कमलिसी मटक काम (थेल**]! यानिनीटक कुन्निनी नटक इत्र मिला।। এইৰপ নুপতি ভাসরে রভি সুখে। निभागारा मत्नारक्री मह तूरक मूर्थ।। फिट्न (श्री अह तक हान भतिहान। कई सभ काद हा छ। जानम विनाम।। द्राक्षकार्याः जुलाजित स्थि चात भन। স্থবিদ: মান্স ভার ক্রিডে রম্ণ 🛭 বিদ্যার্থী সলে প্রীভি ব্যাজ্ল রাজার। नश्क व्यव (शाला मडी विकात।। নিজ ভাছেলাভা ভবে বুঝি মন্মেংহিনী : এক দিন পাত প্ৰতি কহিলেন ভিনি। कह बाथ अर्खना दिमन थाटकः किन। লব প্রেমে প্রেমী ছোলে মনে লাগে ছেন कर साथ (काम ज्ञामा जूनाहेल मन) ज्ञां क्र क्षांन काहात जमग ।।

## নতীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

মনাথ বলেন প্রিয়া কিছু জানি নাই: বল দেখি কবে ছাড়া আছি ভব ঠাই অনিতা সংগার সুধ বলেন ভূপতি: ভিক্ত কবি বলে সার কোরেছি জ্লীপতি

### मन्द्रशत शोते विश्वा

#### १ स १ द

क्षक वाका जिसा भारी स होते आहारा शामर कार्यान मना ल्याटि वयस्य।। সত্ম কলে উপস্থিত রাম বলে আসি। ाक भूक एक कि भी औ बाल शामि श्रीम ।। নিকা নিকা ভার সংক্র পেছোও থামিনী। ्कामाद्व ल्लाशिष्ट जात्ना तम् विलामिनी।। अक्षत्र धरल भरत गाई याहे वन। নে নারী বেঁবেছে মন কোরেছে পাগল।। ्हाक्**रमास (य**रहा अर्थन (यरहा शिर्म मधु । ভালে যত্ন ছানা মোরে পাইরাছ বঁধু।৷ छूड़े अज़ी পভিরে উদন্ন এই দোষ। वाशित्न करकत् अन करक करत् (त्राष !! থেন পজে গেলে খলি রোবে কুমুদিনীঃ कुश्रम आहेरल मान करत कमलिनी।। बरत्रुक्त दल्बन भारत घरिल दिमात्र। भारचात्र कत्रायक क्रहेफिटक कामिशाह !!

পুনঃ দৃঢ় আলিকন দিয়াভারে রার।
অভিন্নরাথিত হোরে নিকেতনে যার।।
হইল রজনী বৃদ্ধি হয় ছাড়াছাড়ি।
নন্মোহনী সমীপেতে গেল ভাড়াতাড়ি।।
পতিরে হেরিয়া সতী বেশ ছিল্ল ভিন্ন।
নির্ধে পতির অকে সব র্তি ছিল্ল।
ভিজ্ঞ কবি ভণে বাকে বাকো কহে সতী।
জিজ্ঞাসিয়া সবতত্ব জানে রসবতী।।

#### श्विष्टाचार ।

#### मीर्च (ठोल भी इन्म ।

হেরিরে পতির বেশন কামিনী করিয়া ছেমন দনেতে পাইলা ক্লেশন বলে একি একি ছে। মনের মানসে রক্তে, বিহারিলে কারসকেন রিডিছিল সব অক্তে, অনুপম দেখিছে।। কেল্টিয়া সুখভাগন ভালে সিন্দুরের রাণ্ডন অধরে অথন দাগন অনুবালে দিয়াছে: কোন নিদারণ বধু, নথে ক্ষত কৈল বঁধু, নিরস করিয়া মধুন নিউজিয়া নিয়াছে:। চুম্বনে করিয়া ছিয়ন নেত্র গণ্ডে ভিয়াভিয়ন দিয়াছে ভায়ুল চিল্ল, ভালো ভালো বেসেছে।। পেরে গে নায়ীর ধ্যান, কামে হোরে হতজ্ঞান, ভায় বক্স পরিধান, করিয়া তো এসেছে।।

### সভীম্ব চিত্ৰভান্থ কাৰ্যা 💮 🚞

डालिया कमलक्ष, मशुरलाटक यहे अप. কেতকীতে প্রায় বধ, বিধি লিপী ক্লোটেছে ! இच्याहत्र प्रत्य, खन खन हस्रान्द्रम, विक कवि क्लिक्षीयत्न, अदेममा व्याद्मेहहा।

> পৃতিপ্ৰতি সভীর ভংগনা: शक्र त

্বারভারে মন্মোহিনী ক্ষে হেরে কিলা DE कि मलल नाथ खक्तात किहा। ুব্ৰু সেগারে এখ আজি ভাল শঠা লৈ এর সংধ্য ছল সুরতি লক্ষাটা। कराह भूलाटक भारत वादत वादत हाउ। কেরেন। চাত্রি শার যাও যাও যাও।। त्वा न कथात दर्भ छाटलावाम स्मादत । क नम् अनुक्रतल मर्नाभारे (हार्य।। ्राथ या ७ ज्यानवाथ मादत पित्र। के कि । नक्ति। उक्त चामि (मिथ एव चारिया) **४ म् (मर्थ द्वांयाम काव (य मकल** १ ত'লাতে পেয়েছি চিক্ল মিছে কর ছল।। स्माजाय सावमा अपूर्णीए। बाहे! नवनात्री त्रांक्नी लिएतह कान कें।है।। प्यामारहारक हरवजूचि तम नाती सुमाती। লভুব, ম**ন্নিবে কেন মেরে** পরিহরি।।

# সভীত্ব চিত্ৰভাল্থ কাব্য1

ভাবে বলি কুলটা সে নারী অভিপায়। कारे बाब नाहि लात्न कात्नाद बागात ॥ আ দি হৈনু পুরাতন নবীনা সে জন। আফার কাছেতে আর নাহি রহে মন!! রভিচিত্র দেখিভাবে বুঝি অনুমানে। (वका हरव रहन कूलवधू नाहि जारन।। চটাকে আটক প্রিয় হোলে ভারকাছে। এই জন্মে আমারে তাছলা হইরাছে!! ফুলটা সহিত যে জনার প্রেম হয়। কুলবধু প্রীত ভার মনে নাহি লয় ৷৷ जादवत विष्ठे नाथ (प्रिथ पिटन पिन। क्छनित्म साद्रथीए इत्व छेपाणीन ॥ श्रूर्थशास्त्रा व्यागमाथ व्यवसीत मटन। ভাষার হাহোকু বিবেদন ও চরণে।। ইহাবলি অভিমানে কান্দিছে যুবতী। দেখিয়া মন্মথ কছে মধুর ভারতী।। (द्रापन त्रत्रद्र श्रिद्ध श्रू स्टिप्ट क्ला মিখ্যা মিখি কেন শোকে হইলে বিকল।। নিভাস্ত ভোমার আমি দিব্যকোরে কই। ভোমাছাড়া অন্য রমণীর বঁশ নই।। কতকটে ভোষারে পেয়েছি ন।ছি ওর। ভোমাল্লে ভাক্লা কি কখন আছে মোর ৷ विमन्न विस्त द्राजा खुविष्ट च्या औडमाण्यन हुछ कृतिल बहुन ।

# नश्रीष विकान कारा।

#### মানিনী বৰ্ণন ৷ প্ৰার ৷

मिके वारका महनाथ (कारव वक्छहा কামিনীর কপোলেতে দিতে যান কর :: क्वार्यरङ कामिनी करह याह याह नाय। .यार्कात जात्न विरातिल गात माथ ।। মুখে মুখ আবেগপিয়া বুকে দিয়া বুক। চুগ্নহ বদন ভার ধরিয়া চিরুক ৷৷ পুরভেন জামিছে নবীনা সে যুবজীঃ পর্যোষিত ফুলে ভূক নাহিকরে রভি। ধৃষ্টের নাভার চিত্তে স্বীরার রমণা পরকীয়া ভোগে সুখ রনে রনে মন।। পত্তকুল ভাব পত্তকুল ছিল পারে। সেভাব অভাব হোলো সফিণানুরাগে।। थात्र मात्र याचि (छम इत रुपि। खतु (यम (इनमक्ष माकतान विभि।। এতবলি মনোমধ্যে ছোরে ঈর্বাযুক্তা। मुनिनी इहेन धनी मोदन चानूकका।! কোধে আর ঈর্বায় অঙ্গের অভরণা णाजिल कुछल रात रलमा कक्षम ।। প্রিরবারে) অনেক ভুরিয়া মুপবর! गारमञ्ज्ञाका (पश्चि इहेला अख्ना। मत्त्राह्बीय असाव (मरि निर्मिग)। कारहत्ति करह मत्व थावाध वृष्ट्य ।।

শুনগো সুশীলামরী করণ ক্রদ্ধী।
লবুদোবে পতিরে মা তথ্য গুণ্মরী।।
মগ্রাজা দেখে ভোমা হুদের রহন।
রঙন সংপ্রাপ্তে কোথা এতেক ঘহন।।
ঘহন বিহানে ভারে হইলে মানিনী।
মানিনী হইয়। মাম ভাজ বিনোদিনী।।
মানিনী হয়াদি কর্মা ফুরাবে সে বোল।
মানি বিহারাদি কর্মা ফুরাবে সে বোল।
ভিজকবি করে পাছে ধর্মা হয় লোপ।
হয়াণে রোরেছে ধর্মা ভাজ ধনী কোপ।
হয়াণে রোরেছে ধর্মা ভাজ ধনী কোপ।

#### 

কলহান্তরিভা বর্ণন

#### जिमने।

দ্যোহিনী নৃপ্নারী, অভিমানে মানভারি
পতিপ্রতি করিয়া বিরাগ।
নিশী যবে অর্ছিগতা, ধনী অসুয়ায় রতঃ,
মনেতে জনিল গুরুরগো।
নায়ক বিচ্ছেদরকে, নায়িকার মানভকে;
পতিহেতু ভাবিত অভরে।।
ধনীর বিদরে হিয়া, স্থিগণে স্থোহিয়া,
কহিতে লাপিল মৃত্তুস্বরে।

# সভীত্ব চিত্ৰভানু কাব্য।

#### ষানিনী বৰ্ণন। প্রার ৷

মিষ্টবাকো নর্নাথ তোবে বর্তর। কামিনীর কপোলেভে দিতে যান কর।। কে:ধেতে কামিনী কছে যাহ যাত নাথ। মাহতার ভাবে বিহারিলে যার সাথ ।। भूटथे भूथे ज्याद्राशिश दुरक निया दुक ! চুম্ব বদন ভার ধরিয়া চিবুক 🛭 পুরাতৰ আমিহে নবীনা দে সুবজী। পর্ব্যোধিত ফুলে ভূক নাহিকরে রুভি :: ধ্যেটর নাভার চিত্তে ভাষার রমণ্য পরকীয়া ভোগে সুখ রদে রদে মন 🛚। चनुकूल ভाব चनुकूल हिल भारता সেভাব অভাব হেলে দফিণানুরাগে 🛚 খরমার শারে যদি ভেদ হর হাদি। ভবু যেন ছেনসঙ্গ নাকরাণ বিধি।৷ এতবলি মনোমধ্যে হোরে ঈর্বাযুক্ত। मानिनी इहेन धनी मोदन व्यानुक्रका !! क्लार्थ ज्यात के स्था ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा व णिन कुछन श्राप्त वन्या कन्नन!! প্রিরবাক্যে অনেক ভুষিয়া নূপবর। नाम्बर जनाथा (पश्चि इहेला जन्द्रा। মন্মোহিনীর এভাব দেখি স্থিগণ। कारह्वनि कर् नर्त थरवाध बहन।।

ভানগো স্থালাময়ী করণ হাদ্যী।
স্থাদেশ্যে পভিরে না ভগ্ন গুণ্ময়ী।
নহাব জা দেখে ভোমা হাদের রহন।
রভন সংগ্রাপ্তে কোখা প্রভক খুহন ।
যভন বিহানে ভারে হইলে মানিনী।
মানিনী হটরা মান ভাল বিনোলিনী।।
মানবেশ্রে অন্তুলনে ভারে হও অন্তুল।।
মানে বিহুরাদি কর্মা কুরাবে সে বেলে।
বোলরাথ সাসনীর ভাল উত্রেশ্ন।।
দিলা বিহানে হাদে পাছে ধর্মা হয় লোগা।
দিয়া বিহানে হাদে পাছে ধর্মা হয় লোগা।

শংক⊾উটা-⊁. ইকাহাজারিজ বর্ণনাং

#### दिनमी:

ন্যাতিনী নুপ্ৰারী অভিনানে মনভারি প্রিপ্রতি কান্সা বিলাগ। নিশী ঘবে অর্থিতা, ধনী অধুনাল রভেত, মনেতে জানুল গুরুলাগা। নামক বিচ্ছেদরজে, নামিকার নান্ডচো; প্রিছেডু ভাবিত আন্তরে।। ধনীর বিদরে হিয়া, স্থিগণে স্থোহিমা, কৃছিতে লাগিল মৃত্যুরে।

# সঞ্জীৰ চিত্ৰভাৱ কাব্য।

ন্ত্রৰ ওপো সহচরিং এখন বল কি করি, ना तूरक कतिन्तू छ। दत्र (इना । गःन कत्रि পরিছরি, সে সাধে চরণে ধরি विनदम् याहिल क्रिड (थला ।। কোপে মানে মাজ আমি, ভাজিলাম নিজ স্থামি त्म यमि कवित्रा हैत्थ तारा। খানা ভবনেতে গিয়া, সেই বিলাসিনী নিয়া, कटत यि खुर्थ काम यांग।। পালি मानिनी तस, अलित कि ভাতে दस, ু কুমুদিনী ভারে রভি থাছে। ঘত্রব স্থিগণ, নাথে কর অংশ্বণ, সামার তেমনি হর পাছে !! স্ব পরাধীন যেই, কেন মান করে সেই, ভাবলার খাটে কই জোর। ভাজিয়া আমার হুল, ভাচার কি ক্ষান্ত বল, যে কভি সে ক্তি হবে মোর।। उटक चानावत करत्र, चार्या लग्न मभापदत्र, পুরুষ সে পর্শ রুতন ৷ क्यांत्र (इन व्यागधरन, प्रानिनी इहेशा नरनः করিলাম ভার অ্যতন।। मति मति थांग यात्र, मान कादत अकि मात्र, कि रूटव नक्ती त्मादत वल। मधिलाम श्रिमनिकु, ना उठिया सूधा विन्छ,

छे किल विदक्ष रुगारल ।।

ं मधी बटन एवं याम क्यांठ वा चंखात्र। 🌤 **চরুণে ধরিলে রাগ যার কি বা যার।** আমি কোরে দিতে পারি প্রীত ভার সনে 1 यमाशि शालव कर शामात वहरन।। मन्यथ बर्लाम एमि यथम वा करव। না করিব আন ভাতে শুন স্থি স্বে।। महहित्रीत वत्त खन (रु द्राजन। ' आपा यामिनीटड छथ्। कतिह शमन ।। **अडिमाहत् वत्ल मान रूटव कीर्न।** স্থিগণ গেল তথা করিতে সংকীর্ণ।!

#### 

मत्याहिनी প্রতি স্থিগণের উক্তি। कुडीइन ।

ন্ত্ৰৰ শুৰ পো পভিত্ৰতা। बाग्रतक माधिक रहेन तका।। कहिएक विरागय, अनल कि भाष, হৃদরে লাগিল তাছার কথা।। माधिया माधिया मशूष्टिभानि । কাঁদিয়া কভেক কহিনু বাণী।। ट्यामात्र लाजियां, बामिनी आधियां, ' (क्रमाबादन विन चारहन द्रांगी ।। " তোৰা প্ৰতি একে সাছিল বামে ৷ अधिक खलिल कामात्र मारमना (जटक मदव शिक्षं, इत्राप् मित्रमं,

# ়- গতীৰ চিত্ৰভান্থ কাব্য।

করিলাম রাজী স্তুতি প্রণামে।।
রমণীর কেন এতেক মান।
পারে পরিলেও অসমাধান।।
যাহা শেষ রয়, তা করিতে হয়,
অনান্ত কিছুই নতে বিধান।।
পরম চতুরা সঙ্গিনিগণে।
লাগাইল ধ্যান দেঁহোর মনে।।
হেন গুণ ধরে, দিনে নিশীকরে,
প্রিটমাচরণ সরসে ভণে।।

শ্ব বাধীন ভাচুকাভাব।
নুবাবী ত্রণদী।
স্থানুধে শুন থাই, আন্সংখ্য গুণনাই,
উপজিল সুধ শাধ নানাছঃখ নাশিরা।
আছে কান্ত উদীবিনে, পথ চাহে কণে কণে,
হেনকালে বসরাল নিলিলেন আসিয়া।
মুখে মৃত্রাদি ধরি, অপাঙ্গে কাকিভ করি,

লাজেতে ঢাকিল তন্ম নীলাষর ঝাঁপিয়া।
ন পাসরিল সব ছঃগ, পতির সোহাগে সুখ,
পুলকে লোম: ফ তনু ঘন উঠে কঁ পিয়া।
শুনহে নাগর রায়, নিবেদন রাঙ্গাগায়,

দিলাম যৌবন ধন মনে সাথি করিয়া। না চাহিও অন্য পানে, না যাইও অন্য স্থ নে;

# সভীত্ব চিত্ৰভাস্থ কাব্য।

### वाश्रदकाद्धि। लयू-८ठोभनी।

কহিছে নাগর, গুণের সাগর, আপনি যাকর, শুনলো ধনী। বিহনে ভোমার, সব শুনাকার, ধন কোন ছার, প্রাণে না গণি।। দিল ভোমা বিধি, ছাদয় সলিপি, জ্লনিধি নিধি, স্প্ৰিক মণ্ডি : ভরু বলি দেখি, বদন খানি 🗅 মৰের মতন, হুদয় রতন, কতেক যতন, আঁখির মণি। মণিতে যে ৰূপ, ভূষিত ফণী : রস্থাত যবে, চ্ইবে শনি: ক্ৰিতা তুলিত,

কথা বলে। একি, মৃত্যুদারে ঠেকি, শোভায়ে এৰপ, কি কব সে ক্প, विष्कृष वर्गद्य, स्था अद्या कटल, দ্বিকর রচিত, পীরিতি লালত, कनकावनि !!

### দল্প তর পুনঃ প্রাম ৷ প্রার ৷

কামিনী বলেন কান্ত কত কর ভানা। ्राक क्राह्मचारम् अपे खारव शिल कार्या ।।

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য

তুমি আমি ভিন্ন নহে কহিছে রাজন। অন্যেতে প্রবৃত্তি মোর না হয় কখন।। व्याइमाला (अम्राम व्याप्त इहे এक व्यक्त পশ্চাতে কহিব আমি ইহার প্রসঙ্গ। প্রতিপ্রতি সতী ক্ষমা করি সর্ব দোষ। রতিদানে করিলা পতির পরিতোষ !৷ त्रालाभ क्लारभद्र ममाश्र ममस्। विणाधतीत कथन जाना नव कन्न।। শুনিয়া কিবা আশ্চর্য লাগে তার মনে। शृक्त (चय ष्ट्रःथ यष्ट महिल कीवरन।। যতেক তাঁহার প্রতি আছিল বিরাগ! खनि विभाषती कथा वाट्ड अनुत्रांश। শ্নিয়া আশ্চর্যা লাগে হেরিলে কি হয়। হেরিব ভাহারে প্রভু আনে। নিজালয়।! রাজা বলে ভবে ভূমি পরাণ ধরিবে। टिदिटल छुडटबेटण थिया हिश्मात महिट्या। পতির বচনে ভবে কহিছেছে রামা। স্থবৰ্ণ সদৃশ নাকি হোতে পারে, ভাষা 11 আর দেখ ভ্রমরের কামিনী আনেক। क्षु नाकि इत्र भित्रनीत (श्राप्त रहेक।। रेट्स्त भटक विषाधती व्याटक यणि। শচির যে ভাব সেই ভাব নিরব্ধি।। আছমে সহত্র গোপী মাধবের রাধা। ভেমভি ভোমার আমি শ্রীরের আধা।।

একেছে। শতেক কেন হোক্না রম্ণী। আমি যে সে আমি আছি শুন গুণমণি।। श्रिशात वहत्व इर्ष छेशटकं चटमव ! षिक दवि करह शृद्ध व्यानिल नर्त्रण!!

মঅথের রাজ্য ভেগে। অভি ফুদ পরার। প্রিয়াস্থ্য সঙ্গ। কত রঙ্গ ভঙ্গ। श्रुथाञ्जारम रमका नाहि इब रख्हा। ্রাকা করে সুখে। প্রম কৌভুকে।। नद (पर चापि। (कइ नरह द:पो:1 क्ति वस वन। भारम ভূমওল।। क्रका निकेसन। पूरकें क्रमन।। পূজা হোম যাগ। ব্রতে অনুরাগ।। দেব দ্বিষ্ণ ইউ। পদে মনোনিষ্ঠ!৷ জীতেন্দ্রি ধীর। সভ্যে যুধিন্ঠির।। অভি শান্ত দান্ত। নানা গুণে প্রান্ত:। महा दी द्वावचा देश देश देख करहा। त्रद शात्र यम । आञ्चलत्व दम ।! হেন মতে রাজা। করে নানা কংব্যা। দ্বিজ কবি শিষ্ট। রচিল স্থুমিষ্ট।। প্রার 1

 महा भूरथे त्रांकारकार्ग कटत नत्रनाथे। नना नमालाश वृथ वक्त्र्र नाउ ॥

### নতীৰ চিত্ৰ ভান্থ কাব্য।

चकां उद्भ महाताका कदत यम माना ভূষ্টের দমন পণ্ডিভের রাথে মান। जात्रवक जुरमरंब्छ शरम मरनानिका। কালীকার প্রতিমূর্ত্তি করিল প্রতিষ্ঠা।। কিবা ছোম যাগ ভার নানা মহোৎসব। দিনে দিনে র্জি হোলো অতুল বৈভব।। ভাগবত শুনে ভক্তি করি গরিঃসী। द्वादश देवशण्डवत्रश्रम् कति धकामभौ॥ মলোহিনী সভী আর সহ গৌরীবভী। তুজনার প্রতি প্রীতি রাখে নরপতি।। নানা সুগভূঞ্জি ভূপ সহ বিদ্যাধরী। ভোগপুণ হৈল গেল अञ्जनभंदी।। निक्रकां छ। मटक त्राक त्रम (विमान)। নিতা নিতা নবস্থ গুড়ন উল্লাশ।। এই बार्ल मण्ला है पूछिए कि पूरित। সুলকণ যুভ স্ত জন্মিল ভিন।। বাল্যপরে পৌগতে স্বিদ্যা উপ।জ্জন। ক্ৰমেতে যৌবন প্ৰাপ্ত ভাই ভিনজন।। ঘটাকরি মৃপতি দিলেন পাণিপ্রহ! স্থাপন করিলা এক বিষ্ণুর বিগ্রাহ।। बाबाइटब-बाबा पान द्राका शंग शंग। পুত্র পৌত্র পৌত্রবধু ইভ্যাদি সম্পদ।। এইরূপে কিছুকাল করি স্থতভাগ। **ज**वरणरव जुशक्तिल इकावश्री (यांगे।।

### ১৩৪ সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাৰা।

প্রধান প্রধান প্রজা আবিরা রাজন।
ক্যেতিসুতে রাজ্যতার করে সমার্পন।।
সত্যাশন নামে মন্ত্রি মহাতাগবত।
নূপতির পরমাত্র হরিগুণে রত।।
ঐমর্বো।পভোগ শোবে রাজ্য মহাহর্ব।
মন্ত্রি কাছে গিরা ভূপ চাহে পরামর্শ।।
উচিত কর্ত্রবা মোরে বল মন্ত্রিরঃ।
কিরপে পাইব আমি প্রভু দাফোদর।।
বিষর বাবনে মম নাহি শাধ আর।
বিষরবাবনে মম নাহি শাধ আর।

--

সভ্যাশন মত্রির রাজার প্রতি হরিভজি উপদেশ ।

#### बिशमी।

মন্তিবলৈ মহাপর, সংসার অনিভামর,
অর্থ ভাতে অনর্থের সূল।
বাড়াইরা নিছামারা, ভাই বন্ধু সূত জারা,
সেই তত্ম বর্জে প্রতিকূল !!
সর্বের জানিহ ছারা, নখর আপন কারা,
জীবন জীবন বিষ্প্রার!
কবে আছে কবে নাই, নিক্ষম জানিরা ভাই,
রাখোনন সেই রাজাপার !!
বেই প্রভু নারারণ, নিরাকার নির্প্লন,
নিভান্য স্ভাসনাভন!

# সভীত্ব চিত্ৰভাত্ম কাৰ্য।

সর্ধব্যাপ্য সর্কেশ্বর, তারপদ সারকর,

এড়াইবে ভবের বন্ধন।।

একান্তিক করিমনে, যেই ভলে নারারণে,

সেই পার তাঁহার চরণ।

প্রীউমাচরণ বলে, হরির চরণ ভলে,
দীনে ক্লপা কর নার্য়ণ।।

#### -

#### मन्द्रभेत्र जीर्यगाया ।

#### जिलमी।

পাত্রবাকো করিজর, স্বস্তীকেতে মৃপবর;
চাললেন ভীর্থ পর্যাটনে।
বারানদী রন্দাবন, আদি ভীর্থ দর্শন,
করে রাজা আনন্দিত মনে।
মাথেতে প্রাণ্ডো রাম, করিয়া বিপুলদান,
কচদিনে অযোধ্যা যাইল।
গঙ্গানাগর সঙ্গমে, প্রভান পুরুষোন্ডমে,
নরপতি সুখেতে জনিল।
এবস্তিধ ভীর্থ যড়, জমিয়া মৃপতি কড়,
অবশেষে গেলা তপোবন।
সাধিতে তপভাবিত, হরি পাদ প্রেমুচিত,
একাস্কভা করিয়া রাজন।
আতঃপরে লারা পতি, যোগ্ধকে দিয়ামতি,

### ১৩৬ সভীন্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

ভিজিরেশে হোরে মন্ত, চেফাকরে সারক্ত্,
করে দোঁহে বিশুর ভবন।

গ্রীউমাচা কর, কুপাকর কুপামর,
মম বাক্য ভোমার অন্যোগ্য
কহিছে তই ভিজোরে, এই ভিজা দেই মা

ক্রিচন্ত্রারিংশৎ বণে বিকার স্তব:

#### প্রার।

ভাতৃতি অনন্ত অন্তর্ধ মি অন্ত কের।
ভাগিনে অন্তর্ম দেহ অর্বিন্দ নের।
ভাগিনে অন্তর্ম দেহ অর্বিন্দ নের।
ভাগিনে আকার হীন আকাশ আগ্রা।
ভাগির আকার হীন আকাশ আগ্রা।
ভাগির ইচ্ছাময় দেহ পদছায়া।
ভাগির উপান আগ্র উপার কায়া।।
ভাগির উপান আগ্র উপা তিতৃবনে।
ভিলেন উলাশ দাভা উৎপাত্তর অবি।
উর্বেতা উদ্রন্তা তুমি উর্নিগামি।
উর্বেতা উদ্রন্তা তুমি উর্নিগামি।
উর্বেতা উদ্রন্তা তুমি উর্নিগামি।
ভাগির ব্যৱপ উনপ্রাণ্ডিত।

### সভীত্ব চিত্ৰভান্থ কাব্য।

শ্বৰপ কিন্তু ক্রীড়া সদা (শ্বর ভলে। খ্লপভির রিপুকে না ৠ অর্পিলে ছলে।! এক একাধিক ভূমি একার্ছ অনস্ত। একে একে সৃষ্টি এককালে কর অন্ত।! **के इक जैथर्व। जैस्क को लिएकत्र व्यात्र** १ এরি তুলা ভাবে মন ঐ রাঙ্গাপায়। ওড়াধর রউ প্রভা ওদন প্রদান। ए वर्त '3 भक्त,यार्श बिष्ट्वन काडा II उष्ध खन्ना गृग छम्। या अध्यक्। উর্ধে ঔদুতি তব ইন্দ্র ধাচা অক।। क्ष कुष। त्रिक जुमि कृराच खेनिन। কিন্তবে কৃথিকাদানে কেন হে কুপ্ণা খনগত্ৰ বাচন ধৰ্কী খাল খৰ্ককালী। থিন আছি ভব খেদ খণ্ডাও মুরারি:! গে প্ৰিশু গাবি বংস গোকুলে পালন! क्षीइरव शांश्रद्ध लीला मह शांशीश्रव।। ঘনতাত ঘনাকে চন্দ্ৰ ঘন সার! ঘূণ্যে ঘূণা ভাজি অংঘ্রি দেহ এইবার !৷ চক্রী চক্রপানী চতুর্জ কিরে চাও। চিন্তামণি চিন্তি চিত্তে নিশ্চিন্ত করাও। ছল ছাৰ ভুমি ভুমি গুরু চারি বেদ। हरल इचि किरल वलि मर्ग कति (इम्।। জয় জ্যেতিমুম্ম জগন্নাথ জগ্রাময়।

वृत् सन् सन् वृत्र पक्षेत्र विक्रिका বার বারে বেবে নিবার বাটিত !! चेनावेन जामि भारभ थान वेन वेन। **ऐलित्ल है। निका हिकि लट्ट यम उल !!** ঠেলনা ঠাকুর ঠ'ঞী দেহ রাজাপদে। ठिक महे ठिक हहे टिकिया आंभटम।। ভরকুপে ভুবিরা ডাকিলে যার্ক্রাক্র: 1 ডপমগ হয় তনু বাব্দে তার ডক।।। ঢক্ত সামি ঢলেছি ভারিতে নাহি কেউ: **एलाएल व्याप्त लार्थ (एक छू8थ (एडे** !! তনু তব তরজিণী তত্তে ভত্তরান। ভনয়ে ভুরিতে ত্রিগুণেশ কর আগ :: थत थत कालि व्हित्र नहि कद मात्र। বিভিনাধ বিভে ত্ল দেহ রাজাপায়!! मारमाम्ब मन्त्र ममन महामह। ष्ट्रश्य पूर कर मोटन मित्र। भमाध्यत्र।। धर्माधरका धराधर धार्ति धरावाछ।। भगरन भार्याक्रीन भन्ना भन्ना भीमा भारता।। নক্ষ্য নর্সিংছ নিভাস্ত নিঞ্গ। नव्रक नागन मीटन मह निमाक्रण।। পরম পুরুষ পুর্বাপর পরাৎপর। ध्रेशक ध्रममाशाक थड़ तका कत्।। কৰি বাজশামী কৰি কৰাৰ্পিত পদ।

### সভীত্ব চিত্ৰ ভাত্ম কাব্য।

ভগ্নান ভবভাব্য নাশি ভূবিভার। ভিন্ন ভাব ভাগিভক্ত এনছে বিচার॥ . मरहामधि मञ्चल मन्त्रात शृष्टेरमद्भ । मात्राटक (माहिनी ट्लाट्स स्माहिटल मरकरण)। यक्रवाच याळाभाव गमामा बन्दवी কে:গ্ৰাগ যুক্তৰ যথাৰ্থ সৰাভৰ !! त्रमानाथ प्रमातमा प्रका श्रम ছवि। बक्ष ने बक्ष के अर्थ बहु जु ब दि ।। লক্ষীপতি লক্ষী লুৱা ললিত লাবণ্য। লোল নেত্র লোভহীন লীলা বিন্দ রণে।। विक् व्यवाक्ष विवाशांति विवन्धव। विशाक नाभाक विधि द्वा वार्ना! नका मच्छिक निमा मामा मह ७३। শরীরে শর্কারীশর শ্রাশন ভুরা। বড়ভুক বড়শান্ত বড়রিপু বধ। विकेश खना अध्यादक विष्णा। अर्खवाणी मर्खानीय मर्ख मात्राटमात्र । भण्यत्र जम्लु चिकत्र नक्षते जःहात्र।। ह्लाञ्च ४ (हाटव इल इटक अत्रिक्त । र्हत रुत्रि रुत्र खीव रूटव कि अन्त्र ॥ ক্ষেত্রজ্ঞ বিদরোদ শায়ী কোভ কর কয়! कित्तर क्रिका कीट्य (वर् श्राखन ।।

## সভীষ চিত্ৰভাস্থ কাব্য।

>8.

#### मन्निक्ति देवदना शास्त्रा

#### बिनगे।

এইব্রপে যোগাশনে, তব করি নারায়ণে, ধ্যানযোগে ভাজিল জীবন। আইল কুমুম রখ, লোহে হোরে বিস্তুবত, ं रेवकूर्थण्ड कड़िल गमन (कर्वा युक्कुश्ल, भूकामाला मिल भ्रत्न, ं ८क इ. (मझ्नी इल क्ली दन: এইরপে লয়ে সঞ্জে, বিফু দূভগণ রঙ্গে, উভরিল বৈকৃষ্ঠ ভূবন।। বিষ্ণু দৃত করিলেই, চামর ঢুলার কেই, কেছ দিল স্থাহ্যি চন্দ্ৰ। शाविराम्ब अन्तर्भाग, अञ् देश्ल नमाधान, इति इति वल नर्वजन।।. -🖺 গুরু চরুণে মন, করি এই নিবেদন, शूर्वकत मन अखिलाण। ·खदर्श मधुद्र खादा, त्रित ललीक कादा **এ**উমাচরণ কালীবাস !!

🔻 📜 নমাপ্রোরং এছ।।